लोकोक्तियाँ और मुहावरे

संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण

Lokökhtiyān & Muhāvare

लेखक— *Bahadur Chand*

श्री बहादुरचन्द्र

शास्त्री, हिन्दी प्रभाकर, M.A., M.O.L., D.Litt. (Holland)

संपादक—

श्री देवचन्द्र विशारद

प्रकाशक—

हिन्दी भवन

हॉस्पिटल रोड, लाहौर

पाँचवाँ संस्करण १९४० मूल्य ॥)

प्रकाशक
श्री धर्मचन्द्र विशारद
हिन्दी भवन
लाहौर

मुद्रक
श्री देवचन्द्र विशारद
एच. बी. प्रेस
लाहौर

भूमिका

मुहावरों तथा लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा में लालित्य, चमत्कार तथा प्रौढ़ता आती है। मुहावरे भाषा की जान हैं। इसी बात को लक्ष्य में रखकर प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशित की गई है।

कोई भी ऐसा वाक्यांश जिसका शब्दार्थ न लेकर कोई विलक्षण अर्थ लिया जाय, मुहावरा कहलाता है। जैसे--'पेट में चूहे कूद रहे हैं' या 'जब से उनका लड़का मरा है तब से उनकी कमर टूट गई है' इन वाक्यों में 'पेट में चूहे कूदना' तथा 'कमर टूट जाना' का वह तात्पर्य नहीं जो इसका शब्दार्थ है। यहाँ 'पेट में चूहे कूदना' का अर्थ है 'सख्त भूख लगना' तथा 'कमर टूटना' का अर्थ है 'निराश हो जाना'। परन्तु इनके प्रयोग से भाषा में लालित्य आ गया है।

मुहावरों की तरह लोकोक्तियों का भी प्रायः वाच्यार्थ नहीं ग्रहण किया जाता, अपितु उससे मिलता जुलता अर्थ लिया जाता है। जब कोई आदमी काम करना न जानता हो, परन्तु अपने अज्ञान को छिपाने के लिए बहाने बनाए तब कहा जाता है "नाच न जाने आँगन टेढ़ा"।

मुहावरों और लोकोक्तियों में यह भेद है कि मुहावरे वाक्यांश होते हैं और स्वतंत्र रूप से व्यवहृत नहीं होते, परन्तु लोकोक्तियाँ वाक्य होती हैं और स्वतंत्र रूप से अपना अर्थ रखती हैं। अपने कथन को पुष्ट या सबल करने के लिए या किसी बात को साफ़-साफ़ शब्दों में न कहकर व्यंग्य से कहने के लिए या उपदेश उपालंभ आदि के लिए लोकोक्तियों (कहावतों) का प्रयोग किया जाता है।

मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ इतनी अधिक हैं कि उनका अन्त पाना असंभव है । प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी की कुछ थोड़ी सी ऐसी चुने हुए लोकोक्तियाँ तथा मुहावरे दिये हैं, जिन का ज्ञान विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है तथा जो प्रायः प्रारम्भिक परीक्षाओं में पूछे जाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में लोकोक्तियों तथा मुहावरों के साथ ही उनके अर्थ तथा उनका वाक्यों में प्रयोग भी दिखाया गया है, जिससे उनके भाव भली-भाँति हृदयंगत हो सकें । इसके अतिरिक्त तुलसीदास, सूरदास, रहीम, वृन्द आदि हिन्दी के कवियों की वे सूक्तियाँ भी जिनका प्रयोग भाषा में लोकोक्तियों की तरह होने लगा है इस पुस्तक में सम्मिलित की गई हैं।

हमें यह सूचित करते हुए हर्ष है कि जनता तथा विद्यार्थियों ने हमारी इस पुस्तक को खूब अपनाया है और बहुत जल्दी इसके चार संस्करण समाप्त होगए हैं । पाँचवें संस्करण में इसको और अधिक पूर्ण करने का प्रयत्न किया गया है। आशा है इसका भी पहले संस्करणों की तरह आदर होगा ।

—संपादक

लोकोक्तियाँ और मुहावरे

पहला भाग

मुहावरे

अंग अंग ढीला होना—थक जाना। बस, अब मुझसे काम नहीं होता, मेरा अंग अंग ढीला हो रहा है।

अंग अंग मुसकराना—रोम-रोम से प्रसन्नता झलकना। आज उसका अंग अंग मुसकरा रहा है।

अंगार उगलना—क्रोध में असह्य वचन बोलना। उसने वे अंगार उगले, कि मैं सारी उमर याद रक्खूँगा।

अंगार बरसना—कड़ी धूप पड़ना। यहीं बैठे रहो, दोपहर का समय है, बाहर तो अंगार बरस रहे हैं।

अँगूठा चूमना—चापलूसी करना। भूखों मरें बला से, पर तुम्हारी तरह हाकिमों का अँगूठा नहीं चूमेंगे।

अँगूठा दिखाना—कोई चीज़ देने से तिरस्कार के साथ इनकार करना। अजीब आदमी हो, कल कहते थे किताब ले जाना, आज अँगूठा दिखाते हो।

अंतड़ियों में बल पड़ना—हँसते-हँसते पेट दुखने लगना। हँसते-हँसते हमारी अंतड़ियों में बल पड़ गये।

अंत पाना—रहस्य जानना। परमात्मन्! तुम्हारा अंत किसने पाया है!

अंधे के हाथ बटेर लगना—किसी अयोग्य व्यक्ति को भाग्य से अचानक कोई अच्छी वस्तु मिल जाना। वह प्रश्न जिसे बड़े-बड़े न हल कर सके, उस मूर्ख ने दो चुटकी में हल करके इनाम पा लिया, सचमुच आज अंधे के हाथ बटेर लगी है।

अंत बिगाड़ना—परलोक बिगाड़ना। मरते समय मांस खाने का पाप करके क्यों अपना अंत बिगाड़ूँ ?

अंधे की लकड़ी—एक मात्र आधार। "हाय ! मेरी अंधी की लकड़ी कौन छीन ले गया ?"

अँधेरे घर का उजाला—कुलदीपक, इकलौता बेटा। वह मेरे अँधेरे घर का उजाला था।

अक्ल का पुतला—बहुत ही बुद्धिमान। उसका क्या कहना, वह तो अक्ल का पुतला है।

अक्ल का दुश्मन—नासमझ। इसे क्या समझाते हो, यह तो अक्ल का दुश्मन है।

अक्ल के घोड़े दौड़ाना—अनेक प्रकार की कल्पना करना, सोचना। बहुतेरे अक्ल के घोड़े दौड़ाये, पर कुछ न सूझा।

अक्ल के पीछे लट्ठ लिये फिरना—समझाने पर भी उलटा काम करना। न जाने तुम्हें क्या होगया, तुम तो अक्ल के पीछे लट्ठ लिए फिरते हो, जो काम करते हो उलटा ही करते हो।

अक्ल चकराना—कुछ समझ न पड़ना। इस विश्व की रचना को देखकर पुरुष की अक्ल चकरा जाती है।

अक्ल चरने जाना—समझ का जाते रहना। क्या तुम्हारी अक्ल चरने गई थी, जो अपने शत्रु के सामने ही अपनी गुप्त बातें कहते गये।

अक्ल पर पत्थर पड़ना या अक्ल मारी जाना—बुद्धि नष्ट होना। न जाने क्यों उस समय मेरी अक्ल पर पत्थर पड़ गये थे, जो उसे वह पत्र लिख दिया।

अक्ल सठिया जाना—बुढ़ापे के कारण बुद्धि भ्रष्ट होना। इस बुड्ढे की अक्ल सठिया गई है तभी यह ऐसी बातें कह रहा है।

अगर मगर करना—बहाने बनाना, टालमटोल करना। अगर मगर करने से कुछ फायदा नहीं, मुझे हाँ या न में जवाब दो।

अच्छे दिन आना—भाग्य चमकना। अब उन्हें क्या परवाह है, उनके अच्छे दिन आ गये हैं।

अटकल पच्चू—अनुमान। अटकल-पच्चू मत लगाओ, जाकर देखो कि उन्होंने कितना काम खतम किया है?

अठखेलियाँ सूझना—दिल्लगी करना। मैं पेट दर्द से मरा जाता हूँ और तुम्हें अठखेलियाँ सूझ रही हैं।

अड़चन डालना—विघ्न डालना। उसने मेरे काम में कई अड़चनें डालीं, कई रोड़े अटकाये, पर मैं उसमें सफल हो ही गया।

अड्डा जमाना—नित्य रहने लग जाना। इस पंडित ने यहाँ खूब अड्डा जमाया है, जाने का नाम ही नहीं लेता।

अपना उल्लू सीधा करना—स्वार्थ सिद्ध करना। तुम्हें क्या, कोई मरे कोई जीवे, तुम तो अपना उल्लू सीधा करो।

अपना सा मुँह लेकर रह जाना—असफलता से लज्जित होना। सिपाहियों ने निहत्थों पर वार करने से साफ़ इनकार कर दिया, थानेदार बेचारा अपना सा मुँह लेकर रह गया।

अपनी खिचड़ी अलग पकाना—सबसे अलग रहना। और सब तो मिलकर काम कर रहे हैं, पर वह अपनी खिचड़ी अलग ही पका रही है।

अपना घर समझना—संकोच न करना। आराम से बैठिये, इसे भी अपना ही घर समझिये।

अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ी मारना—स्वयं अपना नुकसान करना। अपना भेद उसे देकर तुमने अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ी मारी है।

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना—अपनी प्रशंसा आप करना। उसका क्या, वह तो अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनता है, मैंने यह किया मैंने वह किया, हर समय यही सुनाता रहता है।

अरण्य रोदन—निष्फल रोना। ऐसी बात जिस पर कोई ध्यान न दे। इस ज़मींदार के सामने गिड़गिड़ाना केवल अरण्य-रोदन है, वह निष्ठुर कभी पसीजने का नहीं।

अरमान निकालना—अपनी इच्छाएँ पूरी करना। "बाहें दोनों गले में डाल लो आज। जो-जो अरमान हों निकाल लो आज।"

आँख उठाना—बुरी दृष्टि से देखना, हानि पहुँचाने की चेष्टा करना। किसकी शक्ति है जो मेरे रहते तुम्हारी ओर आँख भी उठा सके?

आँख उठाकर न देखना—घमंड से चूर रहना, ध्यान न देना। मैं उसके पास घंटों बैठा रहा, पर उसने आँख उठा कर भी न देखा।

आँख खुलना—(१) होश आना। (२) नींद टूटना। जब वह तुम्हारा सर्वनाश कर लेगा तब तुम्हारी आँखें खुलेंगी। तुम्हारी आहट पाते ही मेरी आँखें खुल गईं।

आँख मारना—इशारा करना। लाला जी तो रुपये दे रहे थे, पर मुनीम ने आँख मार दी।

आँख लगना—(१) नींद आना, झपकी आना। (२) टकटकी लगना, दृष्टि जमाना। आँख लगी ही थी कि तुमने जगा दिया। हमारी आँखें उसी ओर लगी हैं, पर वे कहीं आते नहीं दिखाई देते।

आँखें चार होना—आँख से आँख मिलना, देखा-देखी होना। "जब आँखें चार होती हैं, मुहब्बत आ ही जाती है।"

आँखें चुरा जाना—देखकर भी ऐसे चले जाना जैसे देखा ही नहीं, नज़र बचाना। जब से उसने मुझसे उधार लिया है, तब से जहाँ कहीं मिलता है, आँखें चुरा जाता है।

आँखें तरसना—देखने को जी चाहना। प्रियतम प्यारे, तुम्हारे दर्शन को आँखें तरस रही हैं।

आँखें दिखाना—क्रोध से घूरना। जाओ जाओ, किसी और को आँखें दिखाओ।

आँखें निकालना—क्रोध से घूरना। आँखें यों निकालते हो जैसे मुझे खा ही जाओगे।

आँखें नीची करना या होना—लज्जा व संकोच से बराबर नज़र न करना, दृष्टि न मिलाना। कब तक आँखें नीची किये रहोगे? जो पूछते हैं उसका जवाब दो।

आँखें नीली-पीली करना—नाराज़ होना। आँखें नीली-पीली क्यों करते हो? कुछ बात तो बताओ।

आँखें पथरा जाना—आँखों का थक जाना। तुम्हारी राह देखते-देखते आँखें पथरा गई हैं।

आँखें फिरना—प्रतिकूल हो जाना। अब वह बात नहीं, अब उन की आँखें फिर गई हैं।

आँखें फेर लेना—प्रतिकूल होना। क्योंजी हम से क्या अपराध हुआ है जो आपने हमसे आँखें फेर ली हैं?

आँखें बदल जाना—पहले का सा प्रेम न करना। देखा, जब अपना मतलब निकल गया, तो उनकी आँखें ही बदल गईं।

आँखें बिछाना—प्रेम से स्वागत करना। "पूज्य महात्मा जी! आज सारा लाहौर आपके लिए अपनी आँखें बिछाए हुए है।"

आँखों से गिरना—आदर घटना। जब से मैंने उसे शराब पीते देखा है, तब से वह मेरी आँखों से गिर गया है।

आँखें सेकना—सुन्दर रूप देखकर तृप्त होना। आहा! क्या सौन्दर्य है! इधर देखो, ज़रा तुम भी आँखें सेक लो।

आँखों का काँटा होना—बुरा लगना। उमा की माँ सौतेली थी, वह अपनी माँ की आँखों का काँटा थी।

आँखों का तारा—अति प्रिय। प्यारे! मेरी आँखों के तारे! मेरे प्राणों के सहारे!

आँखों के आगे अँधेरा छाना—संसार सूना दिखाई देना।

अभिमन्यु की मृत्यु का समाचार पाते ही, उत्तरा की आँखों के आगे अँधेरा छा गया।

आँखों पर परदा पड़ना—धोखा खाना। मेरी आँखों पर न जाने कैसा परदा पड़ गया जो उसका आगा-पीछा बिना जाने केवल उसकी बातों के भुलावे में आकर उसे इतना माल उधार देता गया।

आँखों पर बैठाना—आदर करना। वे एक बार यहाँ आएँ तो सही, सब लाहौर-वासी उनको अपनी आँखों पर बिठायँगे।

आँखों में खटकना—बुरा लगना। सभाओं में खुफ़िया-पोलीस के आदमी सबकी आँखों में खटकते हैं।

आँखों में धूल झोंकना—धोखा देना। वह बड़ा चालाक है, बड़ों बड़ों की आँखों में धूल झोंकता है।

आँखों में रात काटना—रात-भर जागते रहना। पति की राह देखते-देखते बेचारी ने आँखों में रात काट दी।

आँखों में समाना—सदा ध्यान में रहना। उनकी वह मोहिनी मूरत मेरी आँखों में समा गई।

आँच न आने देना—कष्ट न आने देना, जब तक मैं जीवित हूँ, तब तक तुम पर किसी प्रकार से आँच न आने दूँगा।

आँचल पसारना—नम्रता दिखाना, भीख माँगना। भगवन् ! आँचल पसार कर यही माँगती हूँ कि मेरा यह लाल चिरजीवी हो !

आँचल में बाँधना—हर समय साथ रखना। वह दवाई क्या मैं आँचल में बाँधे फिरता हूँ जो माँगते ही दे दूँ ?

आँचल में बात बाँधना—बात को अच्छी तरह याद रखना, कभी न भूलना। किसी के झगड़े में पड़ना बुरा है, यह बात आँचल में बाँध रक्खो।

आँसू पीकर रह जाना—अति शोक में निःशब्द रोना। जब उसे अपने पति की याद आती है तो बेचारी आँसू पीकर रह जाती है।

आँसू पोंछना—दिलासा देना। एक रमेश था जो इस कष्ट में उस के आँसू पोंछता था।

आकाश पाताल का अंतर—बहुत अधिक भेद। अजी आप मेरी चीज़ के साथ उसकी चीज़ का क्या मुकाबला करते हैं, इन दोनों में तो आकाश-पाताल का अंतर है।

आकाश से बातें करना—अधिक ऊँचा होना। हमारे महाराज के महल आकाश (आसमान) से बातें करते हैं।

आग-बबूला होना—बहुत गुस्से में आ जाना। भीम को हँसते देख दुर्योधन आग-बबूला हो गया।

आग में घी डालना—क्रोध को बढ़ाना। लक्ष्मण के वचन आग में घी डालते थे—परशुराम जी उन्हें सुनकर आग-बबूला हो गए।

आगा-पीछा सोचना—कार्य का परिणाम सोचना। काम आरंभ करने से पहले उसका आगा-पीछा सोच लेना चाहिए।

आटा गीला होना—कठिनाई में पड़ना, आफ़त में फँस जाना। कंगाली में आटा गीला।

आटे-दाल का भाव मालूम होना—कष्ट का अनुभव होना। अभी तो बाप के सिर पर मौजें उड़ाते हो, जब शादी होगी और घर की चिंता लगेगी तब तुम्हें आटे-दाल का भाव मालूम होगा।

आटे के साथ घुन पिसना—जौ या गेहूँ के साथ घुन पिसना। अपराधी के साथ निरपराधी का भी दंड भुगतना। देखना कहीं आटे के साथ घुन न पिस जाय, ये बेचारे निर्दोष हैं, इन्हें कष्ट न हो।

आठ-आठ आँसू रोना—फूट-फूट कर रोना। घर की याद आते ही वह आठ-आठ आँसू रोने लगता है।

आड़े हाथों लेना—खरी-खोटी सुनाना। मैंने तो आज इन्हें ऐसे आड़े हाथों लिया कि अब वे इधर आने का नाम भी न लेंगे।

आदमी बनना—शिष्टता सीखना। कुछ आदमी बनो, क्या इस तरह गली में चलते फिरते खा रहे हो।

आन की आन में—क्षण भर में। आँधी आई और आन की आन में सब ओर अंधकार छा गया।

आपा-धापी पड़ना—अपनी-अपनी चिंता में लगना। मुसाफ़िरों ने जब सुना कि जहाज़ डूबनेवाला है तो उनमें जान बचाने के लिए आपा-धापी पड़ गई।

आपे से बाहर होना—क्रोध आदि के आवेश में सुध खो बैठना। उनकी कौन कहे, वे तो ज़रा-ज़रा सी बात पर आपे से बाहर हो जाते हैं।

आसन डोलना—चित्त चलायमान होना, हृदय पर प्रभाव पड़ना। मेनका का रूप देख विश्वामित्र का भी आसन डोल उठा। जब प्रजा पर बहुत अत्याचार होते हैं तब भगवान का भी आसन डोल उठता है।

आसमान टूट पड़ना—(१) अकस्मात् विपत्ति आना। (२) ग़ज़ब होना। पुत्र की मृत्यु का सुनना था कि मा पर आसमान टूट पड़ा। क्यों इतना झूठ बोलते हो, आसमान टूट पड़ेगा।

आसमान पर चढ़ना—बहुत घमंड करना। कौन सा ऐसा काम कर दिखाया है जो आसमान पर चढ़े जाते हो?

आसमान पर चढ़ाना—अत्यधिक प्रशंसा करना। माना कि वे विद्वान् हैं, पर आप तो उन्हें एकदम आसमान पर चढ़ा रहे हैं।

आसमान पर थूकना—किसी बड़े आदमी पर लांछन लगाने पर स्वयं निन्दित होना। महात्मा गांधी के बारे में ऐसी बेसिर पैर कि बातें कहना आसमान पर थूकना है।

आसमान से गिरना—बिना परिश्रम के मिलना, टपक पड़ना। कुछ काम-धाम करते नहीं, रुपया क्या आसमान से आ गिरेगा? अगर यह पुस्तक तुमने यहाँ नहीं रक्खी तो क्या आसमान से गिरी है?

आसमान सिर पर उठाना—अधिक कोलाहल करना। चुप रहो, आसमान क्यों सिर पर उठाते हो ?

आस्तीन का साँप—कपटी मित्र। जिसे दोस्त समझा वही आस्तीन का साँप निकला।

इज़्ज़त गँवाना—मर्यादा नष्ट करना। रुपये के लालच में पड़ कर तुमने अपनी इज़्ज़त गँवा ली।

इज़्ज़त बिगाड़ना—अपमान करना। बदमाश आदमी भले आदमियों की राह चलते इज़्ज़त बिगाड़ देते हैं।

इज़्ज़त दो कौड़ी की न रहना—इज़्ज़त नष्ट हो जाना। इस बदमाश का संग करने से तुम्हारी इज़्ज़त दो कौड़ी की नहीं रही।

इधर-उधर की हाँकना—व्यर्थ गप्पें लगाना। करना क्या है, दिन-भर इधर-उधर की हाँकते रहते हैं।

इधर की दुनियाँ उधर होना—अनहोनी बात होना। चाहे इधर की दुनियाँ उधर हो जाय पर हम अपना वचन न तोड़ेंगे।

इधर का उधर करना—उलट पुलट करना। तुमने मेरी सारी चीज़ें इधर की उधर कर दी हैं।

इस कान से सुन कर उस कान से उड़ा देना—ध्यान न देना, कहने के अनुसार काम न करना। तुम्हें कितना भी कहा जाय पर तुम अपना पाठ कभी याद नहीं करते, तुम तो इस कान से सुनते हो और उस कान से उड़ा देते हो।

ईंट से ईंट बजाना—विध्वंस करना। महमूद जहाँ गया वहाँ उसने ईंट से ईंट बजा दी।

ईद का चाँद होना—चिरकाल बाद दर्शन देना। आजकल आप कहाँ रहते हैं ? आप तो ईद के चाँद हो गये हैं।

उँगली उठना—लोगों की निन्दा या प्रशंसा का लक्ष्य होना। 'उँगली उठेगी मुझ पर हर दम बहादुरों की।'

उँगली उठाना—दोषारोपण करना। किसकी मज़ाल है जो उस सती के चरित्र पर उँगली भी उठा सके।

उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना—थोड़ा सा सहारा पाकर सब पर अधिकार जमा लेना। मैंने तुम्हें बरामदे में थोड़ी सी जगह दी, पर अब तुमने सारे घर में आसन जमा लिया है; भाई, उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना ठीक नहीं है।

उँगली पर नचाना—वश में रखना, हैरान करना। भाभी साहब हमारे भैया को उँगलियों पर नचाती हैं। अजी, तुम्हारे ऐसों को तो मैं उँगलियों पर नचाता हूँ।

उगल देना—भेद प्रकट कर देना। थोड़ी सी मार पड़ते ही उसने सब कुछ उगल दिया।

उठ जाना—मर जाना। बड़े बड़े इस संसार से उठ गये।

उठना बैठना—मेल जोल। इनका उठना बैठना बड़े लोगों में है।

उठा न रखना—कसर न छोड़ना। उसकी नौकरी के लिए मैंने पूरा यत्न किया है, अपनी ओर से कुछ उठा नहीं रखा, आगे उसकी किस्मत।

उड़ती चिड़िया पहचानना—दिल की बात समझना। अजी हमसे चाल न चलो, हम उड़ती चिड़िया पहचानते हैं।

उधार खाये बैठना—ताक में रहना। आप तो उसका बुरा करने के लिए उधार खाये बैठे हैं।

उधेड़-बुन—सोच विचार। पतिदेव अब तक क्यों नहीं आये, इसी उधेड़-बुन में बेचारी ने सारी रात आँखों में काट दी।

उन्नीस-बीस होना—एक का दूसरे से कुछ अच्छा होना। मैंने दोनों धोतियाँ देखी हैं, कुछ उन्नीस-बीस जरूर हैं।

उलटी गंगा बहाना—विपरीत बात करना। आप तो उलटी गंगा बहाते हैं।

एक लकड़ी से हाँकना—अच्छे बुरे सबके साथ समान बरताव

करना। पुलिस वाले किसी की प्रतिष्ठा का ख़याल नहीं करते वे तो सबको एक ही लकड़ी से हाँकते हैं।

क़दम छूना—पैर पकड़ना, बिनती करना, शपथ खाना। जब वह बार बार क़दम छूने लगा तब मैंने उसे छोड़ दिया। आपके क़दम छूकर कहता हूँ मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं।

क़दम बढ़ाना—तेज़ चलना, उन्नति करना। सिंहगढ़ अब चार ही कोस रह गया था। मराठों ने क़दम बढ़ाया और दिन छिपते ही गढ़ पर धावा बोल दिया।

क़फ़न सिर से बाँधना—मरने को तैयार होना। राजपूत क़फ़न सिर से बाँध कर हल्दीघाटी के मैदान में आ जुटे।

क़ब्र में पैर लटकाये बैठना—मरने के करीब होना। क़ब्र में पाँव लटकाये बैठे हो और शादी की फ़िक्र लगी है।

कमर टूटना—निराश हो जाना, उत्साह न रहना। जबसे उनका लड़का मरा है तब से उनकी कमर ही टूट गई है।

कमर सीधी करना—थकावट मिटाना। ज़रा कमर तो सीधी कर लो, काम फिर हो जायगा।

करवटें बदलना—बिस्तर पर बेचैन रहना। मेरा दुःख तुम क्या समझो, सारी रात करवटें बदलते गुज़ारती हूँ।

कल पड़ना—चैन पड़ना। प्रियतम के बिना सारी रात कल नहीं पड़ती।

कल ऐंठना—किसी का चित्त किसी ओर से फेरना। भाभी ने आते ही ऐसी कल ऐंठ दी है कि अब भैया किसी की सुनते ही नहीं।

क़लम तोड़ना—खूब बढ़िया लिखना, अनूठी बातें लिखना। वाह वाह! खूब लिखा, क़लम तोड़ दी।

कलेजा खाना—बहुत दिक करना। वह चार दिन से कलेजा खा रहा है, उसका रुपया आज दे देंगे।

कलेजा छलनी होना—कड़ी बातों से दिल दुखना। अब तो सुनते-सुनते कलेजा छलनी हो गया है, कहाँ तक और सुनें ?

कलेजा ठंढा होना—शांति होना, संतोष होना। तुझे दर-दर का भिखारी देख कर ही मेरा कलेजा ठंढा होगा।

कलेजा थामना—जी कड़ा करना। 'कलेजा थाम लो अब दिल-जले फ़रियाद करते हैं।'

कलेजा थाम कर रह जाना—मन मसोस कर रह जाना। जिस समय वह शोक-समाचार मिला, वे कलेजा थाम कर रह गये।

कलेजा पत्थर का होना—जी कड़ा होना। कौशल्या—'हा ! मेरा कलेजा पत्थर का होगया है, राम वन जा रहा है, मैं अभी तक जीवित हूँ।'

कलेजा फटना—दुखी होना, विकल होना। "न जाने क्यों इसके रोने से मेरा कलेजा फटा जाता है ?"

कलेजे पर साँप लोटना—ईर्ष्या या दुःख से दिल जलना। मेरी तरक्क़ी सुन कर उसके कलेजे पर साँप लोटने लगा। जब वह अपने मरे लड़के की कोई चीज़ देखती है तब उसके कलेजे पर साँप लोट जाता है।

कलेजे पर हाथ रखना—अपने दिल से पूछना। तुम कहते हो हमने रुपये नहीं लिये, ज़रा कलेजे पर तो हाथ रखो।

कलेजा पानी होना—चित्त में अत्यन्त दया आना। पति-परित्यक्ता गर्भवती सीता का विलाप सुन कर पत्थर का कलेजा भी पानी होता था।

कलेजा मुँह को आना—जी घबराना, बहुत दुःख होना। इस दुखिया की बात सुनकर मेरा कलेजा मुँह को आता है।

क़सम खाना—किसी बात के न करने की प्रतिज्ञा करना। मैंने आज से वहाँ जाने की क़सम खाई है।

कसौटी पर कसना—खूब जाँच-पड़ताल करना, परखना। मैं उसे खूब कसौटी पर कस चुका हूँ, वह कभी विश्वासघ[illegible] करेगा।

कहीं का न छोड़ना—भ्रष्ट कर देना। जुए की आदत ने उसे कहीं का न छोड़ा।

काँटा बिछाना या काँटा बोना—विघ्न डालना, अनिष्ट करना। तुम उससे विरोध करके अपने राह में काँटे बिछा रहे हो। 'जो तोको काँटा बुवै ताहि बोव तू फूल।'

काँटा दूर होना—बाधा दूर होना। उसके यहाँ से चले जाने से मेरे रास्ते से एक काँटा दूर हो गया।

कागज़ काला करना—व्यर्थ कुछ लिखना। अजी वह लिखना क्या जाने, कागज़ ज़रूर काले कर लेता है।

कागज़ी घोड़े दौड़ाना—क्रिया द्वारा कुछ न करना, लेखों द्वारा उत्तेजना देना। मंत्री जी! आप लोग क्या करेंगे, आप तो केवल कागज़ी घोड़े ही दौड़ाते हैं।

कान कतरना—बढ़ कर काम करना। अरे वह छोकरा बड़ा चालाक है, बड़ों-बड़ों के कान कतरता है।

कान खाना—शोर मचाना। अब जाओ भी, कान मत खाओ मुझे और भी काम करना है।

कान खुलना, खड़े होना—होश आना। न-जाने आप लोगों के कान कब खुलेंगे, देश चौपट हो रहा है पर आपको कुछ ध्यान ही नहीं।

कान देना—ध्यान देकर सुनना। गुरुजनों की बातों पर कान दो।

कान पकड़ना—फिर से किसी बुरे काम को न करने का व्रत लेना। मैंने आज से कान पकड़े फिर तंबाकू नहीं पिऊँगा।

कान पर जूँ न रेंगना—बार बार कहने पर न मानना। आप लोगों से हज़ार बार प्रार्थना की गई है कि विदेशी माल छोड़ दो, पर आपके कान पर जूँ नहीं रेंगती।

कान भरना—चुगली लगाना। दारोगा ने पहले ही हमारे विरुद्ध मुंसिफ के कान भर रखे थे, फिर हमारी कौन सुनता।

कानों-कान ख़बर न होना—ज़रा भी ख़बर न होना । देखो इस काम को ऐसे ढंग से करना कि किसी को कानों-कान ख़बर न होने पाये ?

काफ़ूर होना—एकदम गायब हो जाना । देखते ही देखते वह काफ़ूर होगया ।

काम आना—संग्राम में मारा जाना, काम में आना, उपयोगी होना, साथ देना । पानीपत की तीसरी लड़ाई में हज़ारों मराठे काम आए । यह पुस्तक तुम्हीं रख लो, हमारे किस काम आयगी ? "मित्र वही है जो समय पर काम आवे ।"

काम तमाम करना—मार डालना । तलवार के एक ही वार में शिवाजी ने उस दुष्ट का काम तमाम कर दिया ।

काम निकलना या निकालना—प्रयोजन सिद्ध होना या करना । काम निकल गया तो फिर कौन किस को बुलाता है ? तुम इस समय अपना काम निकालने की करो पीछे फिर देखा जावेगा ।

काम बनना—अभीष्ट सिद्ध होना । लो, कृपाराम आगया, बस अब काम बन गया ।

काया पलट जाना—और ही रूप हो जाना । इन बीस वर्षों में तो भारत की काया ही पलट गई है ।

काला नाग—अत्यन्त कुटिल या खोटा आदमी । अजी उसे सीधा न समझो, वह तो काला नाग है ।

किताब का कीड़ा होना—अधिक पढ़ते रहना । रात को तो पुस्तक छोड़ो, तुम तो बस किताब के कीड़े हो गये हो ।

किनारा करना—साथ छोड़ना । विपत्ति में सगे भाई भी किनारा कर जाते हैं ।

किरकिरा हो जाना—आनन्द में बाधा आ पड़ना । दूल्हे के बीमार हो जाने से शादी का सारा मज़ा ही किरकिरा हो गया ।

किस खेत की मूली--कुछ सत्ता न रखना। हमने बड़ों-बड़ों के छक्के छुड़ा दिये हैं, तुम किस खेत की मूली हो।

किस मर्ज़ की दवा--किस काम के लिए। तुम से इतना भी नहीं हो सकता तो तुम हो किस मर्ज की दवा ?

किस मुँह से--किस बल पर। इस छोटी-सी परीक्षा में तो तुम पास नहीं हो सके, मैं किस मुँह से इतने बड़े अफसर के पास तुम्हारी सिफ़ारिश करूँ ?

किस्मत खुलना--भाग्य चमकना। अजी, उसकी किस्मत खुल गई है, नहीं तो पहले तो वह दाने-दाने को मोहताज था।

किस्मत फूटना--भाग्य मंद पड़ना। मेरी किस्मत तो पतिदेव की मृत्यु के साथ ही फूट गई।

किस्मत लड़ना—भाग्य की परीक्षा होना, किस्मत खुलना। इस समय कई आदमियों की किस्मत लड़ रही है, देखें वह नौकरी किसे मिलती है। उनकी किस्मत लड़ गई, वे जीत गये।

किस्सा खतम होना—झगड़ा मिटना। प्राण निकलें तो किस्सा ख़तम हो। बहुत हुआ, अब इस किस्से को ख़तम करो।

कुँआ खोदना--हानि पहुँचाने का यत्न करना। "जो दूसरे के लिए कुँआ खोदता है, उसके लिए खाई खुदी रहती है।"

कुँए में गिरना--आपत्ति में फँसना। जो समझते-बूझते भी कुँए में गिरे, उसे कौन बचा सकता है ?

कुत्ता काटना--पागल होना। क्या हमें कुत्ते ने काटा है जो हम इतनी रात को वहाँ जायँगे ?

कुत्ते की मौत मरना--बहुत बुरी तरह से मरना। "इस प्रकार काना मरा और कुत्ते की मौत मरा।"

कुप्पा हो जाना—रूठकर बोलचाल बंद कर देना, अत्यन्त हर्षित होना, मोटा हो जाना। ज़रा सी बात पर तुम फूल कर कुप्पा हो जाते

हो। जिस समय वह परीक्षा में पास होने की बात सुनेगा फूल कर कुप्पा हो जायगा। आज-कल वह खूब खा-पीकर कुप्पा हो रहा है।

कुरसी देना—इज़्ज़त करना। सम्मान करना। बड़े-बड़े हाकिम उनको कुरसी देते हैं।

कूड़े पर फुलेल डालना—कृतघ्न पर उपकार करना, किसी वस्तु को व्यर्थ गँवाना। उसे स्वयं ही कुछ नहीं आता, वह तुझे क्या पढ़ाएगा? उसे २०) देना तो कूड़े पर फुलेल डालना है।

कोई दम का मेहमान—मरनेवाला। बस, वह तो अब कोई दम का मेहमान है, उससे बोला भी नहीं जाता।

कोख उजड़ना—संतान मर जाना। पहले ही विधवा थी, अब उस बिचारी की कोख भी उजड़ गई।

कोख की आँच—संतान का वियोग। सब दुख सहा है, पर कोख की आँच नहीं सही जाती।

कोरा जवाब—साफ इनकार। आप ही पर सारा भरोसा था, आप ही ने कोरा जवाब दे दिया।

कोरा रखना—कुछ शिक्षा न देना। लड़कों को तो पढ़ाते हो, लड़कियों को क्यों कोरा रखते हो?

कोल्हू का बैल—दिन-रात काम करने वाला, अत्यन्त परिश्रमी। वह कोल्हू का बैल है, दिन-भर काम में लगाये रखो, तब भी वह थकेगा नहीं।

कोसों दूर रहना या भागना—बचे रहना, बहुत परहेज़ करना। ना, तुम ही पिओ, मैं तो भाँग से कोसों दूर भागता हूँ।

कौड़ी काम का नहीं—किसी योग्य नहीं। इस साइकल पर रकम न खर्चना, यह कौड़ी काम की नहीं।

कौड़ी को न पूछना—बिलकुल निकम्मा, कुछ भी कदर न होना। यहाँ, उसे कोई कौड़ी को भी नहीं पूछता।

कौड़ी कौड़ी का मोहताज—रुपये-पैसे से बिलकुल खाली। उससे तुम्हें क्या सहायता मिलेगी, वह तो आज कल खुद कौड़ी कौड़ी का मोहताज है।

क्या पड़ी है—क्या आवश्यकता है। मुझे क्या पड़ी है कि बिन बुलाये वहाँ जाऊँ ?

क्या मुँह (कौन मुँह) दिखाना—क्या उत्तर देना। साल भर यहाँ बिताया, अब खाली हाथ घर जाकर क्या मुँह (कौन मुँह) दिखाऊँगा ?

खटाई में पड़ना—झमेले में डालना, कुछ निश्चित न करना। पहले तो उनका हरद्वार जाने का विचार पक्का हो गया था, पर अब तो मामला खटाई में पड़ गया लगता है।

खरी खोटी सुनाना—दुर्वचन कहना। वह आगा-पीछा नहीं देखता, खरी-खोटी सुनाने लग जाता है।

खरी-खरी सुनाना—सच्ची बात, जो दूसरों को बुरी लगें, कहना। मैं किसी से डरने वाला थोड़े ही था, मैंने खूब खरी-खरी सुना दीं।

खाक छानना—भटकना। इस मुए पेट की खातिर दर दर की खाक छाननी पड़ती है।

खाक डालना—छिपाना, दबाना, भूल जाना। उसके ऐबों पर कहाँ तक खाक़ डाली जाय ? पुरानी बातों पर खाक डाल कर अब दोनों भाई मेल कर लो।

खाक में मिलाना—बिगाड़ना, तबाह करना। इस कुपूत ने कुल की आन खाक में मिला दी।

खाने दौड़ना—एक दम गुस्से में आ जाना। इस मुई को कुछ कह दो सही, बस खाने को दौड़ती है।

खाला जी का घर—आसान काम। रुपया कमाना खाला जी का घर नहीं है। "यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं।"

खिचड़ी पकाना—गुप्त रूप से कोई षड्यंत्र करना। तुम लोग यहाँ बैठे-बैठे क्या खिचड़ी पका रहे हो ?

खुल पड़ना—अपने मन की बात साफ़ साफ़ कहना। मैं जब उससे खूब मिलकर बातें करने लगा, तब वह खुल पड़ा।

खुले-आम—सब के सामने। अजी अब तो वह खुले-आम हमें गाली निकालता फिरता है !

खुशामदी टट्टू—हाँ में हाँ मिलाने वाला। उसकी भली कही, उस जैसा खुशामदी टट्टू दुनियाँ में न मिलेगा।

खून का प्यासा—मारने की इच्छावाला जानी दुश्मन। वे दोनों पहले तो लँगोटिया-यार थे, पर आजकल एक-दूसरे के खून के प्यासे होगये हैं।

खून खुश्क होना या सूखना—अत्यन्त भयभीत होना। मास्टर साहब को देखते ही ऊधमी लड़कों का खून सूख (खुश्क हो) गया।

खून खौलना (उबलना)—जोश आना। पंडित जवाहरलाल का भाषण सुन कर नवयुवकों का क्या, बूढ़ों तक का खून खौलने (उबलने) लगता था।

खून बिगड़ना—रक्त में किसी प्रकार की खराबी होना। उसके सारे शरीर पर फुँसियाँ निकल आई हैं, मालूम होता है उसका खून बिगड़ गया है।

खून बहाना—मार डालना। बात ही बात में उसने कइयों का खून बहा दिया।

खेत रहना—युद्ध में मारा जाना। कुरुक्षेत्र के युद्ध में असंख्य योद्धा खेत रहे।

खेलना-खाना—आनन्द से दिन बिताना। अभी तुम्हारे खेलने-खाने के दिन हैं, कोल्हू के बैल की तरह दिन-रात काम करने के नहीं।

खेल बिगड़ना—बनी-बनाई बात बिगड़ जाना। हम सब

सिनेमा जाने की तैयारी किये बैठे थे, पर इतने में मास्टर साहब के आ जाने से सब खेल बिगड़ गया।

खोपड़ी गंजी करना—मारते-मारते सिर के बाल उड़ा देना। बहुत बोलेगा तो खोपड़ी गंजी कर दूँगा।

ख्याली पुलाव पकाना—मनमानी कल्पनाएँ करना। यों ख्याली पुलाव पकाने से क्या होगा, कुछ मेहनत करो।

गज़ब करना—आश्चर्य का काम करना। आपने तो ग़ज़ब कर दिया, हम तो समझते थे कि आप इस फन में कोरे ही हैं।

गज़-भर की छाती होना—उत्साह बढ़ना। परीक्षक के प्रश्नों के उत्तर देने में राम घबरा रहा था, पर मास्टर साहब के आते ही उसकी गज़भर की छाती हो गई।

गठरी मारना—अन्याय से किसी का धन ले लेना। अपनी हिम्मत से कौन अमीर बनता है, जो दूसरों की गठरी मार ले वही अमीर है।

गड़ जाना—झेंपना, लज्जित होना। हाकिम के सवालों का जवाब देती हुई वह जमीन में गड़ी जाती थी।

गड़े मुर्दे उखाड़ना—दबी-दबाई या पुरानी बात ले बैठना। अब तुम दोनों की सुलह हो गई, अब फिर पिछली बातों को छेड़कर क्यों गड़े मुर्दे उखाड़ते हो?

गत बनाना—पीटना। जूतों से वह गत बनाऊँगा कि जन्म भर याद रक्खोगे।

गप्पे हाँकना—व्यर्थ बात करना। गप्पे हाँकना ही आता है, कुछ करके दिखाओ तो जानें।

गरदन उठाना—प्रतिवाद करना। जब तक तुम गरदन नहीं उठाते तब तक वह अत्याचार करता ही जायगा।

गरदन झुकाना—आज्ञाकारी, नम्र या अधीन होना। उनको देखते ही तुम सब की गरदनें झुक जाती हैं।

गरदन पर छुरी फेरना—अत्याचार करना। पूँजीपति सदा मजदूरों की गरदन पर छुरी फेरते रहे हैं।

गरदन पर सवार होना—पीछा न छोड़ना। जब देखो गरदन पर सवार रहते हो, जैसे मुझे कुछ और काम ही नहीं है।

गरदन हिलाना—इनकार करना। मैंने पूछा—आओगे? उन्होंने गरदन हिला दी और चले गये।

गरम होना—नाराज़ होना। तुम तो ज़रा-ज़रा सी बात में गरम हो जाते हो।

गला काटना—अत्यन्त कष्ट पहुँचाना, अन्याय करना। वह तो असामियों का गला काटता है।

गला घोंटना—जबरदस्ती करना। गला घोंट कर कोई किसी से कब तक काम ले सकता है?

गला छूटना—छुटकारा मिलना। दारोगा को ५०) दिये तब जाकर गला छूटा।

गला फँसना—बंधन में पड़ना, विवश होना। जब आदमी का गला फँसता है तब वह सब कुछ करने को तैयार हो जाता है।

गला फँसाना—आपत्ति में फँसाना, संकट में डालना। हमारा गला फँसा कर आप चलते बने।

गले का हार—अतिप्रिय, जो कभी जुदा न किया जाय। इस समय वह राजा साहब के गले का हार हो रहा है।

गले पड़ना—इच्छा न होने पर मिलना। झंडियाँ लगाने का काम मेरे गले पड़ा है। 'गये नमाज़ छुड़ाने रोज़ा गले पड़ा'।

गले मढ़ना बाँधना वा डालना—दूसरे की इच्छा के विरुद्ध देना। इतने दिन बरत कर अब इसे मेरे गले मढ़ने आये हो?

गहरी छनना—आमोद प्रमोद में समय कटना। आज कल तो खूब गहरी छनती है न?

गाँठ कतरना या काटना—जेब कतरना। राह चलते चलते उसकी गाँठ कतर ली गई।

गाँठ का पूरा—मालदार। अक्ल का अन्धा और गाँठ का पूरा मालिक मिलने पर नौकरों को स्वर्ग मिल जाता है।

गाँठ में बाँधना—अच्छी तरह याद रखना। मेरी बात गाँठ में बाँध लो, यह लड़का अवश्य किसी न किसी दिन ऊँचे पद पर पहुँच जायगा।

गागर में सागर भरना—बहुत लंबे-चौड़े विषय को थोड़े शब्दों में कह देना। पाणिनि ने अष्टाध्यायी क्या बनाई है, गागर में सागर भर दिया है, सारा संस्कृत व्याकरण उसमें आ गया है।

गाढ़े का साथी—संकट के समय का मित्र। सच्चा मित्र वही है, जो गाढ़े का साथी हो।

गाल बजाना—डींग मारना। वह कर-धर तो कुछ सकता नहीं, खाली गाल बजाना जानता है।

गिन-गिन कर दिन काटना—बहुत कष्ट से दिन बिताना। तुम्हारे वियोग में वह गिन-गिन कर दिन काट रही है।

गिन-गिन कर पैर रखना—बहुत धीरे धीरे चलना। तुम तो गिन गिन कर पैर रख रहे हो, इस तरह घर कब पहुँचोगे?

गिरगिट की तरह रंग बदलना—एक सिद्धान्त पर स्थिर न रहना। इनका क्या विश्वास? ये तो गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं।

गुड़ गोबर कर देना—काम बिगाड़ देना। काम बन ही गया था, तुम ने आकर सब गुड़ गोबर कर दिया।

गुदड़ी का लाल—कोई ऐसा धनी या गुणी जिस के रूप रंग आदि से उसका धन या गुण प्रकट न हो। हरिमोहन गूदड़ नहीं, गुदड़ी का लाल है।

गुरु घंटाल—बड़ा चालाक, धूर्तराज। वे पूरे गुरु घंटाल हैं।

गुल खिलना—कोई विचित्र बात होना, बखेड़ा खड़ा होना। आज वे भी आ गये हैं, देखें अब क्या गुल खिलता है?

गुलछर्रे उड़ाना—आनन्द करना। क्या करोगे पढ़ लिख कर? बाप काफी रुपया छोड़ गया है, खूब गुलछर्रे उड़ाओ।

गुस्सा पीना—भीतर ही भीतर क्रोध को रोक कर रह जाना। तुम्हारे साथ होने के कारण मैं गुस्सा पीकर रह गया, नहीं तो न जाने आज क्या कर बैठता?

गूँगे का गुड़—ऐसी बात जिसका अनुभव हो पर वर्णन न किया जा सके, ऐसी बात जो कहते न बने। "अमृत कहा अमित गुन प्रगटै सो हम कहा बतावैं। सूरदास गूँगे के गुर ज्यों बूझति कहा बुझावैं॥"

गोली मारना—तुच्छ समझ कर छोड़ देना। गोली मारो ऐसे राज्य को जो भाइयों का वध करने के बाद मिले।

घड़ों पानी पड़ जाना—अत्यन्त लज्जित होना, लज्जा के मारे गड़ जाना। जब मैंने उसके मुँह पर वह बात कही तो उस पर घड़ों पानी पड़ गया।

घर उजड़ना—कुल की संपत्ति का नष्ट होना। आपस के झगड़े के कारण दोनों घर उजड़ गए।

घर का—निज का, अपना, आपस का। हमारा तो घर का मकान है। उनका हमारा तो घर का मामला है।

घर का अच्छा—समृद्ध कुल का। रमेश देखने में तो घर का अच्छा मालूम होता है, अन्दर की राम जाने।

घर का आदमी—अपने कुटुंब का प्राणी, घनिष्ठ मित्र। आप तो घर के आदमी हैं, आप से क्या छिपाव।

घर का काटना या काटने दौड़ना—घर में रहना अच्छा न लगना, घर में जी न लगना (जब घर का कोई आदमी कहीं चला जाता

है या मर जाता है तब इस तरह कहते हैं)। श्याम के बिना मुझे यह घर काटने को दौड़ता है।

घर का मर्द या शेर—अपने ही घर में बल दिखाने वाला, परोक्ष में शेखी बघारने वाला। तुम तो घर के शेर हो।

घर का रास्ता लेना—चले जाना, भाग जाना। जाओ, घर का रास्ता लो।

घर तक पहुँचना—समाप्ति तक पहुँचना, पूरा करना। जिस काम को उठाओ उसे घर तक पहुँचाओ।

घर फूँक तमाशा देखना—घर की संपत्ति नष्ट कर के मनोरंजन करना, अपनी हानि कर मौज उड़ाना। तुम्हारे जैसा घर फूँक तमाशा देखने वाला और कौन होगा?

घर बसना—घर की हालत का सुधरना, घर में स्त्री का आना। ईश्वर चाहे तो किसी का घर बसते देर नहीं लगती।

घर बैठे—बिना परिश्रम किये। तुम्हें तो भाई, घर बैठे १००) महीने पेंशन के मिल जाते हैं।

घर में गंगा—बिना दौड़ धूप किये किसी वस्तु की प्राप्ति। अरी, तेरे तो घर में गंगा है, सब पढ़े-लिखे हैं, तुझे खत पढ़ाने के लिए यहाँ आने की क्या ज़रूरत?

घर (मकान या कमरा) सिर पर उठाना—बहुत शोर करना। तुमने तो सारा घर सिर पर उठा रखा है।

घाट-घाट का पानी पीना—देश-देशान्तरों में घूम कर अनुभव प्राप्त करना। इसने घाट-घाट का पानी पिया है, यह भी कभी धोखा खा सकता है?

घात में रहना या फिरना—ताक में घूमना, अनिष्ट साधन के लिए अनुकूल अवसर ढूँढते रहना। उससे बचे रहना, वह बहुत दिन से तुम्हारी घात में घूम रहा है।

घात लगाना—किसी काम के लिए अनुकूल अवसर ढूँढना, मौका ताकना। वह बहुत देर से घात लगाये बैठा है।

घाव पर नमक छिड़कना—दुखियों को दुर्वचनों द्वारा और दुखाना। बेचारी विधवा का पुत्र मर गया है, तिस पर ननदें तानों द्वारा उसके घाव पर नमक छिड़कती हैं।

घाव हरा करना—भूले हुए दुःख का स्मरण दिलाना। गली की स्त्रियाँ मृत पति की याद दिला कर उसका घाव हरा कर देती थीं।

घास काटना या खोदना—व्यर्थ समय गँवाना, निरर्थक काम करना। इतने दिन क्या स्कूल में घास खोदते रहे हो?

घिग्घी बँधना—रोते-रोते हिचकी लगना। आँसू बहाते-बहाते इसकी घिग्घी बँध गई है।

घी के दीए जलना—समृद्ध होना, सुख-चैन से रहना। कहाँ वे दाने-दाने को तरसते थे, वहाँ अब उनके यहाँ घी के दीए जलते हैं।

घुल-घुल कर मरना—बहुत दिनों तक कष्ट भोगकर मरना। पति की मृत्यु के दो ही साल पीछे वह बेचारी भी घुल घुल कर मर गई।

घुमा फिरा कर बातें करना—चालाकी से, अस्पष्ट रूप से कोई बात कहना। यों घुमा फिरा कर बातें करने से क्या फायदा? जो कुछ कहना हो साफ साफ कहिये।

घोड़े बेच कर सोना—खूब निश्चिन्त हो कर सोना। परीक्षा खतम हो गई, अब मोहन घोड़े बेचकर सोता है।

चंडूखाने की गप—झूठी बकवाद। यह तो निरी चंडूखाने की गप है, इस पर विश्वास न करो।

चंपत होना—खिसक जाना। ज्यों ही बजाज़ दूसरा कपड़ा लाने अन्दर गया त्यों ही चोर वह थान बगल में दबा चंपत हो गया।

चकमा देना—धोखा देना। धूर्त लोग यों ही भोली-भाली लड़कियों को चकमा देकर ले जाते हैं।

चक्कर में डालना—भ्रम में डालना। वकील की बातों ने मुझे चक्कर में डाल दिया।

चंगुल में फँसना—किसी की बुरी सलाह मान लेना। वह उस धूर्त के चंगुल में फँस गई और वह रातों रात उसे ले भागा।

चट कर जाना—सब खा जाना। विपिन दो सेर पेड़े देखते-देखते चट कर गया।

चलता करना—हटाना, भगाना, भेजना। अब उन्हें क्यों बैठाये हो, जल्दी चलता करो। इस कागज़ को आज चलता करो।

चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना—होते हुए काम में विघ्न डालना। तुम तो व्यर्थ ही चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाते हो।

चल निकलना—किसी काम में सफलता प्राप्त होना। अब तो तुम्हारा रोज़गार खूब चल निकला है।

चल बसना—मर जाना। बड़े-बड़े इस दुनियाँ से चल बसे।

चहल पहल मचना—रौनक होना। इस बाग में तो हर समय चहल-पहल मची रहती है।

चाँद पर थूकना—किसी की व्यर्थ निन्दा करना और फलतः स्वयं निन्दित होना। महात्मा गांधी के विषय में कुछ कहना चाँद पर थूकना है।

चाँदी का जूता—रुपयों का लालच। चाँदी के जूते से सब काम हो सकते हैं।

चादर से बाहर पैर पसारना—आय से अधिक व्यय करना। लड़कियों की शादी पर लोग प्रायः अपनी चादर से बाहर पैर पसार देते हैं।

चारों खाने-चित होना—ऐसा चित गिरना जिससे हाथ-पाँव फैल जायँ। गामा ने एक ऐसा पेंच लगाया कि ज़बिस्को चारों-खाने-चित हो गया।

चार पैसे—कुछ धन। हमारे पास चार पैसे होते तो हम भी अपना रोज़गार खोल बैठते।

चाल चलना—धूर्त्तता करना, धोखा देने का यत्न करना। बच्चा, हम से भी चाल चलते हो? यहाँ तुम्हारी दाल न गलेगी।

चाल में आना—धोखे में आना। पता नहीं वह तुम्हारी चाल में कैसे आ गया!

चाल सुधारना—आचरण सुधारना। अभी से अपनी चाल सुधारो, नहीं तो पीछे पछताओगे।

चिंता सवार रहना—फ़िक्र लगी रहना। उस पर हमेशा परीक्षा की चिंता सवार रहती है।

चिऊँटे को पर लगना—मृत्यु समीप आना। मालूम होता है, तुच्छ चिऊँटे को पर लग गये हैं, जो हमसे छेड़खानी करने लगा है।

चिकना घड़ा—वह आदमी जिस पर उपदेश का कुछ भी असर न पड़े, वेहया, ढीठ। अजी वह निरा चिकना घड़ा है, तुम्हारे कहने सुनने का कुछ भी फल न होगा।

चिकनी चुपड़ी बातें—मीठी बातें जो किसी को धोखा देने के लिए कही जायँ। उसकी चिकनी चुपड़ी बातों में आकर मैंने अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली।

चिड़िया फँसाना—(१) किसी मालदार आदमी को दाँव पर चढ़ाना। (२) किसी स्त्री को बहका कर सहवास के लिए राजी करना। अब किस चिड़िया को फँसाया है जो मज़े से पहाड़ पर चले हो! वे नित नई चिड़िया फँसाते हैं और ऐश करते हैं।

चित्त पर चढ़ना—मन में बसना, बार-बार ध्यान में आना। तुम्हारे तो वही चित्त पर चढ़ा हुआ है।

चिराग बुझना—इकलौते लड़के की मृत्यु होना। जब से उसके घर का चिराग बुझा है उसका दिल किसी काम में नहीं लगता।

चुग़ली खाना—किसी के विपरीत दूसरे से शिकायत करना। चुग़ली खाकर तुम्हारे हाथ क्या आया, मेरी व्यर्थ में नौकरी छूट गई।

चुटकियों में—अति शीघ्र। मैं चुटकियों में बटन लगा देती हूँ, आप को देर न होगी।

चुप साधना—मौन धारण करना। मोहन सबेरे से चुप साधे बैठा है, उसे मनाओ तो सही।

चुल्लू भर पानी में डूबना या डूब मरना—लज्जा के मारे मुँह न दिखाना। आदमी होकर स्त्रियों से पीछे रहते हो, कुछ शरम हो तो चुल्लू भर पानी में डूब मरो।

चूँ न करना—प्रतिवाद में कुछ न कहना। थानेदार ने इतना अपमान किया, किन्तु किसी ने चूँ न की।

चूड़ियाँ पहनना—स्त्रियों का वेष धारण करना, औरत बनना। लड़ाई के मैदान से भागते हुए तुम्हें ज़रा भी शरम न आई, अब तुम चूड़ियाँ पहन कर बैठो, और हम जाकर शत्रु का सामना करेंगी।

चूल्हे में पड़ना या जाना—नष्ट भ्रष्ट हो जाना। चूल्हे में पड़े तुम्हारा माल, मुझे अभी रुपये दो। चूल्हे में जाय तुम्हारा तमाशा।

चूल्हे में डालना—नष्ट भ्रष्ट करना। चूल्हे में डालो अपनी सौगात।

चूल्हा न जलना—रसोई न बनना, हालत खराब होना। भारतीय किसानों के घरों में महीने में पन्द्रह दिन चूल्हा जलता ही नहीं।

चेहरा उतरना—उदास हो जाना। पिताजी ने कहा हम तुम्हें अपने साथ शिमला नहीं ले जायेंगे, यह सुनते ही मोहन का चेहरा उतर गया।

चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना—भयभीत होना। फ़ौज का आना सुनकर भीरु सिपाहियों के चेहरों पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

चैन की वंशी बजाना—आराम से दिन काटना। आजकल साहब दौरे पर गया हुआ है और तुम खूब चैन की वंशी बजाते हो।

चोटी से एड़ी तक का पसीना बहाना—बहुत परिश्रम करना। हमने उसके लिए चोटी से एड़ी तक का पसीना बहाया, पर उसने अब तक मज़दूरी नहीं दी।

चोटी हाथ में होना—काबू में होना। अब वे कहाँ जायँगे, उनकी चोटी तो हमारे हाथ में है।

चोला बदलना—(१) एक शरीर परित्याग कर दूसरा शरीर धारण करना, (२) नया साज-धाज बनाना। आत्मा अमर है, जीव के चोले बदलने को ही लोग मृत्यु कहते हैं। आज तो तुमने चोला ही बदल दिया।

चोली दामन का साथ—बहुत अधिक साथ या घनिष्ठता, ऐसा साथ जिसके जल्दी छूटने की आशा न हो। गोपाल का और उस का चोली दामन का साथ है। "अफ़ीम और काव्य दोनों का स्त्री और पुरुष का सा—चोली दामन का-सा—साथ है।"

चौकड़ी भूल जाना—एक भी चाल न सूझना, सुध-बुध भूल जाना। जंगल में शेर को देखते ही बड़े-बड़े बहादुर चौकड़ी भूल जाते हैं।

चौका लगाना—लीप पोत कर बराबर करना। सत्यानाश करना। "कियो तीन तेरह सबै चौका चौका लाय।" उसने हमें सहायता क्या दी उलटा हमारे परिश्रम पर चौका लगा दिया।

छँटा हुआ—बदमाश, चालाक, चतुर, धूर्त्त। उसे सीधा न समझना, वह पूरा छँटा हुआ है।

छक्के छुड़ाना—परास्त करना। नेपोलियन ने अंगरेज़ों के छक्के छुड़ा दिये थे।

छक्के छूटना—हिम्मत हारना। सिक्ख सेना का अटक पार होना था कि पठानों के छक्के छूट गये।

छठी का दूध याद आना—सब सुख भूल जाना, भारी संकट पड़ना। बच्चा, बंबई में काम करने चले हो, वहाँ काम करते-करते छठी का दूध याद आ जायगा।

छप्पर फाड़ कर देना—बिना परिश्रम के देना, बैठे बिठाये अचानक देना। जब देना होता है तो भगवान छप्पर फाड़ कर देते हैं।

छाती ठोकना—हिम्मत दिखाना। किसी कठिन काम को करने की साहसपूर्वक प्रतिज्ञा करना। सिक्ख सिपाही से पूछा गया 'कितने जवान हो ?' उसने छाती ठोक कर कहा—'सवा लाख'। मैं छाती ठोक कर कहता हूँ उसे आज ज़रूर पकड़ लाऊँगा।

छाती पर पत्थर रखना—चुपचाप दुःख सह लेना। उसने छाती पर पत्थर रखा और किसी से अपना दुःख न कहा।

छाती पर मूँग दलना—(१) किसी के सामने ही ऐसी बात कहना जिससे उसका जी दुखे, (२) बहुत कष्ट पहुँचाना, खूब पीड़ित करना। यह स्त्री बड़ी कुलटा है, अपने पति की छाती पर मूँग दलती है। "संतान का मुँह देखने के लिए सौत से छाती पर मूँग दलवाने के लिए भी तैयार हूँ।"

छाती पर धर कर ले जाना—अपने साथ परलोक में ले जाना। बूढ़े हो गये, अब भी रुपये के पीछे मारे-मारे फिरते हो, क्या ये सब छाती पर धर कर ले जाओगे ?

छाती पर साँप लोटना—ईर्ष्या होना। मनोहर की पद वृद्धि देख सुरेन्द्र की छाती पर साँप लोटने लगा।

इन मुहावरों के अतिरिक्त प्रायः 'कलेजा छलनी होना' 'कलेजा पत्थर का होना, 'कलेजा फटना', 'कलेजा ठंढा होना', 'कलेजा थाम कर रह जाना', 'कलेजे पर हाथ रखना' इत्यादि मुहावरों में 'कलेजे' के स्थान में 'छाती' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। जैसे—'छाती ठंढी होना' इत्यादि।

छान मारना—अच्छी तरह ढूँढना। मैंने सारी गलियाँ छान मारीं, पर उसका कहीं पता नहीं मिला।

छुट्टी पाना—किसी चीज़ से छुटकारा पाना। परीक्षा जल्द हो जाय तो छुट्टी पाएँ।

ज़बान गज़ भर की होना—स्वादिष्ट पदार्थों के खाने का शौक होना। "गोमती ने यह सुना तो भौहें चढ़ाकर बोली—क्या बुढ़ापे में ज़बान गज़ भर की हो गई है?"

ज़बान पर धरा होना—हर दम याद होना। मुझे परीक्षा से क्या डर, ये सब किताबें तो मेरी ज़बान पर धरी हैं।

ज़बान में लगाम न होना—उचित अनुचित सब-कुछ कह डालना, बे समझे-बूझे बोलना। तुम्हारी ज़बान पर लगाम नहीं है, जो कुछ दिल में आता है वही कह देते हो।

ज़बान बदलना—कही हुई बात से फिर जाना। उसे ज़बान बदलते क्या देर लगती है?

ज़बान पर आना—मुँह से निकलना। ऐसी बात तो मेरी ज़बान पर भी नहीं आती।

ज़बानी जमा-खर्च करना—बातें बहुत करना पर काम कुछ न करना। ज़बानी जमा-खर्च तो सभी कर लेते हैं, कुछ करो तब जानें।

ज़मीन चूमने लगना—इस प्रकार गिर पड़ना कि ज़मीन के साथ मुँह लग जाय। ज़रा-से धक्के से वह ज़मीन चूमने लगा।

ज़मीन पर पैर न पड़ना—बहुत अभिमान होना। उनके लड़के हाकिम हो गये हैं, अब उनके पैर ज़मीन पर क्यों पड़ने लगे!

जलती आग में तेल डाना—लड़ाई बढ़ाना। और आए हैं जलती आग में तेल डालने, झगड़ा निपट ही चुका था पर इनकी बातों से फिर खड़ा हो गया।

जल-भुन कर कोयला (पतंग या खाक) होना—क्रोध के

मारे पागल होना। तुम तो छोटी-छोटी बात पर जल-भुन कर कोयला हो जाते हो।

ज़हर उगलना--ईर्ष्या-पूर्ण वचन कहना। आज तो उन्होंने पंडित जी को लक्ष्य करके खूब ज़हर उगला।

ज़हर का घूँट पीना—किसी अनुचित बात को देखकर भी क्रोध को मन ही-मन दबा रखना, भीतर-ही-भीतर क्रोध दबा लेना। उन्होंने भरी सभा में मेरा अपमान किया, पर मैं ज़हर का घूँट पीकर रह गया।

ज़हर मालूम होना—अप्रिय या बुरा मालूम होना, नागवार गुज़रना। हम यहाँ कैसे रह सकती हैं, जब भावज को हमारा यहाँ रहना ज़हर मालूम होता है।

जान (ज़िन्दगी) के लाले पड़ना—संकट में पड़ना। उसे अपनी ही जान के लाले पड़े हुए हैं, तुम्हारी सहायता क्या करेगा?

जान को रोना—किसी से कष्ट पाकर उसे कोसते हुए दुखी होना। तुमने उसकी जीविका ले ली, वह अब तुम्हारी जान को रोता है।

जान खाना—तंग करना, किसी बात के लिए बार-बार कहना। चलते हैं, क्यों जान खाते हो?

जान छुड़ाना—प्राण बचाना, किसी झंझट से छुटकारा पाना। जब काम करने का समय आता है तब लोग जान छुड़ा कर भागते हैं। इसे कुछ देकर अपनी जान छुड़ाओ।

जान छूटना—निस्तार होना, झंझट या आपत्ति से छुटकारा मिलना। बिना कुछ दिये-लिये जान नहीं छूटेगी। यहाँ से जान छूटे तो लाहौर चलें।

जान देना—किसी को बहुत अधिक चाहना, किसी वस्तु की प्राप्ति या रक्षा के लिए बेचैन होना। वह तो तुम पर जान देता है पर तुम्हें उसकी कुछ भी परवाह नहीं। तुम तो पैसे-पैसे पर जान देते हो।

जान पर खेलना—खुशी से प्राण देना, प्राणों को भय में डालना,

बहुत कठिन काम करना। हल्दीघाटी के मैदान में हज़ारों राजपूत अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए जान पर खेल गये। "चौथे दिन पंडित जी ने मानों जान पर खेल कर उस कुंजी को उठा लिया।"

जान भारी होना—जीना कठिन मालूम पड़ना। इस बुढ़ापे में यह जान भारी हो गई है।

जान में जान आना—जी ठिकाने होना, मन को चैन होना। हम तो सब घबरा गये थे, तुम्हें देख कर जान में जान आई।

'जान में जान आना' के स्थान पर 'जी में जान आना भी कहा' जाता है।

जान लड़ाना—कठोर परिश्रम करना। भाई, मैंने तो अपनी जान लड़ा दी, पर तुम्हारा काम न बना।

जान सूखना—(१) भय के मारे स्तब्ध हो जाना, (२) बहुत बुरा लगना, खलना। शेर को देखते ही उसकी जान सूख गई। किसी को कुछ देते देख तुम्हारी जान क्यों सूख जाती है?

जान होठों पर आना—बहुत अधिक कष्ट होना। पीड़ा के मारे उसकी जान होठों पर है।

जामे में फ़ूला न समाना—अधिक आनन्दित होना। पति की इस सफलता पर आनन्द से वह जामे में फूली नहीं समाती।

जामे से बाहर होना—आपे से बाहर होना, अत्यन्त क्रोध करना। मैं उन्हें क्या कहूँ, वे तो एकदम आपे से बाहर हो जाते हैं।

ज़िंदगी के दिन पूरे करना—दिन काटना, मरने को होना। वे किसी तरह ज़िंदगी के दिन पूरे कर रहे हैं।

जिन चढ़ना—गुस्सा चढ़ना। जब उस पर जिन चढ़ता है तब वह किसी की नहीं सुनता।

जी अच्छा होना—चित्त स्वस्थ होना, नीरोग होना। दो-तीन दिन तक तो बुखार रहा, आज जी अच्छा है।

जी उचटना—चित्त न लगना। अब तो इस काम से मेरा जी उचट गया है।

जी काँपना—भय से कलेजा धकधक करना, डर लगना। वहाँ जाने का नाम सुनते ही मेरा जी काँपता है।

जी का बुखार निकालना—क्रोध, शोक दुःख आदि के वेग को रो-कलप कर या बक-झक कर शान्त करना। तुम्हें कोस-कोस कर वह अपने जी का बुखार निकाल रहा है।

जी का बोझ हलका होना—खटका मिटना, चिंता दूर होना। परीक्षा परिणाम देख कर मेरे जी का बोझ हलका हुआ, यदि कहीं इस बार भी फेल हो जाता तो घर में रहने को जगह ही न रहती।

जी को मारना—मन की इच्छाओं को रोकना। पहाड़ जाने को दिल तो बड़ा करता है, परन्तु परिस्थितियों से विवश होकर जी को मारे बैठा हूँ।

जी खट्टा होना—प्रेम न रहना। मैं उसे प्यार बहुत करता था, पर उसकी ज़िद के कारण मेरा जी उससे खट्टा हो गया है।

जी खोल कर—किसी संकोच के बिना, बिना हिचके। जो कुछ कहना हो जी खोल कर कहो।

जी चुराना—किसी काम से बचने के लिए बहाना करना। यह नौकर काम से बहुत जी चुराता है।

जी छोटा करना—निरुत्साहित होना, मन उदास करना। बच्चा बीमार अवश्य है पर इतनी जल्दी जी छोटा करने से कैसे काम चलेगा। तुम्हीं इतनी जल्दी जी छोटा करोगे तो और घर वालों का क्या हाल होगा?

जी जलना—चित्त में कुढ़ना, दुःख या क्रोध होना। तुम्हारी इन हरकतों से मेरा जी जला जाता है।

जी जानता है—हृदय ही अनुभव करता है, कहा नहीं जा सकता। मार्ग में जो कष्ट हुए उसे मेरा जी ही जानता है। सौतेली माँ के कारण जितने कष्ट से मैंने घर में दिन गुज़ारे हैं वह मेरा ही जी जानता है।

जी-जान से—सारा ध्यान लगा कर। वह जी-जान से परीक्षा की तैयारी में लगा है।

जी टँगा रहना—जी में खटका बने रहना। जब तक तुम लौट नहीं आओगे तब तक मेरा जी टँगा रहेगा।

जी टूट जाना—उत्साह भंग हो जाना, नैराश्य छाना। उन की बातों से हमारा जी टूट गया है, अब कुछ न कर सकेंगे।

जीती मक्खी निगलना—सरासर बेइमानी करना, जान-बूझ कर कोई बुरा काम करना। जब उससे रुपया लिया है तब देने से इनकार कैसे करूँ? इस तरह जीती मक्खी तो नहीं निगली जाती।

जी निकलना—प्राण सूखना, कष्ट बोध होना। तुम्हारा तो रुपया नहीं जाता, तुम्हारा जी क्यों निकलता है?

जी में बैठना—सत्य प्रतीत होना, दिल में निश्चय हो जाना। उनकी बातें मेरे जी में बैठ गईं।

जूत (जूता) पड़ना—घाटा पड़ना, नुक़सान होना। बैठे-बिठाये १००) का जूत (जूता) पड़ गया।

जूता चाटना—चापलूसी करना। जाओ अफसरों के जूते चाटो, यहाँ तुम्हारा क्या काम?

जूतियाँ चटखाते फिरना—व्यर्थ इधर उधर घूमना। क्यों दिन भर जूतियाँ चटखाते फिरते हो?

जूतों से खबर लेना—जूतों से पीटना। तुम्हारी जब तक जूतों से खबर न ली जाय तब तक तुम मानोगे नहीं।

जोड़-तोड़ करना—तदबीर करना, उपाय करना। क्या जोड़ तोड़ करें कुछ समझ नहीं आता। जगदीश जोड़-तोड़ तो बहुत लगा रहा है, पर बेचारे का ब्याह नहीं होता।

जोर पकड़ना—बढ़ना। तुरंत इलाज न करने से बीमारी ज़ोर पकड़ जाती है।

झख मारना—व्यर्थ समय गँवाना, विवश होना। आप सवेरे से यहाँ बैठे क्यों झख मार रहे हैं? वह करेगा क्यों नहीं, अपने आप झख मार कर करेगा।

झाड़ू फेरना—बिलकुल नष्ट कर देना। इन हज़रत ने हमारे सब मनसूबों पर झाड़ू फेर दिया।

झूठ सच कहना—निंदा करना, शिकायत लगाना। वह यों ही मेरे बारे में सब से झूठ सच कहा करता है।

टकटकी बाँधना—स्थिर दृष्टि से देखना, ऐसे ताकना जिसमें कुछ काल तक पलक न गिरे। वे जब तक यहाँ खड़ी रहीं, तुम तब तक उधर ही टकटकी बाँधे रहे।

टकसाली बोली या भाषा—सर्वसम्मत भाषा, ऐसी भाषा जिसमें ग्राम्य दोष न हो। इस संग्रह में उन्हीं लेखकों के लेख दिये गये हैं जिनकी भाषा टकसाली कही जा सकती है।

टका-सा जवाब देना—साफ़ इनकार कर देना, कोरा जवाब देना। मैंने दो दिन के लिए उन से किताब माँगी पर उन्होंने टका-सा जवाब दे दिया।

टका-सा मुँह लेकर रह जाना—छोटा सा मुँह लेकर रह जाना, लज्जित हो जाना। वह बड़ी बड़ी बातें बनाता था, पर जब मैंने उसकी कलई खोल दी तब टका-सा मुँह लेकर रह गया।

टक्कर का—जोड़ का, मुकाबिले का। उनकी टक्कर का विद्वान् मिलना कठिन है।

टक्कर खाना—(१) मारा-मारा फिरना। (२) मुकाबिले का होना। नौकरी छूट जाने पर वह इधर उधर टक्करें खाता फिरता है। इस टोपी का काम सच्चे काम से टक्कर खाता है।

टक्कर मारना—घोर परिश्रम करना, कोशिश करना। लाख टक्कर मारो पर अब वह तुम्हारे हाथ नहीं आ सकता।

टट्टी की आड़ या ओट में शिकार खेलना—गुप्त रूप से किसी के विरुद्ध काम करना। मुकाबला करना है तो सामने आओ, यों टट्टी की आड़ से शिकार खेलने में क्या लाभ ?

टपक पड़ना—अकस्मात् कहीं से आ जाना। तुम आज कहाँ से टपक पड़े ?

टस से मस न होना—ज़रा भी न हिलना। बड़ा ज़िद्दी है, इतना कहा पर वह टस से मस न हुआ।

टाँग अड़ाना—(१) फ़िज़ूल दखल देना (२) ऐसे विषय पर कुछ कहना जिसकी जानकारी न हो (३) बाधा डालना। कोई मन्त्री बने तुम्हें क्या, तुम खामखाह क्यों टाँग अड़ाते हो ? जिस बात को तुम नहीं जानते उसमें क्यों टाँग अड़ाते हो ? न जाने मेरे साथ उसकी कौन-सी दुश्मनी है कि मेरे हर काम में वह बिना टाँग अड़ाये नहीं रहता।

टाँग तोड़ना—(१) किसी भाषा को थोड़ा सा सीख कर उसके टूटे फूटे या अशुद्ध वाक्य बोलना, (२) खूब दौड़धूप करना। अजी ये अंगरेजी बँगला आदि कई भाषाओं की टाँग तोड़ते हैं। दिन भर टाँगें तोड़ीं पर काम न बना।

टाँग पसार कर सोना—निश्चिंत होना। ज़रा परीक्षा समाप्त हो ले, फिर हम भी टाँग पसार कर सोएँगे।

टाँय-टाँय फिस—आयोजना तो बहुत पर फल तुच्छ। जलसे हुए, सभाएँ हुईं, धुआँधार भाषण हुए, पर अन्त में टाँय टाँय फिस, सारा आंदोलन यों ही समाप्त होगया।

टाट उलटना—दिवाला निकालना। अरसा हुआ वे बंबई से टाट उलट कर अपने घर आ बैठे हैं।

टाल मटोल करना—बहाने बनाना। टाल मटोल ही करते रहोगे या किसी को देने का नाम भी लोगे ?

टुकड़ा तोड़ना—दूसरे की दी हुई रोटी खाना। यह तो आज कल ससुराल के टुकड़े तोड़ता है।

टुकड़ों पर पड़ना—दूसरे की दी हुई रोटी खाकर रहना, पराई कमाई पर गुज़र करना। भाई के टुकड़ों पर पड़े रहते तुम्हें शरम नहीं आती ?

टेढ़ी आँख से देखना—शत्रुता की दृष्टि से देखना। हमने तो उनका कुछ बिगाड़ा नहीं, पर पता नहीं वे हमें क्यों टेढ़ी आँख से देखते हैं।

टेढ़ी खीर—कठिन काम। फुटबाल में मोहनबागान टीम को टेढ़ी खीर है।

टोपी (पगड़ी) उछालना—निरादर करना। उसे आज-कल कुछ काम नहीं, बस दूसरों की टोपी (पगड़ी) उछालता फिरता है।

ठठरी होना—बहुत दुबला होना। इस लंबे बुखार के बाद गोपाल तो बिलकुल ठठरी हो गया है।

ठनठन गोपाल—वह व्यक्ति जिसके पास कुछ भी न हो। यह सब उनका ऊपर का दिखावा है, अन्दर से निरे ठनठन गोपाल हैं।

ठिकाना करना—(१) जगह करना, डेरा करना, (२) नौकरी या काम-धंधा ठीक करना, (३) ब्याह ठीक करना। अपने लिए कहीं बैठने का ठिकाना करो। इनके लिए भी कहीं ठिकाना करो, खाली बैठे हैं। घबराओ नहीं, इस साल तुम्हारा भी ठिकाना किए देते हैं।

ठिकाने आना—अपने स्थान पर पहुँचना, असल बात कहना। हाँ इतनी देर बाद अब आप ठिकाने पर आए।

ठिकाने लगना—(१) काम में आना, (२) अच्छी जगह खर्च होना। चलो, उसे भी नौकरी मिल गई, किसी ठिकाने लगा। अच्छा हुआ, बहुत दिनों से वह चीज़ पड़ी थी, ठिकाने लग गई।

ठिकाने लगाना—उपयोग में लगाना । ये रोटियाँ यों ही पड़ी रहेंगी, इन्हें भी खा लो—ठिकाने लगाओ।

ठोकना-बजाना—जाँचना, परखना। जो चीज़ लेना ठोक-बजा कर लेना।

ठोकरें खाना—भूलें करना और उनके कारण तकलीफ़ उठाना। "होश आती है इन्साँ को ठोकरें खाने के बाद।"

डंका बजाना—शासन होना। अँगरेज़ों से पहले भारत में मुगलों का डंका बजता था।

डंडे बजाते फिरना—निकम्मा घूमना। गोपाल आजकल इधर-उधर डंडे बजाता फिरता है।

डकार लेना—चुपचाप हज़म कर जाना, किसी का धन या कोई वस्तु उड़ा कर पता न देना। उसका तो सब माल डकार चुके, अब क्या हमारी बारी है?

डींग मारना—अपनी प्रशंसा करना। डींग तो यों मारता है और घर में जाकर देखो तो बैठने को चटाई तक नहीं।

डूबती नाव को पार लगाना—संकट से छुड़ाना। हे प्रभो! हमारी डूबती नाव को पार लगाओ।

डूब मरना—लज्जा के मारे मर जाना। कहीं जाकर डूब क्यों नहीं मरते।

डूबते को तिनके का सहारा होना—संकट में पड़े हुए निस्सहाय मनुष्य के लिये थोड़ी-सी सहायता भी बहुत होना। इस आपत्ति के समय तुम्हारे १५) भी मुझ डूबते को तिनके का सहारा होंगे।

डेढ़ ईंट की जुदा मस्जिद बनाना—बहुमत को छोड़कर अपना पृथक् मत चलाना। लाला जी की सम्मति लोगे तो वह तो अपनी डेढ़ ईंट की जुदा ही मस्जिद बनायेंगे।

डेरा-डंडा उखाड़ना—टिकने का समान उठाकर चले जाना। अरसा हुआ कि वे यहाँ से अपना डेरा-डंडा उखाड़ ले गये हैं।

डोरी ढीली छोड़ना—देख-रेख कम करना, चौकसी कम करना। जहाँ ज़रा डोरी ढीली छोड़ी कि बच्चा बिगड़ा।

ढँढोरा (ढोल) पीटना—ढोल बजा कर चारों ओर जताना, एक बात को हर जगह कहते फिरना। तुम्हें तो कुछ पता लग जाय तो बस तुम शहर भर में ढँढोरा पीट देते हो।

ढाई दिन की बादशाहत करना—थोड़े दिन के लिए खूब ऐश्वर्य पाना, थोड़ी देर की हुकूमत। तुम भी ढाई दिन की बादशाहत कर लो, फिर तो उसी चक्की में पिसना पड़ेगा।

ढेर करना—मार कर गिरा देना। ज़रा भी चूँ-चपड़ की तो यहीं ढेर कर दूँगा।

तलवार का हाथ—तलवार से प्रहार। निर्दयी ने तलवार के एक ही हाथ से उसका सर कलम कर दिया।

तलवे चाटना—जूते चाटना, चापलूसी करना। तुम जाकर उनके तलवे चाटो, मुझे उनकी क्या गर्ज़?

तवा-सा मुँह—काला मुँह। तवा सा मुँह है और अपने को बहुत खूबसूरत समझते हैं।

तशरीफ़ रखना—विराजना, बैठना। आइये, यहाँ तशरीफ़ रखिये।

तशरीफ़ लाना—पदार्पण करना, आना, पधारना। कहिये, कहाँ कहाँ से तशरीफ़ ला रहे हैं?

तशरीफ़ ले जाना—प्रस्थान कर जाना, चला जाना। आप कब तशरीफ़ ले जाएँगे? मेहरबानी कर अपनी तशरीफ़ यहाँ से जल्दी ले जाइये।

ताक-झाँक कर देखना—लुक-छिप कर देखना। उधर स्त्रियों की ओर क्या ताक-झाँक कर देख रहे हो?

ताक में रहना—मौका देखते रहना। बिल्ली चूहों की ताक में रहती है।

ताज़ा करना या होना—याद दिलाना या याद होना। दबा-दबाया झगड़ा क्यों ताज़ा करते हो? उसके आने से फिर मामला ताज़ा हो गया।

तान कर सोना—खूब हाथ पैर फैलाकर निश्चित हो कर सोना। ये तो खूब तान कर सो रहे हैं, इन्हें पता नहीं कि इनके घर खून हो गया है।

तार टूटना—चलता हुआ क्रम बंद होना। तुम्हारे रोने का तार कब टूटेगा?

तार बँधना—किसी बात का क्रम बँधना। रात भर गाने का तार बँधा रहा।

तिनका सिर पर रखना या दाँतों में पकड़ना—विनती करना, क्षमा की भिक्षा माँगना, गिड़गिड़ाना। यदि वह तिनका दाँतों में पकड़ कर आया तब मैं उस पर हथियार न चला सकूँगा। "जिन ओंठ गहे तिन जात न मारे।"

तिल का ताड़ करना या राई को पहाड़ करना—किसी छोटी बात को बहुत बड़ा देना। तुम तो फिजूल तिल का ताड़ करते हो (राई का पहाड़ करते हो) वे कोई तुम्हारे काम को बुरा थोड़ा ही कहते थे, केवल मखौल करते थे।

तिल तिल—थोड़ा थोड़ा। जब तुम्हें तिल-तिल करके जलता देखूँगी तभी मुझे शान्ति मिलेगी।

तिल धरने की जगह न होना—अधिक भीड़ होना। कल जलसे में इतनी भीड़ थी कि तिल धरने की भी जगह न थी।

तिलांजलि देना—छोड़ देना। परीक्षा समाप्त हुई कि विद्यार्थियों ने पुस्तकों को तिलांजलि दे दी।

तीन-तेरह करना—तितर-बितर करना। "कियो तीन-तेरह सबै चौका चौका लाय।"

तीन-पाँच करना—घुमाव-फिराव या हुज्जत करना। तीन-पाँच मत करो, न चलना हो तो सीधी तरह कह दो।

तूती बोलना—बात का माना जाना। आज-कल हर जगह उसकी ही तूती बोलती है।

तू-तू मैं-मैं—गाली-गलौज, लड़ाई-झगड़ा। यह रात-दिन की तू-तू मैं-मैं हमसे नहीं सही जाती।

तेवर बुरे नज़र आना या दिखाई देना—अनुराग में अंतर पड़ना, प्रेमभाव में अंतर आ जाना। क्या बात है आज-कल उनके तेवर बुरे नज़र आते हैं!

तेवर चढ़ना—क्रुद्ध होना। न कुछ कहा, न सुना, यों ही तेवर चढ़ गये हैं।

तेवर बदलना—अप्रसन्न हो जाना। आपके तेवर बदले दीखते हैं, दास से क्या अपराध हुआ है? "जुझारसिंह तलमला गये, ज़बान से कुछ न बोले पर तेवर बदल गये और मुँह लाल हो गया।"

तोते की तरह पढ़ना—बिना समझे-बूझे रटना। तोते की तरह पढ़ने से कुछ लाभ न होगा।

तोते की तरह आँखें फेरना या बदलना—बहुत बे-मुरौव्वत होना। काम निकलते ही उन्होंने तोते की तरह आँखें फेर लीं।

त्यौरी में बल पड़ना या चढ़ना—आँखें चढ़ना, दृष्टि या आकृति से क्रोध के चिह्न प्रकट होना। उनकी त्योरी में बल पड़ते ही हम सिटपिटा से जाते हैं।

त्राहि-त्राहि पुकारना—दया या रक्षा के लिए गिड़गिड़ाना। जनता त्राहि-त्राहि पुकार रही थी, पर पुलिस के डंडों का तार तब भी न टूटा।

थाली का बैंगन—लाभ और हानि देख कभी एक पक्ष में कभी दूसरे पक्ष में होने वाला मनुष्य। उनको अपना न समझना, वे तो थाली के बैंगन हैं, जिधर चुपड़ी देखेंगे उधर जा मिलेंगे।

थाह लेना—गहराई का पता लगाना, दिल के विचार का पता लगाना। उसकी थाह लेकर बताओ कि वह किस तरफ़ राय देगा ?

थूकना भी नहीं—अत्यन्त घृणा करना, ज़रा भी पसन्द न करना। हम तो ऐसी चीज़ों पर थूकते भी नहीं।

थूक कर चाटना—वचन देकर फिर जाना। मैं थूक कर चाटना नहीं जानता, जो कह दिया सो करके छोड़ूँगा।

दंग रह जाना—चकित हो जाना। लोग दंग रह गये कि दुबले से आदमी ने उस पहलवान को एक क्षण में कैसे गिरा दिया।

दबे पाँव निकल जाना—चुपचाप खिसक जाना। हेडमास्टर को देखते ही सब शरारती लड़के वहाँ से दबे पाँव निकल गये।

दम घोटना—साँस न लेने देना, गला दबा देना। ज़रा बोले तो यहीं दम घोट दूँगा।

दम फूलना—परिश्रम के कारण साँस का जल्दी जल्दी चलना। सीढ़ी चढ़ते-चढ़ते दम फूल गया।

दम भरना—किसी के प्रेम अथवा मित्रता आदि का पक्का भरोसा रखना और समय पर अभिमान-पूर्वक उसका वर्णन करना। वे उनकी मुहब्बत का दम भरते हैं। वे अपनी सत्यता का बड़ा दम भरते हैं।

दम साधना—चुप होना, मौन रहना। रुपयों का नाम सुनते ही वे दम साध गये।

दम लगाना—गाँजे या चरस का धुँआ खींचना। ज़रा बैठो थोड़ा दम लगा लें। "गंजी यार किसके, दम लगाया खिसके।"

दम सूखना—बहुत अधिक भय के कारण साँस तक न लेना। मास्टर को देखते ही लड़कों का दम सूख गया।

दम मारने की फ़ुरसत न होना—ज़रा भी समय न होना। यहाँ दम मारने की फ़ुरसत नहीं, आप और काम बढ़ाते जाते हैं।

दम के दम में—अति शीघ्र। दम के दम में सारा मकान जल गया।

दर दर मारा फिरना—कार्य-सिद्धि या पेट पालने के लिए एक घर से दूसरे घर मारा-मारा फिरना। आज-कल कई बाबू दर-दर मारे फिरते हैं।

दाँत खट्टे करना—पराजित करना। हरिसिंह ने पठानों के दाँत खट्टे कर दिये।

दाँत गड़ाना या लगाना या होना—लेने की गहरी चाह रखना, प्राप्ति के प्रयत्न में रहना। मेरी घड़ी पर उसने बहुत दिन से दाँत लगाये हुए हैं? तुम्हारी इस कविता पर मेरे दाँत कई दिन से गड़े हुए हैं।

दाँतों तले उँगली दबाना—आश्चर्य प्रकट करना। अजन्ता के चित्रों को देख कर बड़े बड़े चित्रकार दाँतों तले उँगली दबाते हैं।

दाँत तोड़ना—परास्त करना, हराना। "अलादीन के दाँत तोड़ि निज धर्म बचायो।"

दाँत निकालना—(१) व्यर्थ हँसना, (२) गिड़गिड़ाना। क्या दाँत निकालते हो, सीधे हो बैठो। जब वह दाँत निकाल कर माँगने लगा तब कैसे न देता?

दाँत पीस कर रह जाना—क्रोध रोक लेना, मन मसोस कर रह जाना। उसने अपने घर में बुलाकर मेरा अपमान किया, पर मैं कुछ बोला नहीं, केवल दाँत पीसकर रह गया, क्योंकि वहाँ उसके बहुत से साथी थे।

दाँत से दाँत बजना—बहुत जाड़ा पड़ना, सरदी के कारण काँपने से दाँत पर दाँत पड़ना। पूस के दिन थे, सवेरे का समय था, दाँत से दाँत बज रहे थे, पर हम आगे ही बढ़ते जा रहे थे।

दाँव चूकना—अच्छे अवसर को हाथ से जाने देना, किसी कार्य-साधन के लिए अनुकूल समय पाकर भी कुछ न कर सकना। तुम एक बार तो दाँव चूक चुके, अब देखें क्या करते हो।

दाँव ताकना—अवसर की ताक में रहना, मौका ढूँढना। मैं कोई अच्छा दाँव ताक रहा हूँ जिससे लाहौर में ही अपना कोई ठिकाना बना सकूँ।

दाई से पेट छिपाना—जाननेवाले से भी कोई बात छिपाना, ऐसे मनुष्य से कोई बात छिपाना जो सब रहस्य जानता हो। हज़रत लगे थे हम से ही बात छिपाने, जानते नहीं, हम तो उनकी शक्ल सूरत से ही उन के दिल की बात भाँप लेते हैं, भला कहीं दाई से भी पेट छिपता है ?

दाना पानी—जीविका, रहने का संयोग। जहाँ का दाना-पानी होगा, वहीं जायँगे।

दाना-पानी छूटना खाना-पीना छूट जाना। जब से उसे चोट लगी है तब से उसका दाना-पानी छूट गया है।

दाने दाने को तरसना—भोजन न मिलना, अन्न का कष्ट सहना। एक ओर अँगरेज महाप्रभु चैन की वंशी बजाते हैं, दूसरी ओर ग़रीब भारतवासी दाने-दाने को तरसते हैं।

दाल में कुछ काला—कुछ खटके या संदेह की बात होना। दाल में कुछ काला ज़रूर है, नहीं तो नई मशीन के बदले तुम पुरानी मशीन क्यों लेना चाहते ?

दाल-रोटी चलना—साधारण खाना मिलना, जीविका निर्वाह होना हमारी तो केवल दाल-रोटी चलती जाय, फिर हमें किसी की फिक्र नहीं।

दाल न गलना—वश न चलना। चाहे कुछ करो यहाँ तुम्हारी दाल न गलेगी।

दाहिना हाथ—बड़ा भारी सहायक। मानसिंह अकबर के दाहिने हाथ थे।

दाहिने होना—अनुकूल होना। 'राम भये जेहि दाहिने, सबै दाहिने ताहि।''

दिन को दिन और रात को रात न जानना या समझना — अपने सुख या विश्राम आदि का कुछ भी ध्यान न रखना । महासभा के इस अधिवेशन को सफल बनाने के लिए हम ने दिन को दिन और और रात को रात न समझा ।

दिनदहाड़े—बिलकुल दिन के समय जब कि सब लोग जागते और देखते हों । दिन दहाड़े उनके यहाँ दस हज़ार की चोरी हो गई ।

दिन दूना रात चौगुना होना या बढ़ना—खूब उन्नति होना । आज कल तुम्हारा कारोबार तो दिन दूना रात चौगुना हो रहा है ।

दिन आना या दिन पूरे होना—अंतिम समय आना । तुम्हारे तो अब दिन आ गये हैं (दिन पूरे हो गये हैं), अब काम-धंधा बच्चों को क्यों नहीं सौंपते ?

दिन काटना—समय बिताना । किसी-न-किसी तरह यहाँ अपने दिन काट रहे हैं ।

दिन फिरना—बुरे दिनों के बाद अच्छे दिन आना । कभी भारत-वासियों के दिन भी फिरेंगे और वे भी अपने देश में स्वतन्त्र होकर रह सकेंगे ।

दिन भारी होना—बड़ी कठिनता से समय बीतना । प्रियतम के बिना मुझे ये दिन भारी हो गये हैं ।

दिमाग खाना या चाटना—व्यर्थ की बात कहना जिससे किसी के सिर में दर्द होने लगे । आज-कल वह रोज़ सवेरे आकर हमारा दिमाग चाटते (खाते) हैं ।

दिमाग खाली करना—मगज़पच्ची करना । उन्हें सब बातें समझाने के लिए हमें घंटों दिमाग खाली करना पड़ा ।

दिमाग चढ़ना या सातवें आसमान पर होना—बहुत अधिक घमंड होना । उनका दिमाग तो आज-कल बहुत चढ़ा हुआ है । या सातवें आसमान पर चढ़ा नज़र आता है ।

दिमाग लड़ाना—बहुत सोचना। बहुतेरा दिमाग लड़ाया, पर कुछ समझ में नहीं आता।

दिल का गवाही देना—मन को किसी बात की संभावना या औचित्य का निश्चय होना। हमारा दिल गवाही देता है कि उस ने यह चोरी नहीं की।

दिल की दिल में रह जाना—आशाएँ पूरी न होना। "उनके आए न बोल पाए, दिल की दिल में रह गई।"

दिल को लगाना—हृदय पर पूरा या गहरा प्रभाव पड़ना। उन की बातें हमारे दिल को लग गईं।

दिल जमना—(१) किसी काम में चित्त लगना, (२) रुचि के अनुकूल होना। तुम्हारा दिल तो जमता ही नहीं, तुम काम कैसे करोगे? जिस चीज़ पर दिल ही नहीं जमता उसे लेकर क्या करेंगे?

दिल तड़पना—चित्त का यों ही, विशेषतः किसी के प्रेम में, बहुत व्याकुल होना। 'दिल तड़प कर रह गया जब याद आई आप की।'

दिल देखना—जी की थाह लेना, किसी के मन की परीक्षा करना। हमें रुपयों की ज़रूरत नहीं है, हम तो खाली आपका दिल देखते थे।

दिल भर जाना—और इच्छाएँ न रहना। अब इन भोगविलासों से हमारा दिल भर गया है।

दिल मिलना—एक दूसरे के अनुकूल होना। पति पत्नी का दिल न मिला तो दांपत्य जीवन दुःखमय है।

दिल में घर करना—मन में स्थान करना। जब से मैंने उन को देखा है तब से उनकी मूर्ति ने मेरे दिल में घर कर लिया है।

दिल चीर कर देखना—दिल का हाल मालूम करना। मेरा दिल चीर कर देखो तो तुम्हें पता लगे कि मैं तुम्हें कितना प्रेम करता हूँ।

इसके अतिरिक्त 'कलेजा पत्थर का होना' इत्यादि कलेजे के

मुहावरों में तथा 'जी उचटना' आदि प्रायः 'जी' के सब मुहावरों में 'कलेजा' और 'जी' के स्थान में 'दिल' शब्द का भी प्रयोग किया जाता है, ऐसे ही 'दिल' के मुहावरों में 'कलेजा' और 'जी' का।

दिल मैला करना—पहले का-सा विश्वास न रहना। धन का लेन-देन घनिष्ठ-से-घनिष्ट मित्र का भी दिल मैला कर देता है।

दीन-दुनियाँ को भूल जाना—बिलकुल बे-खबर हो जाना। जब से उनकी शादी हुई है तब से वे दीन-दुनियाँ को भूल गये हैं।

दीया लेकर ढूँढना—बड़ी छानबीन से खोजना। अगर तुम दीया लेकर भी ढूँढो, तब भी तुम्हें उन जैसा सज्जन यहाँ न मिलेगा।

दुकान लगाना—(१) दुकान का असबाब फैलाकर यथा-स्थान बिक्री के लिए रखना। (२) बहुत-सी चीज़ों को इधर उधर फैलाकर रख देना। ज़रा ठहरो, दुकान लगा लें, तो दें। वह लड़का जहाँ बैठता है, वहीं दुकान लगा लेता है।

दुकान बढ़ाना—दुकान बंद करना। वे रात को आठ बजे दुकान बढ़ाते हैं।

दुकान आदि के समेटने में तथा दीया बुझाने इत्यादि में 'बढ़ाना' क्रिया का ही प्रयोग किया जाता है, 'बंद करना' या 'बुझाना' प्रायः अशुभ-सूचक समझा जाता।

दुखड़ा रोना—अपने दुःख का हाल सुनाना। वे दिन-भर यहाँ बैठे अपने ही दुखड़े रोते रहे।

दुटूक बात—थोड़े में कही हुई साफ़-साफ़ बात। हम तो दुटूक बात कहते हैं, चाहे बुरी लगे चाहे भली।

दुनियाँ की हवा लगना—जग व्यवहार का परिचय होना। अभी बच्चा है, अभी दुनियाँ की हवा नहीं लगी।

दुनियाँ-भर का—बहुत या बहुत अधिक। ये दुनियाँ भर के

झूठे हैं, इनका इतबार न करना। दुनियाँ-भर का सामान साथ ले जाकर क्या करोगे ?

दुनियाँ से चल बसना या उठ जाना—मर जाना। बड़े-बड़े इस दुनियाँ से चल बसे।

दुम दबा कर भाग जाना—डर के मारे भागना। ज्यों ही उसने सुना कि पुलिस आ रही है त्यों ही वह दुम दबा कर भागा।

दुह लेना—धन हर लेना, सार खींच लेना। अँगरेज़ भारत को अच्छी तरह दुह चुके हैं, पर अब भी उनकी तृप्ति नहीं होती।

दूज का चाँद होना—बहुत दिनों बाद दिखाई पड़ना, कभी कभी दिखाई देना। आज-कल तो तुम दूज के चाँद हो गये हो।

दूध के दाँत न टूटना—ज्ञान और अनुभव न होना। अभी तक उसके दूध के दाँत भी नहीं टूटे, वह उनके सामने क्या बात करेगा ?

दूर की बात—कठिन काम। तुम तो यह नहीं बता सकते कि दो और दो कितने होते हैं, इतनी बड़ी रक़म का मीज़ान करना तो दूर की बात है।

दूर रहना या भागना—बहुत बचना, पास न जाना, कोई संबन्ध न रखना। हम तो ऐसे लोगों से सदा दूर भागते हैं। ऐसी बातों से ज़रा दूर रहा करो।

देखते रह जाना—हक्का-बक्का रह जाना। आते ही उसने उसे इतनी जल्दी मारना शुरू कर दिया कि मैं तो देखता ही रह गया।

देखना-सुनना—जानना-बूझना, पता लगाना। बिना देखे-सुने किसी के विषय में कोई क्या कह सकता है ?

दो कौड़ी का आदमी—तुच्छ आदमी। इन दो कौड़ी के आदमियों का साथ अच्छा नहीं होता।

दो दिन का मेहमान—जल्दी मरने वाला। उनके बचने की कोई उम्मेद नहीं, वे तो अब दो दिन के मेहमान हैं।

दो नावों पर पैर रखना—दो विभिन्न पक्षों का अवलंबन करना, दो पदार्थों का आश्रय लेना । तुम तो दो नावों पर पैर रखते हो, याद रक्खो कभी बुरी तरह गिरोगे ।

दौड़ धूप करना—कड़ा परिश्रम करना । बड़ी दौड़-धूप की, पर कहीं नौकरी न मिली ।

धज्जियाँ उड़ाना—किसी के दोषों को खूब उधेड़ना, दुर्गति करना । शास्त्री जी ने समालोचना करते हुए महामहोपाध्यायजी की वह धज्जियाँ उड़ाईं कि सारी उमर याद रक्खेंगे ।

धता बताना—चलता करना, बहाना बनाकर टालना । अभी उसको धता बताओ, पीछे देखा जायगा ।

धर दबाना—पकड़ कर ज़मीन पर दे मारना । उसने गाली का जवाब गाली में तो न दिया, वरन् उसे पकड़ कर धर दबाया और दो-चार चपत जमा दिये ।

धाक जमना—रोब छा जाना । थोड़े ही दिनों में उनका लाखों का लेन-देन होने लगा, नगर में उनकी धाक जम गई ।

धुन का पक्का—वह आदमी जो आरंभ किये हुए काम को बिना पूरा किये न छोड़े । युधिष्ठिर अपनी धुन का पक्का है, निश्चिन्त रहो वह अपने काम में ज़रूर सफल होगा ।

धूप में बाल सफ़ेद करना—बिना अनुभव प्राप्त किये आयु बिता देना । बेटा निःसंदेह तुम बुद्धिमान् हो, पर मैंने भी धूप में बाल सफ़ेद नहीं किये, जो मैं कहती हूँ उसे सोचो ।

धोखे की टट्टी—भ्रम में डालने वाली चीज़, ऐसी वस्तु जिस में कुछ तत्त्व न हो । यह आश्रम और पाठशाला निरी धोखे की टट्टी हैं, उन्हें तो खाली खाने के लिए हलवा-पूरी चाहिए ।

धोती ढीली होना—डर जाना । पुलिस के सिपाहियों को देखते ही लालाजी की धोती ढीली हो गई ।

न इधर का रहा, न उधर का—(१) किसी काम का न रहना। (२) दो बातों में से किसी एक का भी पूरा न होना। इतना पढ़ लिख कर भी न उधर के हुए न इधर के। वह दोनों जगह हाथ मारना चाहते थे, पर अन्त में न इधर के हुए न उधर के।

नज़र करना—(१) देखना, (२) भेंट करना। जब मैंने अपने माल पर नज़र की, तब मुझे पता लगा कि मेरा कितना माल चोरी जा चुका था। यह साड़ी मैं आपकी नज़र करता हूँ।

नज़र दौड़ाना—चारों तरफ देखना। ज़रा नज़र दौड़ाओ कहीं पानी दिखाई देता है कि नहीं?

नज़र हो जाना—(१) कृपा हो जाना, (२) भेंट हो जाना। एक बार आपकी नज़र हो जाने से मेरा काम बन जायगा। ये सब क़ीमती कपड़े देवी जी की नज़र हो चुके हैं।

नज़र लगना—बुरी दृष्टि का प्रभाव होना। बच्चे को किसी की नज़र लग गई है, तभी तो दिन-प्रतिदिन सूखता चला जाता है।

नमक खाना—किसी का दिया खाना। आपने पाँच बरस तक उनका नमक खाया है, आज अगर उन्होंने आपको दो बातें कह दीं तो क्या गज़ब हो गया!

न तीन में न तेरह में—जो किसी गिनती में न हो, जिसे कोई पूछता न हो। अरे पूछना हो तो बड़ी भावज से पूछो, हमें क्या पूछते हो, हम न तीन में न तेरह में।

नमक-मिर्च लगाना—तुच्छ सी बात को बढ़ा कर वर्णन करना। देखो न, अखबार वाले ज़रा-सी बात को नमक-मिर्च लगाकर क्या से क्या बना देते हैं?

नस-नस में—सारे शरीर में। इसकी नस-नस में शरारत भरी हुई है।

नया गुल खिलना—अनोखी घटना घटना। आप जब तक यहाँ रहेंगे कोई न कोई नया गुल खिलता ही रहेगा।

नाक कटना—बदनामी होना। इस विधवा कन्या का विवाह तो कर दें, पर बिरादरी में नाक कट जायगी, यही डर है।

नाक की सीध में—ठीक सामने, बिना, इधर-उधर मुड़े। नाक की सीध में चले जाओ, आगे पंडितजी का मकान मिल जायगा।

नाक-भौं चढ़ाना या सिकोड़ना—घृणा प्रकाशित करना, अरुचि और अप्रसन्नता प्रकट करना। मैं मांस खाता तो नहीं पर तुम्हारी तरह उसे देखते ही नाक-भौं भी नहीं चढ़ाने लग जाता। हमारा तो उन से बोलने को जी नहीं चाहता, हर समय नाक-भौं चढ़ाये रखते हैं।

नाक पर मक्खी न बैठने देना—(१) ज़रासा एहसान भी न उठाना। (२) अपने पर थोड़ी भी आँच न आने देना, ज़रा-सा दाग न लगने देना। गोसाईं जी तो नाक पर मक्खी नहीं बैठने देते, अपने आप में मस्त रहते हैं। "मैंने कभी नाक पर मक्खी नहीं बैठने दी, बड़े-बड़े साहब बहादुरों से लड़ पड़ता था।" हमने उससे गहनों की चोरी के बारे में बहुत पूछा पर वह साफ जवाब देती गई, उसने नाक पर मक्खी भी न बैठने दी।

नाक में दम करना—दिक करना। पकेगी तो मिलेगी न! भूख भूख करके नाक में दम कर दिया है।

नाक रख लेना—इज़्ज़त रख लेना। आपने १०००) उधार देकर मेरी नाक रख ली, नहीं तो आज मेरा दीवाला बोल जाता।

नाक रगड़ना—बड़ी दीनता से प्रार्थना करना। पेट की खातिर यों नाक रगड़ते फिरते हो, धिक्कार है।

नाकों चने चबवाना—खूब तंग करना, हैरान करना। शिवाजी ने शाइस्ताखाँ को नाकों चने चबवाए। आया है हमसे लड़ने, सुसरे को ऐसे नाकों चने चबवाऊँगा कि छटी का दूध याद आ जायगा।

नाच नचाना—जो चाहना सो करा लेना। ओ मोहनलाल तो बहुत सीधे आदमी हैं, वे देवी जी हो जिस तरह चाहती हैं नाच नचाती हैं।

नादिरशाही—सख्त अंधेर या अत्याचार। आज-कल पंजाब-सरकार नित नया नादिरशाही हुक्म जारी कर रही है।

नानी याद आना या मर जाना—कष्ट में पड़ कर पिछले समय की याद आना, होश ठिकाने हो जाना, प्राण सूख जाना। जी हाँ, देखने में तो छोटी-सी पहाड़ी है, पर चढ़ते समय नानी याद आती है। पुलिसवालों को देखते ही हरिमोहन की नानी मर गई।

नाम उठ जाना—नाम न रह जाना, चिह्न मिट जाना। उस का तो नाम ही संसार से उठ जायगा।

नाम कमाना—प्रसिद्धि प्राप्त करना। लड़ाई में उसने खूब नाम कमाया है।

नाम करना—(१) यश प्राप्त करना, (२) कोई बात पूरी तरह से न करना, कहने भर के लिए थोड़ा सा करना, (३) अपना दोष दूसरे के सिर मढ़ना। थोड़े ही दिनों में हिन्दी भवन प्रेस ने सुंदर छपाई में अपना नाम कर लिया है। पढ़ते क्या हैं नाम करते हैं। आप खाकर दूसरे का नाम करता है।

नाम का—(१) नामधारी, (२) कहने-सुनने भर को, उपयोग के लिए नहीं। इस नाम का यहाँ कोई आदमी नहीं है। वे नाम के मंत्री हैं काम तो और ही करते हैं।

नाम को भी नहीं—ज़रा सा भी नहीं, अणु-मात्र भी नहीं। घर में नाम को भी नमक नहीं है।

नाम चलना—यादगार बनी रहना। अच्छी संतान से कुल का नाम चलता है।

नाम न लेना—दूर रहना, बचना, घृणा आदि के कारण चर्चा तक न करना। उस ने मुझे बहुत दिक किया है, अब उसका कभी नाम भी न लूँगा। अब वह यहाँ आने का नाम तक नहीं लेता।

नाम पर धब्बा लगाना, नाम बदनाम करना या डुबाना—

यश और कीर्त्ति का नाश करना । क्यों ऐसा करके बड़ों के नाम पर धब्बा लगाते हो ? इस तरह की हरकतों से अपने बड़ों के नाम को डुबाओगे।

नाम पर बैठना—किसी के ऊपर यह विश्वास कर धैर्य धारण करना या उद्योग छोड़ देना कि जो कुछ उसे करना होगा, करेगा । हम तो ईश्वर के नाम पर बैठे रहते हैं, जो कुछ होना होगा सो होगा ।

• **नाम बाकी रहना**—(१) मरने या कहीं चले जाने पर भी कीर्त्ति का बना रहना, (२) केवल नाम-ही-नाम रह जाना और कुछ न रहना। संसार में उन लोगों का ही नाम बाकी रहता है, जो देश या धर्म पर अपने को बलि चढ़ा देते हैं। सिर्फ नाम बाकी रह गया है, कुछ जायदाद उनके पास नहीं है ।

नाम बिकना—नाम प्रसिद्ध हो जाने के कारण किसी वस्तु का आदर होना। आज-कल खाली फ्लेक्स का नाम बिकता है, नहीं तो इन बूटों का चमड़ा उससे कहीं अच्छा है ।

नाम मिटना—नाम जाता रहना, स्मारक या कीर्त्ति का लोप हो जाना, नाम तक शेष न रहना। जब तक गुलामी की प्रथा का भारत से नाम न मिट जायगा तब तक हम आराम न करेंगे ।

नाम रखना—(१) नाम निश्चित करना, (२) कीर्त्ति सुरक्षित रखना । इस लड़के का क्या नाम रक्खा है ? यह लड़का अपने बाप का नाम रक्खेगा ।

नाम लगना या होना—किसी अपराध के सम्बन्ध में नाम लिया जाना, कलंक मढ़ा जाना । किया किसी ने और नाम लगा हमारा। बुराई कोई करे और नाम हो हमारा ।

नाम से—(१) चर्चा से, (२) सम्बन्ध बता कर, नाम लेकर, जिम्मेदारी बता कर, (३) किसी को हक़दार या मालिक बनाकर, (४) नाम लेते ही। मुझे तो उनके नाम से चिढ़ है। जितना रुपया

चाहिये मेरे नाम से ले लेना। वह लड़के के नाम से जायदाद ख़रीद रहा है। उस के नाम से ही वह काँपता है।

नाम-ही-नाम रह जाना—पुरानी बातों के कारण लोगों में प्रसिद्धि-मात्र रह जाना, पर उन बातों का न रहना। नाम-ही-नाम रह गया है अब उनके पास कुछ है नहीं। "पुरु दधीचि कोऊ अब नाहीं, रहे नाम ही ग्रंथन माँही।"

निन्यानवें के फेर में पड़ना—रुपया जोड़ने की चिन्ता में पड़ना, लालच में फँसना। अब तो ये निन्यानवें के फेर में पड़ गये हैं, अब इन्हें न तो समाज जाने की फ़ुरसत है और न आराम-चैन की।

नींद हराम करना या होना—(१) व्यर्थ जागना, (२) सोने न देना, (३) सोने की नौबत न आना। हुँ, सिनेमा देखो, गिरह से पैसे खर्चो और नींद जुदा हराम करो। मारे शोर के तुम ने तो सब की नींद हराम कर दी है। जब से महासभा का काम अपने सिर लिया है, तब से नींद भी हराम हो गई है।

नीचा दिखाना—हराना, घमंड तोड़ना। अकबर ने दिल में यह ठान ली कि प्रताप को किसी न किसी प्रकार नीचा दिखाऊँगा।

नीयत डिगना, डाँवाडोल होना या बदल जाना—अच्छा संकल्प स्थिर न रहना। रुपये का नाम सुनते ही तुम्हारी भी नीयत डाँवाडोल हो गई। किसी की नीयत बदलते क्या देर लगती है!

नीला पीला होना—गुस्से में आना। उस ने कहा—क्या हुआ जो आप इतने नीले-पीले हो रहे हैं?

नींव डालना—(१) आरम्भ करना, (२) बुनियाद डालना। इस सारे झगड़े की नींव तुम ही ने डाली। क्लाइव ने भारत में अंगरेज़ी राज्य की नींव डाली।

नुकताचीनी करना—छिद्रान्वेषण करना, दोष निकालना। तुम तो खाली नुकताचीनी करना ही जानते हो।

नौ-दो ग्यारह होना—एक दम चंपत हो जाना, देखते-देखते भाग जाना। "मौका पाते ही गीदड़ वहाँ से नौ-दो ग्यारह हुआ।"

नौबत बजाना—(१) दबदबा दिखाना, (२) आनंद उत्सव करना। "कबिरा नौबत आपनी दिन दस लेहु बजाय।"

पगड़ी उछालना—बेइज़्ज़ती करना। दूसरे के बाप-दादा की पगड़ी उछालना कहाँ की सुजनता है?

पगड़ी रखना—(१) मान रखना, इज़्ज़त बचाना, (२) बिनती करना, गिड़गिड़ाना। उस मौके पर ५०) रु० देकर आपने मेरी पगड़ी रख ली। आपके पैरों पर पगड़ी रखता हूँ, इस अवसर पर मेरी रक्षा कीजिये।

पट पड़ना—(१) कुश्ती में नीचे के पहलवान का पेट के बल पड़कर मिट्टी थामना, (२) मंदा पड़ना। आज-कल सब रोज़गार पट पड़ गये हैं।

पट्टी पढ़ाना—बुरी सलाह देना। मंथरा कैकेयी को पट्टी न पढ़ाती तो राम को वन न जाना पड़ता।

पतलून से बाहर होना—क्रोध में भर जाना। मैंने तो बाबू साहब से यही कहा था—'पाँच आने सेर लेने हैं तो ले लो नहीं तो अपनी राह लो', पर ये खामखा पतलून से बाहर हो रहे हैं।

पते की कहना—रहस्य की बात कहना, चुभती हुई कहना। तुमने उस समय खूब पते की कही, सुनते ही उनके मुँह फक हो गये।

पत्थर की लकीर—दृढ़। "रामचन्द्र जो एक बार कह दे, उसे बस पत्थर की लकीर समझो।"

पत्थर का कलेजा—अत्यन्त कठोर हृदय, वह हृदय जिसमें दया और करुणा बिलकुल न हो। तुम्हारा भी कैसा पत्थर का कलेजा है, बेचारे की रोते-रोते हिचकी बँध गई पर तुम्हें दया न आई। सीता का विलाप सुन कर पत्थर का कलेजा भी पानी हो जाता था।

परछाईं से डरना या भागना—बहुत डरना, पास तक रहने से डरना, किसी तरह का सम्बन्ध न रखना। हम तो उन जैसे बदमाशों की परछाईं से भी दूर भागते हैं।

परदा होना—(१) स्त्रियों को पुरुषों के सामने न होने देने का नियम होना। (२) छिपाव होना। बिहार में सख्त परदा है। तुमसे क्या परदा है तुम तो सब हाल जानते ही हो।

परदा डालना—किसी बात को छिपाना। जाने दो, इन बातों पर अब परदा डाल दो, इनका बाहर न निकलना ही अच्छा है।

पलक लगना—नींद आना, झपकी लगना। आज तीन दिन से एक क्षण के लिए भी पलक नहीं लगी।

पल्ला झुकना या भारी होना—पक्ष बलवान होना। अभी तक तो उसका ही पल्ला भारी है, देखें अंत में किस की जीत होती है!

पल्ला छुड़ाना—खलासी पाना, छुटकारा पाना। अभी तो उससे यह कह कर पल्ला छुड़ाया है कि फिर मिलूँगा।

पसीना पसीना होना—परिश्रम से अधिक थक जाना। मैं सवेरे से काम करते-करते पसीना-पसीना होगया हूँ, तुम और भी काम बढ़ाते जाते हो।

पहाड़ टूट पड़ना—भारी विपत्ति आना। बैठे-बिठाये बेचारे पर पहाड़ टूट पड़ा।

पाँचों (उँगलियाँ) घी में होना—खूब लाभ होना। आज-कल तो उनकी पाँचों (उँगलियाँ) घी में हैं।

पाँव (या पैर) उखड़ जाना—हार कर भाग निकलना। मैदान छोड़ भागना। अर्जुन ने बाणों की ऐसी बौछार की कि कुछ ही देर में कौरव-सेना के पाँव उखड़ गये। "सदाशिवराव के गिरते ही मराठों की सेना के पैर उखड़ गये।"

पाँव ज़मीन पर न टिकना—घमंड करना। आज चार पैसे होगये हैं तो उनके पाँव ज़मीन पर नहीं टिकते।

पाँव धोकर पीना—अत्यन्त आदर से पूजा करना। यदि वे सचमुच वैसे ही महात्मा होते, तो आज जनता उनके पाँव धोकर पीती।

पाँव में बेड़ी पड़ना—स्वतन्त्रता नष्ट हो जाना, गृहस्थी में फँसना। जब तक पाँव में बेड़ी नहीं पड़ती तब तक तुम दिन-रात घूम लो।

पाखाना निकलना—भय के मारे बुरा हाल होना। साहब को देखते ही इनका पाखाना निकलता है।

पानी का बुलबुला—क्षणभंगुर, जल्दी ही नाश होने वाला। यह मानव-जीवन पानी का बुलबुला है। "पानी केरा बुदबुदा अस मानुष की जात।"

पानी की तरह बहाना—उदारता से खर्च करना। लड़की की शादी पर उसने धन पानी की तरह बहाया।

पानी के मोल—बहुत सस्ता। अजो भाव क्या पूछते हो, अब तो घी पानी के मोल मिल रहा है।

पानी-पानी होना—लज्जा से सिर नीचा होना। वह इस बात को सुनकर पानी-पानी हो गया।

पानी पी-पीकर कोसना—हर समय गाली देते रहना। जब देखो तब वे उन्हें पानी पी-पीकर कोसते रहते हैं।

पानी फिर जाना—बरबाद हो जाना। थोड़ी सी असावधानी के कारण सौ रुपये पर पानी फिर गया।

पानी फेर देना—बिगाड़ देना। "तुमने तो सब किये कराये पर पानी फेर दिया।"

पानी भरना—अत्यन्त तुच्छ प्रतीत होना। "चूना उसका ऐसा सफेद, साफ और चमकदार है कि संगमरमर भी उसके सामने पानी भरे।"

पानी में फेंकना—बरबाद करना। मशीन क्या खरीदी है रुपये पानी में फेंके हैं।

पाप कटना—झगड़ा दूर होना, जंजाल छूटना। वह आप ही यहाँ से चला गया—अच्छा हुआ, पाप कटा। सौ रुपये गये तो क्या, पाप तो कटा।

पाप मोल लेना—जान बूझ कर किसी बखेड़े के काम में फँसना। तुमने नाहक ही यह पाप मोल लिया है, अब इससे छुटकारा पाना भी मुश्किल हो गया है।

पापड़ बेलना—(१) दुःखमय जीवन बिताना, (२) नाना प्रकार के धंधों का अनुभव प्राप्त करना। यों पापड़ बेलते ही सारी उमर बीत गई है, जरा भी सुख नहीं देखा। इसने भी सब पापड़ बेले हुए हैं।

पार लगाना—पूरा करना। किसी प्रकार इस काम को पार लगाओ।

पार पाना—(१) अंत पाना, (२) किसी के विरुद्ध सफलता प्राप्त होना। 'शेष शारदा सहस श्रुति कहत न पावें पार।'' वह बड़ा चालाक है, तुम उससे पार नहीं पा सकते।

पाला पड़ना—काम पड़ना। सवेरे ही सवेरे किस मूज़ी से पाला पड़ा है?

पास न फटकने देना—पास न आने देना। उस दुष्ट से मित्रता! मैं तो उसे पास भी नहीं फटकने देता।

पिंड छूटना—पीछा छूटना, छुटकारा पाना। इस पाप से पिंड छूटे, तो मैं मसूरी जा सकूँ।

पीछे पड़ना—(१) किसी काम को कर डालने पर तुल जाना (२) कोई काम करने के लिए बार-बार कहना (३) बार-बार किसी को हानि पहुँचाने के लिए मौका ढूँढते रहना। ये तो आज-कल हिन्दी की परीक्षाओं को पास करने के पीछे पड़े हैं। यह काम मुझ से न होगा, तुम फ़िज़ूल मेरे पीछे न पड़ो। बरसों से यह दुष्ट न-जाने क्यों मेरे पीछे पड़ा है?

पीठ ठोंकना या पीठ पर हाथ फेरना—उत्साह बढ़ाना। राम ने हनुमान की पीठ ठोंकी और कहा—"मुझे विश्वास है कि तुम इस कार्य को सिद्ध कर सकोगे।"

पीठ पर होना—सहायक होना। यदि आज कोई तुम्हारी तरह मेरी भी पीठ पर होता तो मैं यों दर-दर मारा-मारा न फिरता।

पीठ दिखाना—लड़ाई से भाग जाना। राजपूत रणभूमि से पीठ नहीं दिखाते, जान भले ही चली जाय।

पीठ पीछे—परोक्ष में, गैरहाज़िरी में। पीठ पीछे किसी की निन्दा करना ठीक नहीं।

पीठ फेरना—(१) भाग जाना, पीठ दिखाना (२) किसी की ओर पीठ कर देना, मुँह फेर देना (३) उपेक्षा सूचित करना। रणभूमि से पीठ फेरते तुम्हें शर्म नहीं आई। हमारे आते ही रानी साहिबा ने पीठ क्यों फेर ली। रावण को देखते ही सीता ने पीठ फेर ली।

पुराना घाघ—बहुत दिनों का अनुभवी, काइयाँ। वह पुराना घाघ है, उससे पार पाना कठिन है।

पुल बाँधना—बहुत बढ़ा कर कहना। तुम तो उसकी प्रशंसा के पुल बाँध देते हो।

पूरा पड़ना—सामग्री न घटना। यह आटा क्या सब को पूरा पड़ जायगा।

पेच घुमाना—तरकीब से किसी का मन फेरना। वह तो मेरी सहायता करने को तैयार था, पर न जाने तुमने क्या पेच घुमा दिया है कि वह अब सीधे मुँह बात नहीं करता।

पेट काटना—जान बूझ कर कम खाना जिसमें कुछ बचत हो जाय। मैंने अपना पेट काट-काट कर इनको पढ़ाया है।

पेट का पानी न पचना—कहे बिना रहा न जाना। बिना सब हाल कहे इसके पेट का पानी न पचेगा।

पेट की आग—भूख । "आगि बड़वागि तें बड़ी है आगि पेट की ।" पेट की आग बुझाने में ही सब दिन बीत जाता है ।

पेट भर कर—इच्छानुसार, मनमाना । पेट भर कर खेल लो ।

पेट में चूहे दौड़ना—खूब भूख लगना । तुम्हें कहानी सुनने की पड़ी है, मेरे पेट में चूहे दौड़ रहे हैं, पहले कुछ खाने को तो दो ।

पेट में दाढ़ी होना—चालाक होना, बचपन में ही बहुत बुद्धिमान होना । अजी, शशि को भोला-भाला बच्चा न समझना, उसके पेट में दाढ़ी है ।

पेट में बात न पचना—कोई बात गुप्त न रख सकना । औरतों के पेट में कोई बात नहीं पच सकती ।

पैर जमाना—स्थिर होकर रहना । पहले तुम यहाँ अपने पैर तो जमा लो, तब दूसरों की फिक्र करना ।

पैरों तले से ज़मीन निकल जाना—होश उड़ जाना, सन्नाटे में आ जाना । रमेश ने रुपये निकालने के लिए सन्दूक में हाथ डाला ही था कि ऊपर से उसके पिता आगये, उन्हें देखते ही उसके पैरों तले से ज़मीन निकल गई ।

पोल खोलना—गुप्त बातें प्रकट कर देना । उस सरकारी गवाह ने अपने दल की सारी पोल खोल दी ।

पौने सोलह आने—अधिकांश में, प्रायः । उसकी बातें पौने सोलह आने ठीक निकलीं ।

पौ फटना—सवेरे का उजाला दिखाई देना । पौ फटते ही पक्षी अपने घोंसलों को छोड़ देते हैं ।

पौ बारह होना—खूब लाभ होना । आपको क्या घाटा, आप के तो सदा पौ बारह हैं ।

प्राण उड़ जाना या प्राण निकलना—होश-हवास जाते रहना बहुत घबराहट हो जाना । बेटे को फाँसी की सज़ा सुनते ही माता के प्राण उड़ गये ।

प्राण मुँह को आना—बहुत अधिक हार्दिक कष्ट होना। "हाय, हाय इसकी बातों से तो प्राण मुँह को आते हैं और मालूम होता है कि संसार उलटा जाता है।"

प्राण लेकर भागना—एकदम भाग जाना। गोली का शब्द सुनते ही चोर प्राण लेकर भागे।

प्राण हथेली पर लिये रहना—जीवन को कुछ न समझना, प्राण देने पर उतारू होना। इधर अगणित मुसलमान सेना खड़ी थी, उधर चंद बहादुर राजपूत अपने प्राण हथेली पर लिये लड़ाई के मैदान में आ जुटे।

प्राणों पर आ पड़ना या बीतना—जीवन संकट में पड़ना। बड़ी कठिनाई आ पड़ना। मेरे तो प्राणों पर आ पड़ी है और तुम्हें हँसी सूझ रही है। हमारे प्राणों पर जो बीत रही है उसे हम ही जानते हैं।

इन मुहावरों के अतिरिक्त 'जान देना' या 'जान पर खेलना' आदि 'जान' के मुहावरों में 'जान' के स्थान पर 'प्राण' शब्द का तथा 'प्राण' के मुहावरों में 'जान' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

फटा जाना—बहुत दर्द होना। ऐसा दर्द है कि सिर फटा जा रहा है।

फड़क उठना—उमंग में होना, आनन्दित होना। भूषण की कविता सुनकर शिवाजी फड़क उठे।

फल पाना—अपने किये का बदला मिलना। जैसा करोगे वैसा फल पाओगे।

फलना फूलना—धनवान और भाग्यवान होना। तुम सदा फलो-फूलो, यही हमारा आशीर्वाद है।

फुस-फुस करना—धीरे धीरे गुप्त मंत्रण करना। तुम मियाँ-बीबी सारा दिन बैठे-बैठे फुस-फुस करते रहते हो, फिर हम यहाँ कैसे रहें?

फूँक देना—बहकाना, कान भरना। न जाने भाभी ने आते ही क्या फूँक दिया है कि भैया भी हमारे दुश्मन हो गये हैं।

फूँक-फूँक कर कदम रखना—सोच समझ कर काम करना। आज कल का ज़माना बड़ा नाज़ुक है, खूब फूँक-फूँक कर कदम रखना चाहिए।

फूट फूट कर रोना—बहुत रोना। यह बच्चा फूट-फूट कर रो रहा है, मालूम होता है भीड़ में माता से बिछुड़ गया है।

फूटी आँखों न भाना—सर्वथा अच्छा न लगना। वही कैकेयी अब किसी को फूटी आँखों न भाती थी।

फूल जाना—(१) नाराज हो जाना, (२) बहुत प्रसन्न हो जाना। तुम क्यों छोटी-छोटी बातों पर फूल जाती हो? ज़रा उन्होंने खुशामद की तो तुम फूल गये।

फूल झड़ना—मुँह से प्रिय और मधुर बातें निकालना। आप जब बोलती हैं तो मानों फूल झड़ते हैं।

फूल सूँघ कर रहना—बहुत कम खाना। भैया समझते हैं कि भाभी तो फूल सूँघ कर रहती हैं, यह सारा आटा तो हम ही डकार जाती हैं।

फूला न समाना—अत्यन्त आनन्दित होना। जब से तुम आ गये हो, वे फूली नहीं समातीं।

फेर में डालना—असमंजस में डालना, किंकर्तव्य-विमूढ़ करना। तुम ने तो हमें बड़े फेर में डाल दिया था।

फेर में पड़ना या आना—झंझट में फँसना, धोखा खाना। तुम यहाँ किस फेर में पड़ गये हो? हम भी सौ रुपये के फेर में आ गये।

फोकट का—बिना परिश्रम का, बिना मूल्य का, मुफ्त। क्या यह फोकट का है जो यों ही दे दें?

बंदर-घुड़की या भबकी—ऐसी धमकी जिसका कोई भी प्रभाव न हो। तुम्हारी इन बंदर-भबकियों से यहाँ कौन डरता है?

बगुला भगत—कपटी धूर्त्त। इन गेरुए कपड़े पहनने वाले साधुओं में सौ में से निन्यानवे बगुला भगत हैं।

बगलें झाँकना—निरुत्तर हो जाना, बचाव का रास्ता ढूँढना। परीक्षक ने पूछा—सिन्धु नदी कहाँ से निकलती है ? लड़का बगलें झाँकने लगा, कुछ बोल न सका।

बछिया का ताऊ—मूर्ख, बेवकूफ़। "मोटा-ताजा हट्टा-कट्टा कहने को मनभाऊ था, पर दुनियाँ के व्यवहारों में वह बछिया का ताऊ था।" उसकी भली कही, वह तो निरा बछिया का ताऊ है।

बट्टा लगाना—दाग लगाना, कलंक लगाना। इन दुष्टों के साथ चोरी करने जाकर तुमने भी अपने कुल में बट्टा लगा लिया।

बड़ी-बड़ी बातें करना—डींग मारना, शेखी बघारना। पहले तो बड़ी-बड़ी बातें करते थे, पर लड़ाई के समय झट पीठ दिखाकर भाग आये।

बड़ी बात—कठिन कार्य। रुपया पैदा करना कोई बड़ी बात नहीं, नाम भी कमाना चाहिए।

बढ़ावा देना—उत्साह देना, पीठ ठोकना। अगर वे उसे बढ़ावा न देते रहें तो उसको क्या हिम्मत है कि वह हमारे मुक़ाबले में आये।

बना रहना—जीता रहना। ईश्वर करे यह बालक बना रहे।

बना बनाया खेल बिगड़ जाना—पूरा हुआ काम खराब हो जाना। तुम्हारे एकदम चले जाने से बना बनाया खेल बिगड़ गया।

बरस पड़ना—बहुत अधिक क्रुद्ध होकर डाँटने-डपटने लगना। हमने तो उनसे यही पूछा था कि वे रात कब तक आवेंगे, बस इसी पर बरस पड़े !

बराबर करना—समाप्त कर देना, अंत कर देना। उन्होंने दो ही चार बरस में अपने बड़ों की सब कमाई बराबर कर दी।

बला पीछे लगना—तंग करने वाले आदमी का साथ में होना, झंझट या आफ़त का सामना होना। न-जाने यह बला कहाँ से मेरे पीछे लग गई है, बहुत कहा पर हज़रत टलने का नाम ही नहीं लेते।

बलि चढ़ना—मारा जाना। न-जाने अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए कितने आदमियों की बलि चढ़ेगी।

बल्लियों (बाँसों) उछलना—खूब खुश होना। आज तुमने क्या पाया है, जो बल्लियों उछल रहे हो।

बाँह पकड़ना या देना—सहायता देना। महापुरुष जिसकी बाँह पकड़ते हैं उसकी तन, मन, धन से सहायता करते हैं। यदि उस मुसीबत के समय वे अपनी बाँह न देते, तो आज मैं इस संसार में न होता।

बाएँ हाथ का खेल—अति सुगम। ऐसा चित्र बना लेना तो मेरे बाएँ हाथ का खेल है।

बाग़-बाग़ हो जाना—आनन्दित होना। बच्चे को देखते ही माँ का दिल बाग़-बाग़ हो जाता है।

बाग़ मोड़ना—किसी ओर प्रवृत्त करना, किसी ओर घुमाना। महमूद ग़ज़नवी ने अपने लश्कर की बाग़ हिन्दुस्तान की तरफ़ मोड़ी। जिधर कहोगे उधर ही उनकी बाग़ मोड़ दूँगा।

बाछें खिल जाना—विस्मित और हर्षित होना। जीवन-भर १०) नहीं देते थे, एकदम १०००) की थैली पाकर उसकी बाछें खिल गईं।

बाज़ार गर्म होना—काम ज़ोरों पर होना। सन् १९२२ में भारत में गिरफ्तारियों का बाज़ार गर्म था।

बाजी ले जाना—आगे निकल जाना। मेरा विचार था नरेन्द्र परीक्षा में प्रथम रहेगा, पर तुम बाजी ले गये।

बात का बतंगड़ बनाना—तुच्छ कारण से बड़ा झगड़ा करना। क्षमा माँग लेते तो किस्सा खतम हो जाता, तुमने भी बात का बतंगड़ बना लिया है।

बात का धनी—वायदे का पक्का। अजी वह बात का धनी है, जब कह गया है, तो ज़रूर आयगा।

बात बात में—(१) हर एक बात में, जो कुछ कहता है सब में, (२) थोड़ा सा भी कुछ होने पर। वह बात बात में झूठ बोलता है। बात बात में बिगड़ोगे तो कैसे काम चलेगा।

बात की बात में—बहुत जल्द । ज़रा ठहरो, मैं बात की बात में आया ।

बात चलाना—ज़िक्र करना । उनकी बात मत चलाओ, वे बड़े आदमी हैं ।

बात ठहरना—(१) किसी विषय में यह स्थिर होना कि ऐसा होगा (२) ब्याह निश्चित होना । हमारी और उनकी यह बात ठहरी है कि कल यहाँ से चल दें । इनकी बात कहीं ठहरी या नहीं ?

बात न पूछना—तुच्छ समझ कर बात तक न करना, निरादर करना । तुम्हारी यही चाल रही तो मारे मारे फिरोगे, कोई बात भी न पूछेगा । उनसे मिलने गये और उन्होंने बात तक न पूछी ।

बात पर जाना—(१) कहना मानना, (२) बात का ख़याल करना, बात का भला बुरा मानना । इसकी बात पर न जाना, नहीं तो सब कुछ खो बैठोगे । तुम भी लड़के की बात पर जाते हो ।

बात बढ़ना—बात का विवाद रूप में परिणत हो जाना, झगड़ा बढ़ना । यों ही आपस में कह सुन रहे थे धीरे-धीरे बात बढ़ गई । अब बात बहुत बढ़ गई है, समझाना व्यर्थ है ।

बात बनाना—(१) बहाना करना, (२) काम बनाना । देखो अब बातें न बनाओ, जो निश्चय हो साफ़-साफ़ कह दो । वह तो सारा मामला बिगाड़ चुका था तुमने आकर बात बना दी ।

बात मुँह पर लाना—चर्चा करना । किसी भले आदमी के सामने यह बात मुँह पर न लाना ।

बाल की खाल उतारना—व्यर्थ में सूक्ष्म विवेचना करना । हमारा यह मतलब थोड़े ही था, तुम तो बाल की खाल उतारते हो ।

बाल पकना—कोई काम करते-करते बुड्ढा हो जाना, बहुत दिनों का अनुभव प्राप्त होना । किताबों का व्यवसाय करते-करते हमारे भी बाल पक गये, पर ऐसी बुरी हालत कभी न देखी थी ।

बाल बाल बचना—कोई आपत्ति पड़ने पर हानि पहुँचने में बहुत थोड़ी कसर रह जाना। गोली सन से उसके कान के पास से निकल गई, पर वह बाल-बाल बच गया। प्रताप का भाला हौदे से टकरा गया, सलीम बाल-बाल बच गया।

बाल भी बाँका न होना—ज़रा भी हानि न होना। चाहे सारा संसार मेरा द्वेषी हो जाय पर यदि मुझ पर ईश्वर की कृपादृष्टि है तो मेरा बाल भी बाँका न होगा।

बालू की भीत—ऐसी वस्तु जो शीघ्र नष्ट हो जाय, अथवा जिसका भरोसा न किया जा सके। दुष्ट जनों की मैत्री बालू की भीत सी होती है।

बीड़ा उठाना—ज़िम्मेवारी लेना। पंडितजी ने कौशल्या को पास कराने का बीड़ा उठाया है।

बेगार टालना—दिल लगाकर काम न करना। ज़रा बनाकर लिखो, यह क्या बेगार टाल रहे हो।

बेड़ा पार लगाना—किसी को संकट से पार लगाना या छुड़ाना। इस समय तो ईश्वर ही बेड़ा पार लगायगा।

बे-सिर-पैर की बातें करना—असंबद्ध बोलना। यों ही बे-सिर-पैर की बातें करते रहते हो, कुछ काम की बात करो।

बोझ उठाना—किसी कठिन कार्य का भार अपने ऊपर लेना। गृहस्थी का बोझ उठाना भी बड़ा कठिन है।

बोझ उतरना—किसी कठिन काम से छुट्टी पाना, जी हलका होना। आज उसका सारा रुपया चुका दिया मानो बड़ा भारी बोझ उतर गया।

बोल बाला होना—मान-मर्यादा की बढ़ती होना, प्रसिद्धि होना। आज-कल तो तुम्हारा ही बोलबाला है।

बोली मारना—किसी को लक्ष्य करके उपहास या व्यंग्य के शब्द कहना, ताना मारना। सास और ननद की बोलियाँ तो किसी तरह सह लेती थी, अब आप भी लगे हैं बोली मारने।

भंडा फूटना—भेद खुलना। हमें किसी की निन्दा से क्या काम, आज नहीं तो कल अपने आप भंडा फूट जायगा।

भनक पड़ना—अस्पष्ट या उड़ती हुई खबर का पता लगना। हमारे कान में पहले ही से इसकी कुछ भनक पड़ गई थी।

भाड़ झोंकना—(१) व्यर्थ समय गँवाना। (२) नीच काम करना। अरे, यह भी नहीं पढ़ सकते! इतने बरस स्कूल में क्या भाड़ ही झोंकते रहे। बचपन में तो कुछ पढ़ा लिखा नहीं, अब भाड़ झोंको!

भाड़े का टट्टू—किराये का आदमी, वह आदमी जिसे अपने पैसों के सिवाय और कुछ मतलब न हो। यह भाड़े का टट्टू इस काम को खाक करेगा?

भारी लगना—असह्य होना, नागवार गुज़रना। जब भाभी को हमारा यहाँ रहना भारी लगता है, तब हम यहाँ कैसे रह सकती हैं?

भिड़ के छत्ते को छेड़ना—फ़सादी आदमी को छेड़ना। बुरे आदमी को गुस्सा दिलाना। बड़ी कठनिता से इसे शांत किया था, तुमने आकर फिर इस भिड़ के छत्ते को छेड़ दिया।

भीगी बिल्ली बनना—भय आदि के कारण दब जाना, उद्दंडता छोड़ देना। शशि आगे-पीछे तो माँ की नाक में दम कर देता है किन्तु जब मामाजी घर में आते हैं तो भीगी बिल्ली बन जाता है।

भूत चढ़ना या सवार होना—किसी चीज़ के लिए बहुत अधिक आग्रह या हठ होना, बहुत अधिक क्रोध होना। तुम्हें तो हरएक बात का इसी तरह भूत चढ़ जाता है। उनसे मत बोलो, इस समय उन पर भूत सवार है।

भेड़िया धसान—बिना परिणाम सोचे-समझे दूसरों का अनुकरण करना। जनाब, हुआ तो कुछ भी नहीं था, यह तो निरो भेड़िया-धसान है, ज्यों ही एक हिन्दू ने दुकान बंद की कि सारा बाज़ार आप से आप बंद हो गया।

मक्खियाँ मारना—बेकार फिरना। आज-कल तो बी० ए० एम० ए० पास करके भी लोग मक्खियाँ मारते फिरते हैं।

मक्खीचूस—बहुत अधिक कंजूस। उनकी भली कही, वे तो पूरे मक्खीचूस हैं, वे किसी को क्या देने लगे।

मक्खी पर मक्खी मारना—ज्यों की त्यों नकल उतारना। तुमने तो मक्खी पर मक्खी मार दी है, तुम्हें कहा था जहाँ अशुद्धियाँ हों ठीक कर लो।

मगज़ चाटना—तंग करना। अब चुप करके सो जाओ, मेरा मगज़ मत चाटो।

मगज़पच्ची करना—समझाने के लिए बहुत बकना। इस काठ के उल्लू के साथ कौन मगज़पच्ची करे।

मज़ा उड़ाना या लूटना—आनंद लेना, सुख भोगना। अंगरेज़ प्रभु तो पैदा-ही मज़ा लूटने के लिए हुए हैं और हम भारतीय चक्की में पिसने के लिए।

मज़ा किरकिरा होना—रंग में भंग होना, आनंद में विघ्न पड़ना। प्रिंसिपल साहब के आ जाने से सारा मज़ा किरकिरा हो गया।

मज़ा चखाना—दंड देना, बदला लेना। इस समय तो हँस ले, ज़रा स्कूल से बाहर हो तो देख कैसा मज़ा चखाता हूँ।

मन के लड्डू खाना—मन-ही-मन में खुश होना। बी० ए० पास करेंगे, वकील बनेंगे, खूब रुपया कमायेंगे, ऐश करेंगे, बस यों ही मन के लड्डू खाते रहते हैं पता नहीं कि संसार में जीविका का प्रश्न कितना जटिल हो रहा है।

मन मानना—मन में सन्तोष होना, प्रेम या अनुराग होना। हमारा मन नहीं मानता, उन्हें अवश्य देखने जायेंगे। 'ऊधो, मन माने की बात।'

मरने की भी फुर्सत न होना—बिलकुल फुर्सत न होना। यहाँ मरने की भी फुर्सत नहीं, तुम और काम बढ़ाते जाते हो।

मर मिटना—बरबाद होना, तबाह हो जाना। देश पर मर मिटने के लिए हल्दीघाटी के मैदान में हज़ारों राजपूत आ जुटे।

मरम्मत करना—(१) टूटे फूटे अंशों को दुरुस्त करना, (२) मारना पीटना। मकान की मरम्मत हो जाती तो अच्छा था। जब तक तुम्हारी मरम्मत न होगी तब तक तुम सीधे न होगे।

मरे को मारना—दुखी आदमी को और दुखी करना, निर्बल को सताना। क्यों बेचारे मरे को मारते हो! "मरे को मारे शाह मदार।"

माई का लाल—बली, साहसी, दिलेर। उस माई के लाल ने हँसते-हँसते फाँसी के तख्ते को चूम लिया। आओ, कोई माई का लाल हो तो मेरे सामने आवे। "लरतु काल सों लाख में कोई माई कौ लाल।"

माथा ठनकना—आशंका होना। उसकी शक्ल देखकर ही मेरा माथा ठनका था कि हो न हो यह कोई ठग है, सो अब देख लो वैसा ही निकला?

माथे मढ़ना—उत्तरदायित्व आ पड़ना। वे तो बस चले गये, अब सारे कर्ज़े हमारे ही माथे आ पड़े हैं।

माथे पर बल पड़ना—शक्ल से नाराज़गी ज़ाहिर होना, तेवर चढ़ना। रुपये की बात सुनते ही उनके माथे पर बल पड़ गये।

मारा जाना—(१) फिजूल नष्ट होना, (२) हानि उठाना। मेरे दस रुपये अमृतसर आने-जाने में यों ही मारे गये। मैं तो इस झगड़े में व्यर्थ ही मारा गया।

मारा-मारा फिरना—दुर्गति होना। जब से इसके बाप ने दूसरी शादी की है, तब से बेचारा मारा-मारा फिरता है।

माल मारना—अच्छी वस्तु हाथ लगना। आपने तो अच्छा माल मारा, पढ़ी लिखी लड़की मिल गई, १०,०००) नक़द मिल गये, और क्या चाहिये?

मिट्टी करना, मिट्टी में मिलाना—नष्ट करना, बरबाद करना।

इसने बाप-दादा का सब रुपया मिट्टी कर दिया—मिट्टी में मिल गया। हज़ारों खानदान मिट्टी में मिल गये।

मिट्टी का माधो—मूर्ख, बेवक़ूफ़। इस मिट्टी के माधो से कौन मग़ज़पच्ची करे।

मिट्टी के मोल या पानी के मोल—बहुत सस्ता। वह मकान तो मिट्टी के मोल मिल रहा है।

मिट्टी ख़राब या मिट्टी पलीद करना—दुर्दशा करना, ज़लील करना। लालाजी की ऐसी मिट्टी खराब करूँगा कि जन्म-भर याद रखेंगे। उन बेचारे की बड़ी मिट्टी पलीद हुई। "इस इश्क़े नामुराद ने मिट्टी पलीद की।"

मिट्टी हो जाना—नष्ट हो जाना, बिगड़ जाना। तुम्हारे वक्त पर न पहुँचने से सब किया कराया मिट्टी हो गया।

मुँह अँधेरे—प्रभात के समय, तड़के। हम यहाँ से मुँह अँधेरे ही निकल जाते हैं।

मुँह की खाना—(१) बेइज़्ज़त होना, (२) बुरी तरह परास्त होना। हम तो तुम्हारी बातें हँसी में उड़ा देते हैं, पर कोई कभी आगे से गर्म मिज़ाज़ मिल गया तो मुँह की खाओगे। क्यों बच्चा! कैसी मुँह की खाई, चले थे हमसे मुक़ाबला करने, अब तो दो भले आदमियों के सामने मुँह दिखाने लायक भी नहीं रहे।

मुँह ताकना—(१) अकर्मण्य हो कर चुपचाप बैठे रहना, (२) सहायता की आशा रखना। सब लोग अपने-अपने रुपये ले आये, और आप मुँह ताकते रहे। यह हमेशा तुम्हारा मुँह ताकता रहता है।

मुँह-तोड़ जवाब देना—पूरा-पूरा जवाब देना, ऐसा जवाब देना कि दूसरा आगे बोल ही न सके। पंडित जी ने विपक्षियों को वह मुँह-तोड़ जवाब दिया कि बेचारों से फिर कुछ कहते न बना!

मुँह देखे का—जो हार्दिक न हो, दिखावे का। आपका प्रेम तो मुँह देखे का है। ये सारी बातें मुँह देखे की हैं।

मुँह धोना—आशा छोड़ना। जाइये, जाकर मुँह धोइये, अब यह आपको नहीं मिलने का।

मुँह पकड़ना—बोलने से रोकना। कहो न, कोई तुम्हारा मुँह थोड़े ही पकड़ता है।

मुँह पर—सामने, प्रत्यक्ष। वह मुँह पर तो खुशामद करता है पर पीठ पीछे गालियाँ देता है।

मुँह पर हवाइयाँ उड़ना, मुँह फक हो जाना या सूखना—भय या लज्जा आदि के कारण चेहरा पीला पड़ जाना। मुझे देखते ही उनके मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। पत्र पढ़ते ही उनका मुँह फक हो गया।

मुँह फिर जाना—(१) मुँह का टेढ़ा हो जाना, (२) सामने से हट या भाग जाना। ऐसा थप्पड़ दूँगा, कि मुँह फिर जायगा। घंटे-भर की लड़ाई में ही शत्रु का मुँह फिर गया।

मुँह फूलना—नाराज़ होना! मैं कुछ कहूँगा तो अभी तुम्हारा मुँह फूल जायगा।

मुँह फैलाना या मुँह बाना—अधिक लेने की इच्छा या हठ करना। कचहरी वाले तो ज़रा-ज़रा सी बात पर मुँह फैलाते हैं।

मुँह बनाना या फुलाना—ऐसी आकृति बनाना जिससे असंतोष या अप्रसन्नता प्रकट हो। तुम तो ज़रा ज़रा सी बात पर मुँह बनाकर (फुलाकर) बैठे जाते हो।

मुँह बिगाड़ना या ख़राब करना—(१) टेढ़ा करना (२) मुँह का स्वाद बिगाड़ देना, (३) बुरी बात कहने की आदत डालना। मारे थप्पड़ के मुँह बिगाड़ दूँगा। इस खट्टे आम ने तो मेरा मुँह ही बिगाड़ दिया। गाली दोगे तो मेरा क्या बिगड़ेगा अपना मुँह बिगाड़ोगे।

मुँह-भर न बोलना—अच्छी तरह न बोलना। हम वहाँ जाकर क्या करेंगे, वहाँ कोई मुँह-भर बोलता तक नहीं।

मुँह में कालिख लगना—बुरा काम करने पर कलंक लगना।

हम तुम्हें समझाते थे कि इन बातों से दूर रहो, अब जब मुँह पर कालिख लगी तब समझ में आया।

मुँह मीठा करना या कराना—मिठाई खाना या खिलाना। मुँह मीठा कराओ तो तुम्हें खुशख़बरी सुनाऊँ।

मुँह में खून लगना—चसका पड़ना, चाट पड़ना। एक दिन तुम्हें रिश्वत के रुपये क्या मिले, हमेशा के लिए तुम्हारे मुँह में खून लग गया।

मुँह में पानी भर आना या लार टपकना—खाने को जी ललचना। गरम-गरम जलेबियाँ निकल रही थीं, देखते ही मुँह में पानी भर आया। जहाँ तुमने गोल-गोल रसगुल्ले देखे, तुम्हारे मुँह से लार टपकने लगी।

मुँह मोड़ना—(१) किसी ओर से विमुख होना, (२) इनकार करना, (३) हराना। परम पिता परमात्मा से जिसने मुँह मोड़ रक्खा है उसे सुख कहाँ। हम कभी किसी बात से मुँह नहीं मोड़ते। थोड़ी ही देर में सैनिकों ने डाकुओं का मुँह मोड़ दिया।

मुँह लगाना या चढ़ाना—अधिक स्वतन्त्रता दे देना, किसी को बहुत उद्दंड बनाना। आपने इस नौकर को बहुत मुँह चढ़ा रक्खा है।

मुट्ठी गरम करना—रुपया देना, रिश्वत देना। जब तक बड़े बाबू की मुट्ठी गरम नहीं करोगे तब तक का काम नहीं बनेगा।

मुट्ठी में करना—अपने वश में करना। डिप्टी कमिश्नर को तो इसने मुट्ठी में कर रक्खा है, उससे जो चाहे करवा लेता है।

मैदान मारना—लड़ाई जीतना। शाबास बहादुरो, अब मैदान मार लिया है, थोड़ी सी कसर है।

मैदान हाथ आना या रहना—लड़ाई में जीतना। "कादिरखाँ की तलवार यदि मालदेव के हाथ में होती तो मैदान ज़रूर उसके हाथ रहता।"

मोटा असामी वा मोटा शिकार—रुपये पैसे वाला आदमी। ये बड़े मोटे असामी हैं, इनका ख़याल रखना।

मोम होना—दयार्द्र होना। दीन-दुखियों को देखते ही उनका दिल मोम हो जाता है।

मौत का सिर पर खेलना—मौत करीब आना। मालूम पड़ता है तुम्हारे सिर पर मौत खेल रही है, तभी तुम छेड़खानी करने से बाज़ नहीं आते।

युग युग—बहुत दिनों तक। युग-युग जिओ।

युग-युगान्तर से—बहुत दिनों से। भारत में युग-युगान्तर से स्त्री अपने पति को देवता समझती आई है।

रंग उतरना या उड़ना—(१) धूप या जल आदि के संसर्ग से रंग निकल जाना या फीका पड़ना, (२) भय या लज्जा से चेहरे की रौनक का जाते रहना, चेहरा पीला पड़ना। इस साड़ी का रंग तो उतर ही चुका है, यह अब हमारे कौन काम आएगी। पुलिस को घर में घुसते देखते ही उसका रंग उतर गया।

रंग चढ़ना तथा रंग में रँगा जाना—प्रभाव पड़ना, असर पड़ना। इस लड़के पर भी अब नया रंग चढ़ रहा है। तुम भी उसी रंग में रँग गये हो।

रंग जमना—(१) धाक जमना, (२) खूब मज़ा होना। दोनों ने समझा कि रंग जैसा चाहिए वैसा जम गया। आज गाने का खूब रंग जमा।

रंग-ढंग—(१) दशा, चाल-ढाल, व्यवहार। (२) ऐसी बात जिससे किसी दूसरी बात का अनुमान हो। आजकल उसके रंग-ढंग अच्छे नहीं दिखाई देते। आसमान के रंग-ढंग से तो मालूम होता है कि आज पानी बरसेगा।

रंग बदलना—परिवर्तन होना। जमाना रंग बदलता है।

रंग में भंग पड़ना—मज़ा किरकिरा होना। उनके रूठ कर चले जाने से यहाँ रंग में भंग पड़ गया।

रंग लाना—दशा उपस्थित करना, अपना प्रभाव या गुण दिखाना। तुम्हारी ही शरारत यह सब रंग लाई है।

रँगा सियार—धोखेबाज़, ऊपर से कुछ अन्दर से कुछ। उसका लंबा टीका देखकर उसे सीधा न समझना, वह पूरा रँगा सियार है।

रग-रग जानना, पहचानना या वाकिफ होना—स्वभाव और व्यवहार से खूब परिचित होना, खूब पहचानना। अजी, वे मुझसे क्या छिपावेंगे, मैं तो उनकी रग-रग से वाक़िफ़ हूँ।

रत्ती-रत्ती—पूरा-पूरा। मैं इनका रत्ती-रत्ती हाल बता दूँगा।

रफ़ू-चक्कर होना—दौड़ जाना। गोकुल ने चुपके से गठड़ी उठाई और रफ़ू चक्कर हो गया।

रह जाना—(१) थक जाना, (२) पीछे छूट जाना, (३) खर्च या व्यवहार से शेष बचना। लिखते-लिखते हाथ रह गया। मेरी पुस्तक वहीं रह गई थी। मेरे पास अब पाँच रुपये रह गये हैं।

रहा-सहा—बचा-बचाया, थोड़ा सा जो बाकी था। तुम्हारे चले जाने से उनका रहा-सहा उत्साह भी जाता रहा।

राई का पहाड़ बनाना—ज़रा सी बात को बहुत बड़ा कर कहना, राई का पहाड़ बनाना तो तुम्हारा स्वभाव ही है।

रात-दिन—हमेशा। यहाँ तो रात-दिन यही बखेड़ा है।

राम कहानी—आप बीती। अब मेरी भी रामकहानी सुन लो।

रास्ता देखना—प्रतीक्षा करना। हम बड़ी देर तक आपका रास्ता देखते रहे।

रास्ते पर लाना—सुमार्ग पर लाना, ठीक करना। अभी वे ऐंठे बैठे हैं देखो उन्हें किस तरह रास्ते पर लाता हूँ।

रोआँ-रोआँ या रोम रोम—सारा शरीर, प्रत्येक रोम। उनको देखते ही मेरे रोम-रोम में आग लग जाती है। मेरा रोआँ-रोआँ उन्हें आशीर्वाद देता है।

रोंगटे खड़े होना—भय से रोमांचित होना। भाई को बेहोश देख कर उसके रोंगटे खड़े हो गये।

रोटी कपड़ा—आजीविका। उस औरत ने अपने पति पर रोटी-कपड़े का दावा किया है।

रो पीट कर—ज्यों-त्यों करके, प्रसन्नता-पूर्वक नहीं। रो-पीटकर उन्होंने पहला काम पूरा किया है, तुम उन्हें और सौंप रहे हो।

लंकाकांड होना—खूब मारपीट होना; घमासान होना।

"कमला—मर, हरामज़ादी ! मैं पूछती हूँ, हुआ क्या ?

धाय—अरे एकदम लंकाकांड है—और क्या ?"

लंगोटिया यार—घनिष्ट मित्र। श्रीकृष्ण और अर्जुन लँगोटिया यार थे। वे दोनों लँगोटिया यार हैं।

लंबी-चौड़ी हाँकना—व्यर्थ बातें करना। आता-जाता है कुछ नहीं, यों ही लंबी-चौड़ी हाँकता रहता है।

लकीर का फकीर होना—पुरानी रीति पर चलना। आप भी लकीर के फकीर हैं, भला चमार के हाथ का पानी पीने में क्या पाप है ?

लट्टू होना—मस्त होना, रीझ जाना। ज़रा कोई भड़कीली वस्तु देखी और तुम लट्टू हो गये।

लड़ाई मोल लेना—झगड़ा खड़ा करना। तुम तो खामख़ाँ राह चलते से भी लड़ाई मोल लेते हो।

लपेट में आ जाना—फँस जाना। हम भी उनकी बातों की लपेट में आ गये।

लहू के आँसू पीना—दुःख सह लेना। बेचारी लहू के आँसू पीती थी, कोई उसका दुःख बटाने वाला नहीं था।

लहू के घूँट पीना—क्रोध रोकना। युधिष्ठिर की आज्ञा मानकर भीम लहू के घूँट पी गया, नहीं तो द्रौपदी की वैसी दुर्गति कौन कर सकता था ?

लहू पसीना एक होना या करना—बहुत कष्ट उठाना। दिनभर भार ढोते-ढोते लहू पसीना एक हो जाता है, और रात को केवल चार आने पैसे बनते हैं।

लहू-लुहान होना—खून से लतपत होना। शूर्पणखा रावण के दरबार में पहुँची तो लहू-लुहान हो रही थी।

लाग-लपेट रखना—संबंध रखना। आप जानें आपका काम, मैं इससे कोई लाग लपेट नहीं रखता।

लाल-पीला होना—क्रुद्ध होना। दुःशासन को देखते ही भीम लाल-पीला हो गया।

लुटिया डुबोना—काम बिलकुल बिगाड़ देना। उसने तो भला दस बारह रुपये का ही नुकसान किया था, तुमने तो लुटिया ही डुबो दी।

लेने के देने पड़ना—लाभ के बदले हानि होना। ज़रा सँभल कर क़दम बढ़ाना, कहीं लेने के देने न पड़ जायँ।

लोहा बजना—युद्ध में तलवारें चलाना। शंख फूँकने की देर थी कि रणभूमि में चारों ओर लोहा बजने लगा।

लोहा मानना—अधीनता स्वीकार करना, किसी की बहादुरी या विद्वत्ता का कायल होना। आखिर मुगलों को भी अँगरेज़ों का लोहा मानना पड़ा। बड़े-बड़े पहलवान उसका लोहा मानते थे।

लोहे का चना चबाना—अति कठिन काम। अकबर समझ गया कि प्रताप को नीचा दिखाना लोहे का चना चबाना है।

वचन देना—प्रतिज्ञा करना। मैंने उसे वचन दे दिया है कि परीक्षा में पास होने पर सब किताबें तुम्हें दे दूँगा।

वचन निबाहना या पूरा करना—प्रतिज्ञा पूर्ण करना। आपने मुझे किताबें देने को कहा था सो अभी तक आपने अपना वचन पूरा नहीं किया।

विष उगलना—दुर्वचन कहना, किसी के विरुद्ध बहुत अधिक

कहना। न जाने उन्होंने भरी-सभा में तुम्हारे बारे में इतना विष क्यों उगला ?

विष की गाँठ—खराबी या उपद्रव करने वाला। वही तो विष की गाँठ है, सब झगड़ा उसी का खड़ा किया हुआ है।

शहद लगाकर चाटना—किसी निरर्थक पदार्थ को यों ही लिये रहना और उसका कुछ भी उपयोग न कर सकना। वह तो दिवालिया हो गया, अब आप अपना तमस्सुक शहद लगाकर चाटिये।

शिकार हाथ लगना—असामी मिलना। आजकल इनके हाथ कोई अच्छा शिकार लगा है, तभी तो इतने गुलछर्रे उड़ा रहे हैं।

शिकार होना—मारा जाना। न जाने कितने आदमी प्लेग के शिकार हो गये।

शेखी बघारना, हाँकना या मारना—अभिमान भरी बातें करना; डींग मारना। उस जैसा शेखी बघारने वाला हमने दूसरा नहीं देखा।

शैतान के कान कतरना—बहुत चालाक होना। बड़ा चलता पुर्ज़ा है, शैतान के कान कतरता है ?

श्रीगणेश करना—आरंभ करना। आज तुम्हारे काम का श्रीगणेश तो कर दिया है, देखें ख़तम कब होता है। श्रीगणेश तो अच्छा हुआ है, देखें अन्त कैसा होता है ?

सत्तू बाँध के पीछे पड़ना—बुरी तरह पीछे लगना। हम भी अब सत्तू बाँध के उनके पीछे पड़े हैं, एक-एक पाई वसूल करके रहेंगे।

सन्नाटा छा जाना—चुपचाप हो जाना। रात हो गई, सब ओर सन्नाटा छा गया।

सफ़ेद झूठ—सरासर झूठ। यह झूठ है, सफ़ेद झूठ है कि हम ने उसे मारा है।

सब्ज़ बाग़ दिखाना—लोभ देकर दूसरे को बहकाना। सावधान रहना, वह केवल सब्ज़ बाग दिखा रहा है, उससे मिलेगा कुछ भी नहीं।

समझ पर पत्थर पड़ना—बुद्धिभ्रष्ट होना। हमारी समझ पर पत्थर पड़े हैं, जो हमारी जड़ें काट रहे हैं उन्हीं के हम पिछलग्गू बने हुए हैं।

सर्द हो जाना—मर जाना। साँप काटते ही वह सर्द होगया।

साँप छछूँदर की दशा—भारी असमंजस की दशा, दुबिधा, न करते बने न छोड़ते—कहते हैं कि यदि साँप छछूँदर को पकड़ने पर खा जाय तो वह तुरन्त मर जाता है, और यदि न खाय और उसे उगल दे तो अंधा हो जाता है।

"सकल सभा की भइ मति भोरी, भइ गति साँप छछूँदर केरी।"

साँस तक न लेना—बिलकुल चुपचाप रहना, कुछ न बोलना। उनके सामने तो यह लड़का साँस तक नहीं लेता।

साँस लेना—थक जाने पर थोड़ा विश्राम करना। घंटों से काम कर रहे हो ज़रा साँस तो ले लो।

सात घाट का पानी पीना—अनेक प्रकार का अनुभव होना। तुम उसे क्या बहकाओगे, उसने भी सात घाट का पानी पी रक्खा है।

सात-पाँच—चालाकी, मक्कारी। वह बेचारा सात पाँच नहीं जानता; सीधा आदमी है।

सिक्का बैठाना—प्रभुत्व जमाना, प्रधानता प्राप्त करना। "बलराज ने सारे गाँव में अपना सिक्का बैठा रक्खा था, गाँव वाले पुलिस की इतनी नहीं मानते थे जितनी उसकी।"

सितारा चमकना—भाग्य उदय होना। उनका भी सितारा चमका, परीक्षा पास करते ही अच्छी नौकरी मिल गई।

सिर-आँखों पर—सादर स्वीकृत। आपकी आज्ञा सिर-आँखों पर, आज ही सब काम पूरा हो जायगा।

सिर उठाना—(१) बीमारी से छुटकारा पाना, (२) मुक़ाबले के लिए तैयार होना, (३) विरोध में कुछ कहना (४) प्रतिष्ठा के साथ

खड़ा होना। बच्चा जब से पड़ा है तब से सिर नहीं उठा सका। उस समय तो विद्रोही दब गये थे पर सुना है अब उन्होंने फिर सिर उठाया है। अन्याय सहते जाते हैं पर किसी की हिम्मत नहीं पड़ती कि सिर उठाए। जब तक हम भारतवासियों की यह दशा है, तब तक हम सभ्य जातियों के बीच में कैसे सिर उठा सकते हैं?

सिर उड़ाना—सिर काटना। तलवार के एक ही बार से उसने कइयों के सिर उड़ा दिये।

सिर खाना—बातें पूछ पूछ कर तंग कर देना। फ़ज़ूल सिर खा रहा है, जाकर अपना काम कर।

सिर घूमना या सिर भारी होना—सिर में पीड़ा होना। रात भर नींद नहीं आई, अब सिर भारी हो रहा है।

सिर चढ़ना—(१) बहुत बढ़ा देना, (२) गुस्ताख बनाना, (३) सिर देना। किया-कराया तो है कुछ नहीं, लोगों ने व्यर्थ में उसे सिर चढ़ा रक्खा है। तुमने अत्यधिक लाड के कारण उसे सिर चढ़ा दिया है। 'मातृभूमि पर सीस (सिर) चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।'

सिर झुकाना—(१) सिर नवाना, नमस्कार करना, (२) लज्जा से गरदन नीची करना, (३) स्वीकार करना, मान लेना। सवेरे उठकर माता-पिता के सामने सिर झुकाना चाहिए। कचहरी में पहुँच कर मैंने देखा कि रमेश सिर झुकाये कठघरे में खड़ा है। "शिवाजी ने पूछा—रघुनाथ! क्या यह पत्र तुम आज रात ही रात किले में पहुँचा सकोगे? रघुनाथ ने चुपचाप सिर झुका दिया।"

सिर देना—प्राण निछावर करना, जान देना।

"तेग़बहादुर जो किया, किया कौन मुरशीद।
सिर दीन्हो सार न दिया, साँचा अमर-शहीद॥"

सिर धुनना—शोक या पछतावे से सिर पीटना, हाथ मलना।

परीक्षा से पहले पढ़ने का नाम न लेते थे अब फेल होकर रात दिन सिर धुनते रहते हैं।

सिर नीचा होना—अप्रतिष्ठा होना; इज़्ज़त बिगड़ना। नालायक लड़के! तुझे इतना पता नहीं कि तेरी इन हरकतों से मेरा भी सिर नीचा हो गया है।

सिर पर आ जाना—बहुत समीप आ जाना। परीक्षा सिर पर आ गई है, पर इसे कुछ फिक्र ही नहीं।

सिर पर खून सवार होना—जान लेने पर उतारू होना। वह अंधा हो रहा था; उसके सिर पर खून सवार था, उस समय यदि कोई भी उसके पास जाता तो वह उसे क़त्ल किये बिना न छोड़ता।

सिर पर भूत सवार होना—रट लगाना, पागलपन चढ़ा होना। मुन्नी पर तो खिलौने का भूत सवार है, जब तक उसे खिलौना न मिलेगा तब तक वह चैन न लेने देगी।

सिर पर लेना—जिम्मा लेना। माता की मृत्यु के पश्चात् उसके पालन-पोषण का भार उसकी बुआ ने अपने सिर पर ले लिया।

सिर पर सवार होना—पीछे लग जाना। एक बार कह तो दिया शाम को आना, तुम तो सिर पर ही सवार हो गये हो।

सिर पर हाथ धरना—सहायता करना। अब आप मेरे सिर पर हाथ धर रहे हैं तो मुझे किसी का भय नहीं।

सिर मढ़ना—जिम्मे करना, इच्छा के विरुद्ध सुपुर्द करनी। क्यों अपना दोष दूसरों के सिर मढ़ते हो।

सिर मारना—बहुत यत्न करना। मैंने बहुतेरा सिर मारा पर उसकी समझ में कुछ न आया।

सिर से पैर तक—आरम्भ से अन्त तक। तुम्हारे लेख में सिर से पैर तक ग़ल्तियाँ भरी हुई हैं, इसे कहाँ तक ठीक करें?

सिर से बला टलना—बेगार सिर से टालना, जी लगाकर काम

न करना । किसी तरह से सिर से बला टाली थी, यह दूसरी आ चिपटी ।

सिर से कफ़न बाँधना—मरने को तैयार होना । महात्माजी के नेतृत्व में आज हम सिर से कफ़न बाँध कर इस स्वतंत्रता के संग्राम में सम्मिलित हुए हैं ।

सिर हिलाना—इनकार करना । मैंने उससे केवल एक दिन के लिए कलम माँगी थी, पर उसने सिर हिला दिया ।

सिर होना—जिम्मे होना । यह अपराध तुम्हारे सिर है ।

सींग कटाकर बछड़ों में मिलना—बालोचित काम करना । ये भी सींग कटाकर बछड़ों में मिलना चाहते हैं, प्रोफेसर होकर भी गुल्लीडंडे का शौक नहीं गया ।

सीधे मुँह बात न करना—अभिमान करना । रायसाहब बन गये हैं, तो सीधे मुँह बात भी नहीं करते !

सूरज को आरसी या दीपक दिखाना—प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय देना । सज्जनवृन्द ! महात्मा जी के विषय में कुछ कहना सूरज को आरसी दिखाना है ।

सौ बात की एक बात—निचोड़, तात्पर्य । मुझे इस बकझक से कोई मतलब नहीं, सौ बात की एक बात यह है कि यदि तुम यहाँ काम करना चाहते हो तो तुम्हें यहाँ के नियम मानने पड़ेंगे ।

सोने की चिड़िया हाथ से निकल जाना—लाभ का द्वार बंद हो जाना । जब भारत स्वतंत्र हो गया तो समझ लो कि अंगरेज़ों के हाथ से सोने की चिड़िया निकल गई ।

स्वाहा करना—नष्ट करना, फूँक डालना । उसने बाप-दादे की सारी सम्पत्ति दो ही बरस में स्वाहा कर डाली ।

हँसते-हँसते—प्रसन्नता से, खुशी से । राजपूतों ने हँसते-हँसते युद्ध में प्राण दे दिये ।

हँसकर या हँसी में उड़ाना—ध्यान न देना। मैं काम की बात कहता हूँ, तुम हँसकर उड़ा देते हो।

हँसी होना—बदनामी होना। या तो काम शुरू ही न करते या अब पूरा निभाओ, इस तरह बीच में छोड़ने से व्यर्थ की हँसी होगी।

हँसी उड़ाना—व्यंग-पूर्ण निन्दा करना, उपहास करना। तुम सब की हँसी उड़ाते फिरते हो, जब आप करोगे तो पता लगेगा।

हक्का-बक्का रह जाना—चकित हो जाना, भौंचक्का रह जाना। मैं तो सुनकर हक्का-बक्का रह गया था कि तुम भी परीक्षा में फेल होगये।

हज़म करना—दूसरे की वस्तु पर बेईमानी या अनुचित रीति से अधिकार करना। हज़रत मेरी दस किताबें ले गये, अब देने का नाम नहीं लेते, सबकी सब हज़म कर गये। "चूरण साहब लोग जो खाता, सारा हिंद हज़म कर जाता।"

हजामत करना—(१) दाढ़ी या सिर के बाल साफ करना या काटना, (२) लूटना। अभी हजामत बनवाकर आता हूँ। धूर्तों ने वहाँ उसकी खूब हजामत बनाई।

हड़प लेना—दूसरे की वस्तु अपना लेना। मैंने मिठाई भेजी थी कि मेरे भांजे को दे देना पर उसने आप ही हड़प ली।

हड्डियाँ गढ़ना या तोड़ना—खूब मारना, खूब पीटना। साले की ऐसी हड्डियाँ तोड़ूँगा कि याद रक्खेगा।

हड्डियाँ निकल आना—शरीर बहुत दुबला होना। शकुन्तला जब से सुसराल गई है, हड्डियाँ निकल आई हैं।

हथियार डाल देना—हार मान लेना। तीन दिन तक तो बराबर लड़ते रहे, पर चौथे दिन उन्होंने हथियार डाल दिए।

हराम का—जो बेईमानी से प्राप्त हो। हराम का माल खाते-खाते तुम्हारी तोंद बढ़ गई है।

हराम होना—किसी बात का करना मुश्किल हो जाना, कोई बात

न कर पाना। रात भर इतना शोर हुआ कि नींद हराम हो गई। यहाँ आते ही खाना-पीना हराम हो गया।

हवाई किले (महल) बनाना—मन में खयाली मनसूबे बाँधना। उनसे करते-धरते तो कुछ बनता नहीं, बस हवाई किले बनाते रहते हैं।

हवा उड़ना—खबर फैलना, बात फैलना। शहर में यह हवा उड़ रही है कि प्रेज़ीडेंट साहब ने खुद अपना इस्तीफा भेज दिया है।

हवा का रुख देखना—अनुकूल परिस्थिति की प्रतीक्षा करना। हवा का रुख देखकर काम करना चाहिए।

हवा खाना—(१) शुद्ध वायु के लिए बाहर निकलना। (२)विना सफलता प्राप्त किये यों ही रह जाना। हम सवेरे रोज़ हवा खाने जाते हैं। वक्त पर तो आये नहीं, अब जाओ हवा खाओ।

हवा लगना—सोहबत का असर होना। किसी की संगत का प्रभाव पड़ना। तुम्हें भी उसकी हवा लग गई मालूम होती है।

हवा से बातें करना—बहुत वेग से चलना। ज़रा बागें ढीली करो तो यह घोड़ा हवा से बातें करने लगता है।

हवा हो जाना—भाग जाना, बहुत तेज़ दौड़ना। चाबुक पड़ते ही यह घोड़ा हवा हो जाता है। तुम्हारे आते ही वे हजरत वहाँ से हवा होगये।

हाँ में हाँ मिलाना—दूसरे की खुशामद करने के लिए उसका मत मान लेना। चेयरमैन की हाँ में हाँ मिलाना इनका पहला काम है।

हाँड़ी पकना—कोई गुप्त षड्यंत्र रचा जाना। भीतर ही भीतर खूब हाँड़ी पक रही है।

हाथ उठाना या चलाना—मारना या मारने के लिए थप्पड़ या घूँसा तानना। औरतों पर हाथ उठाना अच्छी बात नहीं। हाथ मत चलाओ, सीधी तरह बात करो।

हाथ कटाना--प्रतिज्ञा आदि से बद्ध हो जाना। उस राज़ीनामे पर दस्तख़त करके हम तो अपना हाथ कटा बैठे हैं, अब जो कुछ कहना है, तुम्हीं जाकर कहो।

हाथ की मैल—तुच्छ वस्तु। अजी रुपया-पैसा तो हाथ की मैल है, पुरुष स्वस्थ रहे।

हाथ पर हाथ धरे बैठना—निकम्मा बैठना। व्यापार मंदा है, सब दुकानदार हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं।

हाथ को हाथ न सूझना—बहुत अंधेरा होना। आधी रात थी बादल छाये हुए थे, हाथ को हाथ न सूझता था।

हाथ ख़ाली होना—पास में कुछ द्रव्य न होना। आजकल तो हाथ खाली हैं, जब कुछ आता है तभी तुम्हें दे देंगे।

हाथ ख़ाली न होना—फ़ुर्सत न होना। अभी तो हाथ ख़ाली नहीं है, कल तक तुम्हारा काम ख़तम कर दूँगा।

हाथ खींचना—सहायता बंद कर देना। दसवीं श्रेणी तक तो रायसाहब मेरी पूरी सहायता करते रहे, पर अब न जाने उन्होंने क्यों हाथ खींच लिया है।

हाथ जोड़ना—(१) प्रणाम करना, अनुनय-विनय या प्रार्थना करना, (२) पीछा छुड़ाना, संसर्ग या संबंध रखना। मेरी ओर से हाथ जोड़कर उनसे कहना कि बच्चे की बीमारी के कारण इस बार आप के काम में कुछ देरी हो गई है, आगे से ऐसा कभी न होगा। ऐसे आदमियों को हम दूर से ही हाथ जोड़ते हैं।

हाथ डालना—आरंभ करना। जो काम पूरा न कर सको, उसमें हाथ न डालो।

हाथ तंग होना—ख़र्चने को धन थोड़ा होना। हम तुम्हें पचीस रुपये ही वेतन देते, पर तुम जानते हो आजकल हमारा भी हाथ तंग है।

हाथ धो बैठना—खो देना, नष्ट करना। जब उस माल से हाथ धो बैठोगे, तभी तुम्हें अक़्ल आवेगी।

हाथ धोकर पीछे पड़ना—बुरी तरह पीछे लगना। मैंने तो उससे मख़ौल ही किया था, पर वह तो हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ गया है।

हाथ पकड़ना—सहारा देना। लाला जी इसका हाथ न पकड़ते तो आज न जाने यह कहाँ-कहाँ की ठोकरें खाता।

हाथ पसारना या फैलाना—माँगना। ग़रीब हैं तो क्या, किसी के आगे हाथ तो नहीं पसारते।

हाथ-पाँव फूल जाना—भयभीत हो जाना। मेमसाहब ने जब सुना कि बाग़ी लोग इधर ही आ रहे हैं, तो उनके हाथ-पाँव फूल गये।

हाथ-पैर जोड़ना—दीनता दिखाना, विनती करना। जब वह बहुत हाथ-पैर जोड़ने लगा, तब मैंने उसे माफ़ कर दिया।

हाथ-पैर मारना—परिश्रम करना। हमने बहुत हाथ-पैर मारे पर काम नहीं बना।

हाथ बँटाना—किसी काम में मदद देना। यह दस सेर दाने पीसने को हैं, बैठो ज़रा हाथ बँटा दो।

हाथ बाँधे खड़े होना—सेवा में बराबर उपस्थित रहना। तुम्हारे जैसे कई हमारे सामने रात-दिन हाथ बाँधे खड़े रहते हैं।

हाथ मलते रह जाना—पश्चात्ताप करते रहना। 'काफ़िले वाले गये मैं हाथ मलता रह गया।'

हाथ में आना, होना, पड़ना या चढ़ना—अधिकार या वश में आना, क़ब्ज़े में या क़ाबू में आना। सब वही ले जायगा, तुम्हारे हाथ में कुछ भी न आयगा। अब तो वह हमारे हाथ में है जैसा कहेंगे वैसा करेगा। "हानि, लाभ, जीवन, मरण, यश, अपयश विधि हाथ।"

हाथ लगना—(१) प्राप्त होना, (२) आरंभ होना, शुरू किया जाना, (३) योग देना, (४) छू जाना। अभी तक वह किताब हमारे

हाथ नहीं लगी। जब काम में हाथ लग गया, तब हुआ समझो। जिस काम में तुम्हारा हाथ लगता है, वही चोपट हो जाता है। तुम्हें तो ज़रा हाथ लग जाय, बस तुम चीख पड़ते हो।

हाथ साफ़ करना—(१) खूब खाना, (२) बेईमानी से लेना, उड़ा लेना, (३) मारना। रसगुल्ले न सही, लड्डुओं पर ही हाथ साफ़ करेंगे। हज़रत चले थे हमारी ही घड़ी पर हाथ साफ़ करने। लाला घर में औरत पर तो खूब हाथ साफ़ करता है, पर बाहर निकलते ही उसकी धोती ढीली हो जाती है।

हाथों के तोते उड़ जाना—अकस्मात् शोक-समाचार सुनकर त्रस्त हो जाना। फेल होना सुनते ही उसके हाथों के तोते उड़ गये।

हाथोंहाथ बिकना या उड़ना—बहुत जल्दी बिकना। "लोकोक्तियाँ और मुहावरे" के पहले चार संस्करण तो हाथों-हाथ बिक गये, यह पाँचवाँ संस्करण आप के हाथ में है।

हामी भरना—स्वीकार करना, मंज़ूर करना। आप इस बात की हामी भरिए कि इससे जो नुकसान होगा उसके जिम्मेदार आप होंगे, तो मैं इसे आज ही नौकर रख लेता हूँ।

हिसाब करना—जो जिम्मे आता हो उसे दे देना। बाबूजी हमारा हिसाब कर दीजिये, अब हम नौकरी न करेंगे।

हुक्का-पानी बंद करना—बिरादरी से बहिष्कृत करना। पंचायत ने बहुसम्मति से फैसला किया कि शराब पीने वालों का हुक्का-पानी बंद किया जायगा।

हुक्म चलाना—आज्ञा देना। बैठे-बैठे हुक्म चलाते हो, खुद जाकर क्यों नहीं करते।

हृदय में गुदगुदी उठना—मन में प्रसन्न होना। इतना सुनते ही कि वे आज आयँगे कमला के हृदय में गुदगुदी उठने लगी।

होश उड़ना या जाता रहना—भय या आशंका से चित्त

व्याकुल होना, सुधबुध भूल जाना। बंदूक को देखते ही उसके होश उड़ गये।

होश ठिकाने होना—बुद्धि ठीक होना, दंड पाकर भूल का पछतावा होना। वह जब मार खायगा, तभी उसके होश ठिकाने होंगे।

होश सँभालना--सयाना होना, बालिग होना। मैंने जब से होश सँभाला है, खद्दर ही पहनता हूँ।

दूसरा भाग

लोकोक्तियाँ

अंडा सिखावे बच्चे को कि चीं चीं मत कर—जब कोई छोटा बड़े को उपदेश देने लगे तब कहा जाता है। वह कल का बच्चा जिसने कभी घर से बाहर पैर नहीं रक्खा, मुझे दुनियाँ के व्यवहार बताने लगा; मैंने उसी समय उसके मुँह पर सुना दिया अंडा सिखावे......।

अंडे होंगे तो बच्चे बहुतेरे होंगे—पूँजी बनी रहे तो ब्याज बहुत आ जायगा। अरे सूद की दर ज्यादा न देख, पर रुपया जमा करने से पहले यह देख कि बैंक कैसा है; ध्यान रख अंडे होंगे......।

अंत बुरे का बुरा—बुरे का अंत बुरा है। जो किसी का बुरा करता है अन्त में उसका बुरा होता है। उसने अपनी विधवा भौजाई का सब माल लूट कर उसे घर से निकाल दिया था, आज वह स्वयं इधर-उधर हाथ फैलाता फिरता है: सच है अंत बुरे......। इसी प्रकार 'अंत भले का भला' भी कहा जाता है।

अंधा क्या चाहे, दो आँखें—आवश्यक वस्तु अनायास मिल जाय तब। यदि आपको वह नौकरी मिल जाय तो? बस, अंधा......।

अंधी पीसे कुत्ता खाय—जब किसी के कमाये हुए धन का दूसरे ही उपयोग करें। हज़रत रात-दिन चक्की में जुटे रहते हैं और इधर निठल्ले साले अपनी बहन को साथ लेकर खूब चैन उड़ाते हैं, इन्हीं के बारे में किसी ने कहा है अंधी पीसे......। इसी अर्थ में 'अंधी बाँटे जेवरी पाछे बकरा खाय' भी कहा जाता है।

अंधा बाँटे रेवड़ियाँ फिर फिर अपनों ही को—अधिकार और सामर्थ्य मिलने पर स्वार्थवश अपने इष्ट-मित्रों और संबंधियों का ही उपकार करे तब। भाग्य से मिनिस्टर तो बन गये हैं पर क्या मज़ाल

जो एक पोस्ट (पद) भी किसी ग़ैर को मिल जाय, सब जगह नाती-पोते भर रखे हैं। इन्हीं के लिए किसी ने कहा है अंधा......।

अंधा सिपाही कानी घोड़ी विधि ने खूब मिलाई जोड़ी—जहाँ दो मनुष्यों में मेल हो और दोनों ही निकम्मे या ऐब वाले हों वहाँ कहा जाता है। पति देवता जैसे काले कलूटे थे वैसी ही मेम साहब मोटी और फूहड़ थीं। उनके स्वरूप का वर्णन कौन करे ? बस यही समझो अंधा सिपाही......।

अंधे को अंधा कहने से बुरा मानता है—कटु वचन सत्य होने पर भी बुरा लगता है। मैं मानता हूँ कि वह बिलकुल मूर्ख है, पर तुम भी तो लगे उसके मुँह पर ही कहने, तुम्हें इतना तो ध्यान रखना चाहिये कि अंधे को अंधा कहने से वह बुरा मानता है।

अंधे को अंधेरे में बहुत दूर की सूझी—जब कोई मूर्ख दूर-देशी बात कहे। अरे हमें-तुम्हें तो यह तरीका सूझा भी नहीं था, उस पागल ने खूब सुझा दिया; वास्तव में अंधे को अंधेरे में बहुत दूर की सूझी।

अंधों में काना राजा—मूर्खों में एक अल्पज्ञ भी सर्वज्ञों की-सी प्रतिष्ठा पाता है। प्राज्ञ परीक्षा पास की और प्रचारक बन गया। दो-चार संस्कृत के श्लोक बोलता है, लोग समझते हैं बड़ा भारी पंडित है; क्यों न हो अंधों में.....।

अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा—जहाँ मालिक मूर्ख होता है, वहाँ अंधेर ही अंधेर रहता है।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता—बड़ा काम एक आदमी से नहीं हो सकता। महात्मा गांधी अकेले क्या कर सकते हैं, यदि आप सब लोग भी साथ दें तभी इस आन्दोलन में सफलता हो सकती है, अकेला......।

अक्ल बड़ी कि भैंस—शरीर में बड़ा या बलवान होने से बुद्धि का ज्यादा होना अच्छा है।

अक़्लमंद को इशारा मूर्ख को तमाचा—बुद्धिमान ज़रा-से समझाने पर समझ जाता है, और मूर्ख बिना मारे नहीं समझता। तुमने आते ही नरेन्द्र को तो दो चपत जमा दिये और जगदीश को कुछ नहीं कहा। भाई—जानते नहीं अक़्लमंद को ......।

अटका बनिया देय उधार—दबा हुआ आदमी सब कुछ करता है।

अति भक्ति चोर का लक्षण—ढोंगी मनुष्य सदैव छली होता है।

अति सर्वत्र वर्जयेत्—सीमा के बाहर कोई काम नहीं करना चाहिए।

अधजल गगरी छलकत जाय—ओछे आदमी दिखावा बहुत करते हैं। पाँच बार विशारद में फेल हुए हैं और दिखाते हैं यों जैसे बड़े धुरंधर पंडित हैं, सच है अधजल......।

अधेला न दे अधेली दे—जब कोई स्वयं थोड़ी सी वस्तु भी न दे पर दबाव में आकर उसे अधिक देनी पड़े तब कहा जाता है। पटवारी ने दो पत्ते साग माँगा, न दिया, अब जब मुकद्दमा बना तो पचास रुपया देकर पिंड छुड़ाया, आखिर जाट है न, अधेला......।

अनमाँगे मोती मिले माँगे मिले न भीख—संतोषी और भाग्यवान् को बैठे बिठाये सब कुछ मिल जाता है, लोभी और अभागे को परिश्रम करने पर भी कुछ नहीं मिलता। क्यों भाई रमेश, उनके घर तो लड्डू पहुँचाने जा रहे हो और हम माँग रहे तब भी नहीं देते। रमेश—हाँ भाई, अनमाँगे......।

अपना दूर से सूझता है—समय पड़ने पर ही अपना याद आता है।

अपना पैसा खोटा तो परखैया का क्या दोष—अपने ही लोग बुरे हों तो दूसरे का क्या कसूर ?

अपना लाल गँवाय के दर दर माँगे भीख—अपनी वस्तु लापरवाही में गँवाकर दूसरों के आगे हाथ पसारने पर कहा जाता है।

अपना वही जो आवे काम—मित्र वही है जो समय पर काम

आवे। इस विपत्ति के समय जब उन्होंने मुझे पूछा तक नहीं तब मैं उन्हें अपना कैसे कह सकता हूँ। हम तो यही समझते हैं कि अपना वही......।

अपना हाथ जगन्नाथ—बड़ी स्वच्छन्दता से किसी वस्तु को लेने पर। चलो भाई, उठो, लालाजी ने मिठाईवाले कमरे की चाबी दे दी है, अब तो बस अपना......

अपनी-अपनी खाल में सब मस्त हैं—अपनी-अपनी दशा में सब प्रसन्न हैं।

अपनी करनी पार उतरनी—जैसा करोगे वैसा फल पाओगे।

अपनी गरज़ को लोग गधा चराते हैं या अपनी गरज़ बावली होती है—स्वार्थ के लिए मनुष्य नीच काम भी करते हैं। क्या बात है आज-कल प्रोफ़ेसर साहब रात-दिन तुम्हारे यहाँ चक्कर लगाते रहते हैं? अरे भाई अपनी गरज़......।

अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग—सब मिलकर काम न करें तब। इस संस्था का शीघ्र ही नाश होगा; कोई नियम नहीं, कोई अध्यक्ष नहीं, सब मुखिया बनते हैं। यहाँ तो बस अपनी......।

अपनी पगड़ी अपने हाथ—अपनी इज़्ज़त अपने हाथ होती है।

अपनी बुद्धि पराया धन कई गुना दीखता है—क्यों भाई, तुम्हें तो यहाँ नौकरी करते बहुत दिन हो गये, अब तो तुमने खूब रुपये जमा कर लिए होंगे। दूसरा—हाँ भाई, अपनी बुद्धि......।

अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है—अपने घर पर निर्बल भी बलवान होता है।

अपनी नाक कटे तो कटे दूसरे का सगुन तो बिगड़े—दुष्ट लोग दूसरे का नुकसान करने के लिए अपना भी नुकसान कर लेते हैं।

अपने दही को खट्टा कौन कहता है—अपनी चीज़ को कोई ख़राब नहीं कहता।

अपने पूत को कोई काना नहीं कहता—अपनी चीज़ को कोई

खराब नहीं कहता। भाई तुम्हारी चीज़ ही सबसे अच्छी है और ये सब खराब हैं, सच है अपने पूत को......।

अब पछताये होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत—पश्चात्ताप करना व्यर्थ है। फेल होकर रोता है, जब पढ़ने के दिन थे तब तो मौजें उड़ाता रहा अब......।

'आछे दिन पाछे गये किया न हरि सों हेत,
अब पछताये होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत'।

अबरा की जोरू (गरीब की लुगाई) सबकी भौजाई—गरीब को सब दबा लेते हैं।

अभी तो तुम्हारे दूध के दाँत भी नहीं टूटे—अभी तुम बच्चे हो, अभी तुमने दुनिया नहीं देखी।

अमीर को जान प्यारी गरीब को दम भारी—अमीर को जान प्यारी होती है और गरीब को जान भारी होती है।

अरहर की टट्टी गुजराती ताला—तुच्छ वस्तु की सँभाल में अधिक व्यय करने पर। अरे, दो आने की किताब, और आठ आने की जिल्द बँधवा लाये हो, तुमने तो यह बात की, कि अरहर की......।

अलखामोशी नीमरज़ा (मौनं सम्मति लक्षणम्)—चुप रहना स्वीकृति-तुल्य है।

अल्पाहारी सदा सुखी—थोड़ा खानेवाला कभी बीमार नहीं होता

अशरफ़ियाँ लुटें और कोयलों पर मोहर—बड़ी रक़म खर्चते समय तो आगा-पीछा न देखना किन्तु छोटी-छोटी रक़मों का पूरा-पूरा हिसाब रखना। क्लब में जाकर बीस-बीस रुपये की शराब उड़ा आते हैं और हम से पैसे-पैसे का हिसाब माँगते हैं: कमाल है इन बाबूजी की अक़्ल पर, अशरफियाँ.....।

अस्सी की आमद चौरासी का ख़र्च—आमदनी से ज्यादा ख़र्च होना। एक—क्यों भाई, इनको ४००) तो मासिक वेतन मिलता है, पर

जब देखो तब उधार ही माँगते फिरते हैं। दूसरा—उधार न माँगें तो करें क्या? यहाँ तो अस्सी की आमद......।

आँख और कान में चार अंगुल का फर्क है—देखने और सुनने में बड़ा अन्तर है, बिना देखे किसी पर विश्वास न करना चाहिए। एक—कभी देखा तो नहीं, पर हाँ सुनते हैं, रात को यहाँ एक भूत आया करता है। दूसरा—आँख और......।

आँख न दीदा काढ़े कसीदा—यदि कोई ऐसा काम करे जिस के लिए उसमें योग्यता न हो तब। इस छोकरे से फोटो खिंचवाओगे? इसने तो कभी कैमरे की शक्ल भी न देखी होगी। आँख न दीदा......।

आँख बची माल दोस्तों का—अपनी वस्तु की सावधानी स्वयं करनी चाहिए।

आँख से दूर दिल से दूर—दूर रहने से मुहब्बत नहीं रहती।

आँख के अंधे नाम नयनसुख—गुण के विरुद्ध नाम होने पर। अपने आपको लिखते तो हैं राज-ज्योतिषी, पर अभी तक इन्होंने एक प्रश्न का भी ठीक उत्तर नहीं बताया। सच है आँख के......।

आँखों देखी कानों सुनी—निश्चित बात।

आँधी के आम—सस्ती चीज़।

आँसू एक नहीं कलेजा टूक टूक—दिखावटी रोना।

आई तो रोज़ी नहीं तो रोज़ा—रोज़गार मिल गया तो दिन सुख से बीतना नहीं तो भूखों मरना। आप ठहरे सेठ लोग, न चिन्ता न फिकर, हम मज़दूरों का क्या है, आई तो... ...।

आई है जान के साथ जायगी जनाज़े के साथ—जो आफत मरते दम तक न छूटे।

आगई तो ईदबरात न आई तो जुम्मेरात—पैसा पास हुआ तो अच्छा खाना खायँगे नहीं हुआ तो रूखा सूखा ही सही।

आग लगने पर कुआँ खोदना—विपत्ति उपस्थित होने पर उस का प्रतिकार सोचना।

आगे कुआँ पीछे खाई—दोनों ओर विपत्ति का होना। वहाँ जाता हूँ तो इनकी झिड़कें खानी पड़ती हैं, अपमानित होना पड़ता है, नहीं जाता तो सारा काम बिगड़ जाता है, क्या करूँ समझ नहीं आता, यहाँ तो आगे......।

आगे दौड़ पीछे चौड़—जो नया पाठ पढ़ता जाय और पिछला भुलाता जाय, उसके बारे में कहा जाता है।

आगे नाथ न पाछे पगहा सबसे भला कुम्हार का गदहा—कोई नाती रिश्तेदार न होना। स्वामी जी का कौन खाने वाला बैठा है? उनको तो दो रोटी इस वक्त चाहिए, दो रोटी उस वक्त। उनका तो आगे नाथ......।

आज किधर का चाँद निकला है—आज क्या नई बात हुई है? जब कोई बहुत दिनों बाद मिलता है तब या जब कोई नया काम करता है तब ऐसा कहते हैं।

आज़ादी खुदा की नियामत है—स्वतन्त्रता ईश्वरीय देन है।

आटे का चिराग़, घर रक्खूँ तो चूहा खाय बाहर रक्खूँ तो कौवा ले जाय—जब बचाव की कोई सूरत न हो तब। करूँ तो क्या करूँ, काम पर न जाऊँ तो नौकरी छूटती है और बाज़ार में निकलता हूँ तो कर्जदार पल्ला खींचते हैं, हमारी तो वही दशा हुई, आटे......।

आटे के साथ घुन भी पिसता है—दोषी के साथ रहने से निर्दोष भी मारा जाता है।

आती लक्ष्मी को कौन लात मारता है—हाथ आते हुए धन को कोई नहीं छोड़ता।

आदमी की दवा आदमी है—आदमी को आदमी ही सुधारता है। हज़रत से रोज़ मिन्नतें करते थे कि व्यर्थ ही गरीबों को न सताया

करो, पर उनके कान पर जूँ भी न रेंगती थी। आज जब कल्लू पहलवान ने गुस्से में आकर उनकी गर्दन पकड़ ली, तब हज़रत लगे गिड़गिड़ाने। सच है आदमी की दवा आदमी ही है।

आदमी जाने बसे सोना जाने कसे—सोना कसौटी पर कसे जाने से तथा आदमी पास रहने से पहचाना जाता है।

आदमी मुश्किल से मिलता है—सच्चा और ईमानदार आदमी मिलना कठिन है।

आधा तीतर आधा बटेर—एक चीज़ में दो बातों का समावेश करना और दोनों का अधूरा रहना। हंटिंग कोट बनाया था तो ऊपर यह जेब क्यों लगा दी? वाह मियाँ दर्जी! खूब बनाया, आधा......

आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे—ज़्यादा लालच करने से हानि होती है। हाथ आई चीज़ को छोड़ कर और अधिक पाने के लालच में दौड़ने तथा आई हुई चीज़ को भी गवाँ बैठने पर यहा जाता है।

आप काज महाकाज—आप करने से ही काम ठीक होता है। नहीं बन सकती थीं तो पहले कहना था, तुमने तो सारे फूलों का सत्यानाश कर दिया। इससे अच्छी मालाएँ तो मैं स्वयं बना सकती थी। सच कहा है, आप......

आप भला तो जग भला—भले को सब भले ही दीखते हैं एवं भले के साथ सब भलाई ही करते हैं। जिसे आप एक दफा ठगेंगे वह आपको दस बार ठगने की कोशिश करेगा, और जिसके साथ आप एक बार भलाई करेंगे वह आपका दास बन कर रहेगा, यह तो बनी बनाई बात है, आप........

आप मरे जग परलै—मरने के बाद की चिन्ता न करने पर। क्यों बीमा करावें? क्यों हर साल व्यर्थ दो सौ रुपया कंपनी को दें? क्या पता हमारे मरने के बाद क्या होगा। हम तो यही जानते हैं कि आप...।

आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता—आप करने से ही काम ठीक होता है। एक—मुझे तो भाई दूसरों के नोट्स पढ़ने में मज़ा नहीं आता, चाहे कितने ही अच्छे हों। जब तक आप माथा न मारूँ विश्वास नहीं होता। दूसरा—तो किसी ने यों ही थोड़े कहा है कि आप मरे.........

आप हारे बहू को मारे—जो अपना गुस्सा बेकसूर पर उतारे। रोज़ शीशा मेज़ पर धरा रहता था, पर आज बाबू जी से टूट गया है तो सवेरे से हमारे गिर्द हो रहे हैं कि शीशा मेज़ पर क्यों रखा था? यह तो वही हुआ कि आप.........

आपही मियाँ मँगते द्वार खड़े दरवेश—स्वयं सहायता चाहने वाला आदमी दूसरों को क्या सहायता देगा?

आब आब कर मर गये सिरहाने रक्खा पानी—किसी के सम्मुख ऐसी भाषा बोलना जिसे वह न समझता हो।

आ बला गले लग—जान बूझ कर विपत्ति में पड़ना। इन गर्मियों में कहीं काश्मीर की सैर करते, व्यर्थ में यह परीक्षा का भार सिर पर ले बैठे हो। तुमने तो वही किया कि आ बला......

आम के आम गुठली के दाम—किसी काम में दुगुना लाभ होना। काश्मीर जाते, कोई पुस्तक लिखते, सैर भी हो जाती और कुछ पैसे भी मिल जाते, आम के......

आम खाने से काम पेड़ गिनने से क्या काम—मतलब की बात ही करनी चाहिए बिना मतलब की नहीं। तुम्हें साड़ी चाहिए थी, मिल गई। कहाँ से आई, कितने की आई, इससे तुम्हें क्या? तुम्हें आम खाने......

आमों की कमाई नींबू में गवाँई—एक वस्तु की आमदनी दूसरी पर खर्च हो जाने पर। लाभ क्या खाक हो? १०००) कमाया था, सारा मुकद्दमे पर लग गया, आमों की......

आया कुत्ता खागया तू बैठी ढोल बजा—आँखों के सामने से सब कुछ लुट गया और तुम देखते ही रहे।

आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास—आये थे किसी और महत्त्वपूर्ण काम के लिए और लगे कुछ और ही तुच्छ सा काम करने।

आया है सो जायगा राजा रंक फ़कीर—अमीर-ग़रीब सब एक-न-एक दिन मर जायेंगे।

आये की खुशी न गये का ग़म—संतोषी मनुष्य है......।

आसपास बरसे दिल्ली पड़ी तरसे—जो चाहता है उसे तो मिले न, दूसरों को मिले। इस भिखमंगी को तो देखो, चार चार बच्चे लिये फिरती है, सेठ-साहूकार लाख पुण्यदान करते हैं, उनके घर एक भी पुत्र नहीं होता। प्रभु की लीला है न, आस पास......।

आहारे व्यौहारे लज्जा न कारे—भोजन और लेनदेन में लज्जा न करनी चाहिये......।

इक नागिन अरु पंख लगाई—जो स्वभाव से ही भयंकर हो उसकी भयंकरता यदि किसी कारण-वश और भी बढ़ जाय तब। वह वैसे ही दिन भर नौकरों को गालियाँ देता रहता है, रात को तो शराब भी पी आया था, बस फिर तो कहना ही क्या इक नागिन...। ऐसे ही खुशी के अर्थ में 'इक तो बुढ़िया नाचनी दूजे घर भा नाति' बोला जाता है।

इतना नफ़ा खाओ जितना आटे में नोन—थोड़ा नफ़ा ही खाना चाहिए।

इस घर का बाबा आदम ही निराला है—इस घर की सभी बातें निराली हैं।

ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया—भाग्य की विचित्रता पर। कई झोंपड़ियों में पड़े सड़ते हैं, कई महलों में पड़े गुलछर्रे उड़ा रहे हैं, ईश्वर की......।

उखली में सिर दिया तो मूसलों का क्या डर—जब किसी

कठिन काम करने का व्रत ले लिया तो फिर उसमें आने वाली विपत्तियों से क्या डरना। पिकेटिंग करने जा तो रहे हो पर आज खूब लाठी बरसेगी। अच्छा! जब देश पर बलिदान होने को तैयार हो गये हैं तो डर काहे का, उखली में.......।

उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई—प्रतिष्ठा भंग हो जाने पर जब कोई निधड़क हो जाता है तब। मान-मर्यादा तो उसी दिन बहा दी थी जिस दिन प्रेम किया था, अब कोई पड़ा निन्दा करे, हमारा क्या बिगड़ता है, उतर......।

उदरनिमित्तं बहुकृतवेषा—पेट के लिए बहुत से रूप बनाने पड़ते हैं।

उधार का खाना और फूस का तापना बराबर है—जैसे फूस की आग ज्यादा देर तक नहीं टिकती वैसे ही उधार लेकर खाना भी अधिक दिनों तक नहीं चलता।

उधार दिया गाहक खोया—जब दुकानदार उधार दी हुई वस्तु के पैसे माँगेगा तब ग्राहक पास फटकेगा ही नहीं।

उन्नीस-बीस का तो फ़र्क होता ही है—संसार में दो चीज़ें बिलकुल एक-सी नहीं होतीं, थोड़ा बहुत फर्क होता ही है।

उपजहिं एक संग जल माहीं, जलज जोंक जिमि गुण बिलगाहीं—एक मनुष्य की सब संतानें एक-सी स्वभाव की नहीं होतीं।

उलटा चोर कोतवाल को डाँटे—अपना अपराध स्वीकार तो न करना, उलटा पूछनेवाले पर दोष लगाना। मेज़ पर न रखता तो क्या तुम्हारे सिर पर रखता? एक तो पच्चीस रुपये की घड़ी गायब कर ली और दूसरे नुकता-चीनी! आया है चालाक! हुँ, उलटा......।

उलटे बाँस बरेली को—उलटा काम करना।

ऊँची दुकान फीका पकवान—तत्व कुछ न हो आडंबर बहुत हो।

ऊँट किस करवट बैठता है—देखें क्या फैसला होता है। फैसले

की बाट जोहते-जोहते कई दिन हो गये, पर अभी पता नहीं कि ऊँट......।

ऊँट की चोरी और झुके-झुके—बड़े काम छिपकर नहीं किए जा सकते हैं। जब कोई पूछता है तो झेंपते क्यों हो? स्पष्ट कह दो कि सिनेमा जा रहे हैं। यह तो नहीं हो सकता कि बाबू जी को तुम्हारे जाने का पता न लगे, आज नहीं तो कल पता लग जायगा, सो यह ठीक नहीं कि 'ऊँट की......।'

ऊँट के मुँह में जीरा—बहुत खाने वाले को थोड़ी सी चीज़ दी जाने पर। अरे, इन चौबे जी को केवल दो कचौड़ी दीं? अरे ये तो ऊँट के मुँह में जीरा है।

ऊँट रे ऊँट तेरी कौन-सी कल सीधी—जिसमें कपट ही कपट भरा हो या बेडौल आदमी पर भी। किसी ने कहा था कि 'ऊँट रे...' सा तुम हो, जो माँ को धोखा देने से भी नहीं रुके, औरों की तो बात ही क्या?

ऊधो का लेना न माधो का देना—निश्चिंत होना। हम से तो ये फकीर अच्छे, टाँग पसार कर सोते हैं, ऊधो......।

एक अंडा वह भी गंदा—किसी वस्तु का न होने के बराबर होना। आपसे इतनी पुस्तकें माँगी पर केवल यह एक ही निकली और इसका भी प्रथम भाग नहीं है, यह तो वही हुआ—एक अंडा......।

एक अनार सौ बीमार—वस्तु थोड़ी हो और माँग अधिक हो। मैनेजर—मुझे सचमुच खेद है कि जिस लड़के की आपने सिफ़ारिश की थी मैं उसे नहीं रख सका। बात यह थी कि आवेदन-पत्र इतने आये थे और सभी के साथ ऐसी ही सिफारिशें थीं। मैं हैरान था कि किसे रक्खूँ—यहाँ तो एक अनार......।

एक और एक ग्यारह होते हैं—एकता में बड़ा बल है। दो आदमी मिल कर ग्यारह आदमी का काम कर सकते हैं।

एक कहो दस सुनो—किसी को एक गाली दोगे तो वह तुम्हें दस गाली देगा।

एक के दूने से सौ के सवाये भले—माल की बिक्री अधिक होने में ही अधिक लाभ होता है। दुकानदार को चाहिये कि मुनाफ़ा थोड़ा लगाया करें, गाहक तो वहीं आते हैं जहाँ माल सस्ता मिले और जहाँ गाहक अधिक आयेंगे लाभ वहीं अधिक होगा। यह तो मानी हुई बात है कि एक के......।

एक चुप हज़ार को हराय—जो मनुष्य चुप रहता है उससे हज़ार बोलनेवाले हार जाते हैं।

एक तंदुरुस्ती हज़ार नियामत—धन से आरोग्यता कई गुना अच्छी है।

एक तो चोरी दूसरी सीनाज़ोरी—एक तो काम बिगाड़ना फिर आँख दिखाना।

एक तो करेला कड़वा दूसरा नीम चढ़ा—स्वाभाविक दोष में किसी कारणवश एक और दोष लगने पर। आप तो कंजूस था ही पर जो उसे पत्नी मिली है वह उससे भी बढ़कर मक्खीचूस निकली। वह औरों को नहीं देता था, पर स्वयं तो खाता था, पर देवी जी तो पेट पर पट्टी बाँधकर सोना पसंद करती हैं, वही बात हुई कि 'एक तो......।

एक थैली के चट्टे-बट्टे—सब एक बराबर हैं। क्या चर्चिल और क्या मैकडानल्ड, भारतवासियों के लिए ये सब एक थैली के चट्टे-बट्टे हैं।

एक दम में हज़ार दम—एक आदमी से हज़ारों का जीवन-निर्वाह होता है।

एक दिन मेहमान, दो दिन मेहमान, तीसरे दिन बलाए जान—मेहमानदारी एक दो दिन की होती है, रोज़ रोज़ की हो जाने से भारी पड़ जाती है।

एक न शुद दो शुद—एक तो विपत्ति है ही दूसरी और सही।

एक पंथ दो काज—एक उद्योग से दो काम सफल होने पर। इस अजायबघर में वनस्पति-विद्या, रसायन-विद्या, जन्तुविद्या, नर-शरीरविद्या आदि भिन्न-भिन्न विद्याओं के संबन्ध की सामग्री विद्यमान है। छुट्टी का दिन है, सैर भी कीजिए और कुछ सीखिए भी! एक पंथ दो काज हो जायँगे।

एक मछली सारे जल को गंदा करती है—एक की बुराई से सारा समूह कलंकित हो जाता है। जापान की किसी लायब्रेरी से एक भारतीय विद्यार्थी ने एक किताब चुरा ली, वह पकड़ा गया, तब से सभी भारतीय विद्यार्थियों का वहाँ जाना निषिद्ध हो गया, एक मछली......।

एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं—दो बलवान एक ही स्थान पर शासन नहीं कर सकते या एक स्थान पर नहीं रह सकते। चाणक्य ने तिलमिला कर कहा—वृषल! वृषल! राज्य-लक्ष्मी पाकर तुम उन्मत्त हो गये हो, तुमने मेरी आज्ञा के विरुद्ध काम किया है। आज से अपना राज्यभार सँभालो। हम जाते हैं, एक म्यान......।

एक हाथ से ताली नहीं बजती—यदि दोनों लड़ाके न हों तो कभी लड़ाई नहीं होती। तुमने उसे कुछ कहा न हो, उसने ऐसे ही तुम्हें मारा हो, यह हो नहीं सकता, क्योंकि एक हाथ से......।

ऐब करने को भी हुनर चाहिये—पाप का काम करने को भी कुशलता चाहिए।

ऐसे जीने से मर जाना अच्छा—जब आदमी बहुत दुखी हो या बहुत बेशर्मी का काम करे, तब कहा जाता है।

ऐसे बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देय—बेकार और बूढ़ा मनुष्य भारी मालूम होता है।

ओछे की प्रीति बालू की भीत—मूर्ख या नीच की मित्रता बहुत देर तक नहीं रहती है।

ओछे के मुँह लगना अपनी इज़्ज़त खोना—नीच मनुष्य के साथ से, या नीच मनुष्य के साथ झगड़ा करने से अपनी इज़्ज़त जाती रहती है।

ओस चाटे प्यास नहीं बुझती—जब किसी को इतनी थोड़ी वस्तु मिले जिससे उसकी कुछ भी तृप्ति न हो तब कहा जाता है। भाइयो, हमारा ध्येय पूर्ण-स्वराज्य है। ये छोटे-मोटे सुधार देकर गवर्नमेंट हमें चकमा देना चाहती है, पर आप समझ सकते हैं कि ओस......।

और बात खोटी सही दाल रोटी—दाल रोटी का ही यह सब धंधा है।

ककड़ी के चोर को फाँसी नहीं दी जाती—साधारण अपराध पर मौत की सज़ा नहीं दी जाती।

कंगाली में आटा गीला—विपत्ति पर विपत्ति पड़ने पर। उधर से नौकरी छूट गई, घर आया तो माता का देहान्त हो गया और कुछ दिन बाद सगाई भी छूट गई। बेचारे बुरी दशा हुई कंगाली... ..।

कढ़ाई से गिरा चूल्हे में पड़ा—एक विपत्ति से छूट कर दूसरी विपत्ति में पड़ना। उसका विद्यार्थी-जीवन बड़ा कष्टमय था, धनी घर में शादी हुई तो उसने समझा कि मेरे दिन फिरे हैं; पर उसकी पत्नी ऐसी दुष्ट निकली कि घर में रात-दिन जूत-पटाख ही रहती है। बेचारे की वह दशा हुई कि कढ़ाई......।

कण्टकेनैव कण्टकम्—शत्रु को शत्रु द्वारा ही नष्ट करना।

कद्र खो देता है हर बार का आना जाना—किसी स्थान पर बार बार जाने से—अधिक परिचय होने से—इज्जत नहीं रहती।

कभी घी घना, कभी मुट्ठी चना, कभी वह भी मना—जो मिल जाय उसी पर सन्तुष्ट रहना चाहिए!

कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर—समय पर एक को दूसरे को सहायता की आवश्यकता रहती है। सच है, कभी......।

कमान का निकला तीर और मुँह से निकली बात वापिस नहीं आती—जब बात मुँह से निकल जाती है तब फिर पीछे नहीं आती अतएव बात सोच समझ-कर करनी चाहिए।

करम हीन खेती करे, मरे बैल या सूखा पड़े—भाग्यहीन का कोई काम सिद्ध नहीं होता।

कर सेवा पा मेवा—बड़ों की आज्ञा पालन करने से लाभ होता है। साधु बोला—भाई! तुममें श्रद्धा और भक्ति तो है नहीं, बड़ों की हँसी उड़ाते हो और फिर कहते हो कि ये हमें कुछ बताते नहीं। भाई, यह तो बनी बनाई बात है कर सेवा पा मेवा।

करे कल्लू भरे लल्लू—एक अपराध करे और दूसरा दंड भुगते, तब।

करेगा सो भरेगा—जो अपराध करेगा वह दंड भुगतेगा। दिन भर ताश खेलता है, बहुतेरा मना किया है नहीं मानता। फेल होगा तो रोयेगा। हमारा कहना फ़र्ज था, कह दिया। अब इसकी मर्जी, करेगा...।

करम प्रान विश्व रचि राखा, जो जस करहिं सो तस फल चाखा या जैसी करनी वैसी भरनी—जो जैसा करेगा, वैसा ही फल पायेगा।

कलाल की दुकान पर पानी पियो तो भी शराब का शक होता है (मदिरा मानत है जगत दूध कलाली हाथ)—बुरी संगत में निर्दोष मनुष्य भी कलङ्कित हुए बिना नहीं रहता। माना कि तुमने कभी वैसा काम नहीं किया पर तुम दिन भर उन शोहदों के साथ फिरते तो हो इसलिए तुम्हारे चरित्र पर भी संदेह होना स्वाभाविक ही है कलाल की......।

कहाँ राजा भोज कहाँ गाँगू तेली—जिन दो व्यक्तियों में परस्पर तुलना न हो सके यदि उनमें कोई तुलना करे तब। माना कि वह बड़ा धनी है पर सेट हुकमचन्द से उसका क्या मुकाबिला? कहाँ राजा...।

कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा—जब कोई इधर-उधर की अनावश्यक बातों को इकट्ठा करके कोई व्यर्थ की चीज़ तैयार करता है तब कहा जाता है। 'क्षमा' पर निबन्ध लिखा है और भर रखे हैं दुनियाँ-भर के काम, क्रोध, मोह, लोभ! कहीं...।

कहने से करना भला—खाली कहने से काम करना अच्छा होता है। कहते हो शरबत लाया, लस्सी लाया, पर लाते-वाते कुछ नहीं, भाई जानते हो कहने से करना भला।

कहे से कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता—ज़िद्दी मनुष्य अपनी खुशी से काम भले ही करे, पर कहने से नहीं करता।

कागज़ की नाव नहीं चलती—बेईमानी से काम अधिक दिन नहीं चलता।

काटो तो खून नहीं—भय के कारण सन्न हो जाने पर।

काजल की कोठरी में कैसोहू सयानो जाय एक लीक काजल की लागिहै पै लागिहै—बुरे के साथ बैठने से कुछ न कुछ बुराई अवश्य होगी।

काज़ी जी दुबले क्यों शहर के अंदेशे से—जो अपना सोच न करके शहर-भर का सोच करता है उसे कहा जाता है।

काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती—ठगबाज़ी एक ही बार चलती है। अच्छी बात है, अब के तो हमें उसने रेशमी कह कर झूठा माल देकर लूट लिया है, आगे से हम भी उसके माथे न लगेंगे, काठ की...।

कान छिदाय सो गुड़ खाय—जो कष्ट उठाता है सुख भी वही पाता है। जज बन गया है तो क्या, मेहनत भी तो उसने कम नहीं की, तुम भी करो तुम भी जज बन जाओगे, कान......।

काबुल में क्या गधे नहीं होते—बुरा अंश सब जगह होता है। एक—मैं तो समझता था कि लाहौर में काम बहुत बढ़िया होगा इसी लिए इतना दूर चल कर आया था, पर इससे अच्छा काम तो हमारे गाँव में ही हो जाता। दूसरा—भाई लाहौर में हैं तो अनेक कारीगर पर सब का काम बढ़िया तो नहीं होता, भला काबुल में क्या गधे......?

काम का न काज का दुश्मन अनाज का—निठल्ले मनुष्य को कहा जाता है।

काम जो आवे कामरी का ले करे कुमाँच—जब कंबल से काम चल जाय तो रेशमी कपड़े लेकर क्या करेगा—अर्थात् जब सस्ती चीज़ से काम चल जावे तब मँहगी चीज़ पर क्यों पैसे खर्चें ?

काम प्यारा है चाम प्यारा नहीं—जब कोई नौकर ठीक काम नहीं करता तब कहा जाता है। सुनो भाई ! तुम्हारा मुँह देखने के लिए तुम्हें यहाँ नहीं रखा है, मेहनत से काम करना है तो रहो, नहीं तो अपनी राह लो, हमें तो काम......।

का वर्षा जब कृषि सुखाने—समय बीत जाने पर सहायता देना निरर्थक है।

काला अक्षर भैंस बराबर—अनपढ़ आदमी के लिए कहा जाता है। सेठ जी ने बड़े विनीतभाव से कहा—"महाराज ! आप जैसे महात्माओं की संगत से जो कुछ पाया है सो पाया, शास्त्रों की पूछो तो हमारे लिए तो काला अक्षर......"

किया चाहे चाकरी सोया चाहे घर (राखा चाहे मान)—दोनों काम एक साथ नहीं हो सकते।

कुएँ की मिट्टी कुएँ में ही लगती है—जहाँ से कमाई हुई हो यदि वह खर्च भी वहीं हो जाय तब कहा जाता है। इन दुकानों का किराया तो निःसंदेह चार-पाँच सौ रुपये सालाना आ जाता है। पर इतना ही प्रतिवर्ष इनकी मरम्मत आदि पर खर्च आ जाता है, कुएँ की...।

कुछ कमान झुके कुछ गोसा—झगड़े में दोनों दल थोड़ी-थोड़ी हानि सहें तो निपटारा होता है। यों तो फैसला नहीं होने का, तुम कहते हो मुझे सौ लेने हैं, यह कहता है मुझे अस्सी देने हैं। यों करो, दस-दस का घाटा दोनों सहो और नब्बे रुपया लेकर झगड़ा चुकाओ, कुछ.....।

कुछ खोकर ही अक्ल आती है—बिना ठोकर खाये मनुष्य की बुद्धि नहीं बढ़ती।

कुत्ता भी दुम हिला कर बैठता है—सफाई सब को प्रिय है, जब कोई मनुष्य सफाई न करे और ऐसे ही गंदे स्थान पर बैठ जाय, तब कहा जाता है।

कुतिया चोरों मिल गई पहरा किसका दे—जब रक्षक ही भक्षक हो जाता है तब कहा जाता है।

कुत्ते की दुम बारह वर्ष नल में रक्खी तो भी टेढ़ी की टेढ़ी—सहज कुटिल पुरुष कभी सीधा नहीं हो सकता। ऐसी शपथें यह कई बार कर चुका है, उपदेश का असर एक दो दिन रहता है फिर पीना शुरू कर देता है, कुत्ते की..।

कुत्तों के भोंकने से हाथी नहीं डरते—महापुरुष क्षुद्रों के बुरा भला कहने से क्षुब्ध नहीं होते। लोगों की क्या, वे तो महात्मा गांधी तक को दोष देते हैं, पर क्या इससे महात्मा जी अपने कर्तव्य से पराङ्मुख हो सकते हैं, कुत्तों के......।

कुत्ते को घी हज़म नहीं होता—ओछा आदमी संपत्ति या पद पा कर छिपा नहीं सकता। इसे सबइन्स्पेक्टरी क्या मिली, खुदाई मिल गई है। सारे शहर में ऊधम मचा रक्खा है। दूसरा—अरे भाई, तभी तो कहा है कि कुत्ते .....।

कुम्हार अपना ही घड़ा सराहता है—सब अपनी वस्तु को अच्छा बताते हैं। दुकानदार—ऐसा कपड़ा इस भाव कहीं नहीं मिलने का। ग्राहक—हाँ ठीक है, रहने दो, कुम्हार ....

कै हंसा मोती चुगे कै भूके मर जाहिं या सिंहबच्चा जो लंघना तो भी घास न खाय—प्रतिष्ठित मनुष्य प्रतिष्ठा के साथ ही समय व्यतीत करते हैं, उन्हें अपनी आन प्यारी होती है।

कोयला होय न ऊजला सौ मन साबुन धोय—मनुष्य चाहे जितनी स्वच्छता करे परन्तु उसके शरीर का रंग नहीं बदलता, या लाख उपाय करने पर भी नीच पुरुष अपना स्वभाव नहीं छोड़ता।

कोई मरे कोई जीवे सुथरा घोल बतासा पीवे—दूसरों से सहानुभूति न रखकर स्वार्थपरायण रहना। उनके भाई महीनों से चारपाई पर पड़े है पर उनको सूट बूट पहनने और सिनेमा-थियेटर देखने की पड़ी रहती है, उन्हें क्या कोई......।

कोउ नृप होय हमैं का हानी, चेरि छोड़ नहिं होउब रानी—किसी को भी लाभ हो, हमें तो कुछ मिलना ही नहीं। एक—क्यों भाई, तुम किसके लिए वोट इकट्टे कर रहे हो ? दूसरा—अरे भाई मुझे क्या पड़ी है जो अपना समय ख़राब करूँ। हमारे लिए दोनों एक से हैं, कोउ नृप......।

कोठी वाला रोवे छप्पर वाला सोवे—धनी प्रायः चिन्तित रहते हैं और ग़रीब निश्चिन्त। अजी धनी कौन से सुखी हैं, उन्हें उल्टी ज्यादा चिन्ता लगी रहती है। ग़रीब का क्या है जो कमाया खा लिया, न चोर का डर न बैरी का खतरा। सच कहा है, कोठी वाला......।

कोयले की दलाली में हाथ काले—बुरों के साथ मिलकर काम करने से कलंक ही लगता है, लाभ कुछ नहीं होता या किसी ऐसे सौदे पर कहा जाता है जिसमें लाभ कुछ न हो उलटा वक्त ही खराब हो। एक गुंडा पुलिस इंसपैक्टर से बोला—बस जनाब ! हम बाज़ आए, एक आपके कहने से हमने निरपराध स्वयंसेवक को पीटा, दूसरे आपकी नाराज़गी, हमारे हाथ क्या लगा ? हुँ कोयलों की ! दलाली...।

कौवा चला हंस की चाल अपनी चाल भी भूल गया—दूसरों की रीति का—बोली का—अनुकरण करने में अपनी रीति भी खो बैठना और जिसका अनुकरण किया वह भी पूरा न कर सकना।

क्या पिद्‌ड़ी क्या पिद्‌ड़ी का शोरबा—तुच्छ वस्तु से बड़ा कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। आपका कहना ठीक है, कपड़े बढ़िया पहनने चाहिएँ, पर हम कपड़े पहनें कि पेट भरें, लड़कों की फीसें भरें, कि

शौकीनी करें, पच्चीस रुपये तो सारी तनख्वाह है उसमें क्या क्या कर लें, भाई क्या...... ।

खग जाने खग ही की भाषा—जो जिस संगत में रहता है वह उसी का हाल जानता है। यह क्या जाने उपनिषद और दर्शन क्या होते हैं, दिन भर दुकान पर बैठा रहता है, इससे लट्ठे मलमल का भाव पूछ लो, भाई खग......।

खर को गंग न्हवाइये तऊ न छाँड़े छार—किसी का जातीय स्वभाव नहीं बदलता।

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है—जब कोई देखादेखी शौक करे तब या एक को देखकर दूसरा बिगड़े तब। तुम्हें तो हम बीच में खाना खाने के लिए छुट्टी दे दिया करें पर तुम्हारी देखा-देखी कल से दूसरे भी माँगेंगे तो, जानते हो—खरबूजे को..... ।

खरी मजूरी चोखा काम—पूरी मजूरी देने से काम अच्छा होता है। "जहँ राखन चहहुं व्यवहार, अधिक रखहु तहँ न्याय विचार।
लहु न भूल सकुच कर काम, खरी मजूरी चोखा काम॥"

खाओ वहाँ तो पानी पियो यहाँ—जल्दी काम करके आओ! लालाजी के मकान पर दो मन कोयले छोड़ आओ। लौटना बहुत जल्दी, बस खाओ वहाँ तो पानी यहाँ आ पियो।

खाक डाले चाँद नहीं छिपता—कीर्तिमान मनुष्य की निन्दा करने से उसकी कीर्ति में बट्टा नहीं लगता। उसने महात्मा गांधी के विषय में बुरा-भला कहा था, पर महात्माजी का उसमें क्या बिगड़ा, उस ने अपनी ही नीचता प्रकट की, खाक डाले......।

खात निबौरी (नीम के फल) दाख बतावें—अपने खाने-पीने तथा रहन-सहन को बड़ा ऊँचा दिखाना।

खाय सो पछताय न खाय सो पछताय—जो चीज़ ऊपर से रमणीय तथा भीतर से खराब हो उसके ग्रहण करने में पश्चात्ताप होता

है और छोड़ने में भी। साधु ने कहा—संसार के विषय-भोग इतने आकर्षक हैं कि पुरुष उनको तुच्छता जानकर भी उनसे सहज में छुटकारा नहीं पा सकता, ये तो दिल्ली के लड्डू हैं, खाय सो......।

खाइये मन भाता, पहनिये (हँडाइये) जग भाता—अपनी तबीअत का खाना चाहिये और जो दूसरों को पसंद आय वह पहनना चाहिए।

खाल ओढ़ाये सिंह की स्यार सिंह नहिं होय—रूप बदलने से गुण नहीं बदलता।

खिचड़ी माँगे चार यार, दही पापड़ घी अचार—ये चार चीज़ें खिचड़ी के साथ खाने में अच्छी लगती हैं।

खिलाये का नाम नहीं, रुलाये का नाम—पराये लड़के को खिलाने में कोई नेकनामी नहीं, रुलाने में बदनामी होती है।

खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे—शर्मिंदा होकर क्रोध करने पर। पहला—उसने मुझ से कहा था कि मैं कभी जुआ नहीं खेलता, कल मैंने उसे जुआ खेलते पकड़ लिया, पूछा—'क्यों भाई! यह क्या?' बस जनाब वह तो लाल-पीला हो गया और कहने लगा—'जा जा तुझे किसने बुलाया है।' दूसरा—और करता ही क्या, खिसियानी...।

खुदा गंजे को नाखून न दे—अनधिकारी को कोई अधिकार न मिलना चाहिये।

खुशामद से ही आमद है—खुशामद से ही काम बनता है।

खूँटे के बल बछड़ा कूदे—दूसरे की शह पर अकड़ना। आज रायसाहब ज़रा हाथ खींच लें तो देखो यह कैसी भीगी बिल्ली बन जाता है, जब तक वे इसकी मदद पर हैं वह जिस किसी को धमका लेता है। दूसरा—हाँ जी, खूँटे के......।

खूब गुज़रेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो—जब दो व्यक्ति एक स्वभाव के मिल जाँय तो बड़े आराम से गुज़रती है।

खेती खसम सेती—खेती या रोज़गार मालिक की निगरानी से ही ठीक रहता है।

खोटा बेटा और खोटा पैसा भी समय पर काम आता है—निकम्मी से निकम्मी चीज़ भी किसी न किसी समय बड़े काम आती है। मैंने यह पुराना गर्म कोट टाट समझ कर फेंक रक्खा था पर आज वर्षा में इसने बड़ा काम दिया, आज पता लगा कि खोटा...।

खोदा पहाड़ निकली चुहिया—बहुत परिश्रम करने पर थोड़ा सा लाभ हो तब। सुना था यहाँ कंपनी बाग़ बड़ा मशहूर है, चलते-चलते जूते घिस गये। वहाँ पहुँचे तो देखा—चीड़ के पेड़ और कुछ गेंदे के फूल; सब कहने लगे कि खोदा पहाड़......।

गंगा गये गंगाराम जमुना गये जमुनादास—जिस पुरुष का अपना कोई सिद्धांत न हो और जो जैसा समय देखे वैसा काम निकाल ले। यह भी कोई आदमी है, अपना तो इसका कोई मत नहीं गंगा गये...।

गंजी यार किसके, दम लगाया खिसके—स्वार्थी मनुष्य किसी के साथी नहीं होते, उनका काम खतम हुआ और चल पड़े। वह १५) लेने आया था मैंने ज्यों ही उसे रुपये दिये त्योंही उठ कर चल दिया। मैंने जब उसे कुछ देर बैठने को कहा तो बोला—गंजी यार...।

गधा खेत खाय और जुलाहा मारा जाय—अपराध एक करे और दंड कोई दूसरा भुगते तब। भला, मैंने तुम्हें क्या कहा था जो तुमने मेरी शिकायत की? लड़े तुम उससे, उसने गालियाँ दीं, मैंने क्या किया था? तुमने तो वही बात की कि गधा खेत......।

गधा धोने से बछड़ा नहीं होता—कितना भी यत्न करो मनुष्य का स्वभाव नहीं बदलता। आप तो व्यर्थ परिश्रम कर रहे हैं, वे हिन्दुओं के शुरू से शत्रु चले आये हैं और सदा शत्रु रहेंगे। आप चाहे कितना उपदेश करें किन्तु उनका जब दाँव लगेगा वे हिन्दुओं का बुरा करने से नहीं चूकेंगे, गधा......!

गये थे रोज़ा छुड़ाने उलटी नमाज़ गले पड़ी या गई माँगने पूत को खो आई भरतार—एक कष्ट से छुटकारा पाने की कोशिश में पहला कष्ट तो न मिटना वरन् एक और कष्ट आ पड़ना। मैं गया था एक हफ्ते की छुट्टी लेने, पर छुट्टी तो दूर रही, उलटा साहब ने कहा कि तुम्हें आज रात खजाने के साथ लाहौर जाना होगा; यह खूब हुआ, गये थे......।

ग़रीब तेरे तीन नाम झूठा, पाजी, बेईमान—गरीब को लोग बेधड़क इन विशेषणों से अलंकृत कर देते हैं, या गरीब आदमी को सब तरह के दोष लगाये जा सकते हैं।

ग़रीबों ने रोज़े रक्खे तो दिन ही बड़े हो गये—गरीब को सदा दुःख ही दुःख है।

गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त—जिसका काम है वह तो उसके लिए कोई यत्न न करे और दूसरा उसके लिए व्यग्रता दिखावे। भला तुम्हें कोई पूछे, तुम इतना क्यों ज़ोर देते हो? देना हमें, लेना लाला रामकृष्ण को, वे हम से कभी माँगते नहीं। हमने उनसे कहा था कि एक हफ्ते तक दे देंगे, उन्होंने मान भी लिया, फिर तुम्हें यहाँ आकर तू-तू मैं-मैं करने को किसने कहा। वाह, गवाह......!

गाडर पाली ऊन को लागी चरन कपास—किसी काम के लिए किसी को रखा जाय और उलटा वही नुकसान पहुँचाने लगे तब कहा जाता है। हमने इसे अपने यहाँ इसलिए रखा था कि वह बच्चों को पढ़ा भी देगा साथ ही कारोबार में भी मदद देगा, पर यह तो उलटा हमारे ग्राहकों को ही भड़काने लगा। यह तो वही हाल हुआ—गाडर पाली ऊन को लागी चरन कपास।

गाल कट जाए पर चावल न उगले—हानि होने पर भी हठ न छोड़ना। एक—बस रहने दो, तुम से यह ताला नहीं खुलने का, ख़ामख़ाह चाकू भी तोड़ लिया है। दूसरा—आप हट जाइये, मैं अब

इसे खोलकर ही छोड़ूँगा। पहला—लो, तुमने तो हाथ भी काट लिया, तुम भी तो वैसे ही हो, कि गाल कट......।

गीदड़ की शामत आये तो गाँव की तरफ भागे—जब कोई विपत्ति आनी होती है तो बुद्धि पहले ही उलटी हो जाती है।

गुड़ खाय गुलगुलों से परहेज़—बनावटी परहेज़ करने पर।

गुड़ दिये मरे तो ज़हर क्यों दें—समझाने से मान जाय तो दंड क्यों दें?

गुड़ न दे गुड़ की सी बात तो करे—चाहे कुछ न दे पर ज़बान से तो मीठी बोले।

गोकुल से मथुरा न्यारी—परस्पर सम्बन्ध न होना।

गोद में बैठ कर आँख में उँगली—उपकार करने वाले का बुरा करना। वाह! यही मनुष्यता है? तुम्हें पाल पोस कर इतना बड़ा किया, तुम्हारी शादी की, और आज हमारी ही संपत्ति छीनने के लिए अदालत में अर्ज़ी-पर्चे दाखिल कर दिये, खूब! गोद में... इसी को कहते हैं।

गोद में लड़का शहर भर ढिंढोरा—पास रक्खी हुई वस्तु को खोया जान इधर-उधर ढूँढना।

घड़ी भर की बेशर्मी दिन भर का आराम—साफ इनकार करने में पहले थोड़ा मन ज़रूर दुखता है, पर पीछे सुख ही सुख रहता है। एक—भाई! मुझ से तो कोई चीज़ माँगता है तो मैं इनकार नहीं कर सकता। अब वह साइकल ले गया है, मुझे खुद जाना था, उसकी प्रतीक्षा करते हुए आधा घंटा बीत गया है। दूसरा—इसीलिए तो मैं साफ इनकार कर देता हूँ, कोई मुँह फुलाता है तो फुलाता रहे। अपना तो घड़ी-भर...।

घड़ी में तोला घड़ी में माशा—जो ज़रा-सी बात पर खुश हो जाय और ज़रा-सी पर नाराज़ हो जाय। तुमने जाकर कहा, अजी ये बड़े अच्छे आदमी हैं, ऐसे हैं वैसे हैं, तो प्रसन्न होगये। थोड़ी देर में

कोई और चला गया और बोला, अजी यही हैं जो उस दिन जुआ खेलते पकड़े गये थे, बस एकदम गुस्से में लाल-पीले हो गये—ये भी कोई आदमी है, घड़ी में......

घर की आधी भली बाहर की सारी कुछ नहीं—आलसी आदमी कहते हैं, जिनसे परदेश जाकर कुछ रोज़गार नहीं होता। एक—पच्चीस रुपये में तुम्हारा क्या बनता होगा, क्यों नहीं बंबई चले जाते? वहाँ तुम पच्चीस रुपये एक दिन में कमा सकते हो। दूसरा—अजी, अच्छा है, गुज़ारा चल रहा है, बाहर जाऊँ कोइ काम बने, न बने इसलिए घर......

घर की मुर्गी दाल बराबर—जो वस्तु घर में हो उसकी उतनी कद्र नहीं होती। यह घर में बनी है इसलिए नाक सिकोड़ता है, बाज़ार से यही बर्फी लेने जाओ तो एक आने की एक टुकड़ी माथे पर मारते हैं। पर बात यह है न घर की...

घर का जोगी जोगड़ा आन गाँव का सिद्ध—चाहे कितना भी योग्य क्यों न हो पर आदमी की अपने देश में उतनी कद्र नहीं होती जितनी थोड़ी योग्यता होने पर भी परदेश में। यहाँ स्वामी रामतीर्थ को कोई विरला ही जानता है, पर अमेरिका में उनका नाम लो तो लोग तुम्हें आँखों पर बैठायँगे, सच है घर का...

इसी अर्थ में '**घर का ब्राह्मण बैल बराबर**' भी कहा जाता है।

घर का भेदी लंका ढावे—आपस में फूट होने से सब प्रकार की हानि होती है।

घर आये कुत्ते को भी नहीं निकालते—मेहमान कैसा भी हो उसकी खातिर करनी चाहिये। जब कोई किसी को अपने घर आने पर आश्रय न दे तब कहा जाता है।

घर की खेती—आसानी से मिलने वाली चीज़।

घर की खाँड किरकिरी लागे चोरी का गुड़ मीठा मीठा—

जब अपनी अच्छी चीज़ की भी तारीफ़ न की जाय तब कहते हैं।

घर खीर तो बाहर खीर—बड़े आदमियों का—जिनके पास अपने घर में सब कुछ है—बाहर भी आदर होता है।

घर-घर शादी घर-घर गम—सुख-दुख सभी घरों में होता है।

घी कहाँ गया खिचड़ी में—अपनी वस्तु अपने ही काम आ जाय तब। आपने बेशक एक रुपये के टिकट कल ही लाकर दिये हैं पर मैंने निजू काम में तो लगाये नहीं, सब आपके दफ्तर की चिट्ठी-पत्री में ही खतम हो गये हैं, सो मैं क्या बताऊँ, भला घी कहाँ...।

घी खाया बाप ने सूँघो मेरा हाथ—दूसरों की कीर्ति पर डींग मारने वालों पर। जब कोई नया आविष्कार होता है तो हम बड़े गर्व से कहते हैं, अजी यह तो हमारे वेदों में पहले ही मौजूद है। वेदों में है तो किस काम का? हम लोग स्वयं तो कुछ करते-धरते हैं नहीं और दावा करते हैं हमारे वेदों में सब कुछ है। यह तो वही बात हुई, घी खाया......

घोड़ा घास से यारी करे तो खाय क्या—जो जिस चीज़ का व्यापार करता है यदि उसमें मुनाफ़ा न ले तो उसका खर्च कैसे चले? या मेहनताना माँगने में लिहाज़ कैसा?

घोड़े का गिरा सँभल जाता है नज़रों का गिरा नहीं सँभलता—ऐसे काम से बचना चाहिए जिसमें लोगों की नज़रों से गिरना पड़े।

घोड़ों का घर कितनी दूर—काम करने वालों को काम करते देर नहीं लगती।

चंदन की चुटकी भली, गाड़ी भरा न काठ—अच्छी चीज़ थोड़ी ही अच्छी, निकम्मी चीज़ बहुत भी अच्छी नहीं।

चक्की में कौल डालोगे, तो चून पाओगे—पहले कुछ रुपया खर्चोगे, या पहले कुछ खिलाओ पिलाओगे, तभी काम हो सकेगा।

चना और चुगल मुँह लगा छूटता नहीं—चना खाना और चुगली सुनना शुरू करने पर फिर बंद नहीं होता।

चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय—महाकंजूस होना।

चमगीदड़ों के घर मेहमान आये, हम भी लटकें तुम भी लटको—जैसी संगत में पड़ो वैसा करो। कहाँ आप नर्म गद्दों पर सोते थे, कहाँ आज हमारे गरीबखाने में आपको भी हमारे साथ भूमि-शयन करना पड़ा, किसी ने क्या खूब कहा है, चमगीदड़ों के......

चलती का नाम गाड़ी है—रामदेव जो कल कौड़ी कौड़ी का मोहताज था आज जगत्सेठ बन बैठा है, उसका ही कहा प्रामाणिक समझा जाता है और उसका ही माल खरा। सच है चलती का...... ?

चाँद को भी ग्रहण लगता है—सच्चरित्र व्यक्ति को भी कभी-कभी धब्बा लगता है।

चाकरी में नाकरी क्या—नौकरी स्वीकार की तो जैसी भी आज्ञा मिले, करनी ही पड़ती है। अरे रामधन, तेरी क्या मंशा है? दो चार जूते लगें तभी सीधा होगा? बीबी जी ने कितनी दफा कहा है कि बच्चों को मैदान में ले जा, जाता क्यों नहीं? रामधन—हजूर मैंने कब न की है, चाकरी......। आपके ही बूट पर तो पालिश कर रहा था, जो कहो सो करूँ।

चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात—सुख की क्षणिकता दिखाने के लिए कहा जाता है, अथवा जब कोई आदमी छोटी सी बात पर घमंड करने लगता है तब कहा जाता है। महात्मा जी ने कहा—अरे भाई! राम में आराम है, उसीसे प्रीति लगाओ, ये विषयभोग पानी के बुलबुले हैं। आज जो चटक-मटक देखते हो कल गायब हो जायगी, यह सब दृश्यमान सामग्री चार दिन......।

चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता—बेशर्म आदमी पर कोई बात असर नहीं करती।

चिकने मुँह को सब चूमते हैं—सब बड़े आदमियों की हाँ में हाँ मिलाते हैं! मैंने जब कहा था कि यहाँ विदेशी कपड़े पहन कर कोई न आया करे तो सबने हँसी में उड़ा दिया था, आज वही बात सेठ कन्नूमल ने कही तो सबने उसे सादर स्वीकार कर लिया; क्यों न हो चिकने......।

चिराग तले अँधेरा—किसी ऐसे स्थान पर ऐसा अंधेर होना जहाँ उसकी संभावना न हो। जैसे कचहरी, थाने या जेल में चोरी होना, या किसी बड़े विद्वान से साधारण भूल होना।

चिराग में बत्ती और आँख में पट्टी—अँधेरा होते ही जिसे नींद आ घेरे उसके लिए कहा जाता है।

चील के घोंसले में मांस कहाँ—जब कोई किसी के यहाँ ऐसी चीज़ पाने की आशा करे जिसका वहाँ पूरी तरह अभाव हो। महीना पीछे चढ़ता है हमारी तनख्वाह पहले ही खर्च हो जाती है। आप हमसे ही उधार लेने आये हैं, भला चील के......

चुपड़ी और दो दो—दोनों तरफ़ से फ़ायदा ही फ़ायदा; बढ़िया माल और बहुत सा। मुसलमान चाहते हैं कि पंजाब में तो हमें ५६ प्रतिशत स्थान मिलें और जहाँ हमारी संख्या थोड़ी है वहाँ हमारे स्थानों की संख्या नियत की जाय। भला यह कैसे हो सकता है कि चुपड़ी और ..।

चूल्हा फूँकना और दाढ़ी रखना—दोनों काम एक साथ नहीं निभ सकते। फेल कैसे न होते, तुम चाहते हो इधर कमाते भी जाँय और साथ-साथ पढ़ते भी रहें, भला यह कैसे हो सकता है, चूल्हा......

चूल्हे की न चक्की की—जो स्त्री खाना बनाना न जाने और घर का काम-धंधा न करे। आजकल की पढ़ी-लिखी लड़कियाँ चूल्हे की न चक्की की होती हैं।

चूहे का बच्चा बिल ही खोदता है—जाति-स्वभाव नहीं जाता।

चूहे के चाम से कहीं नगाड़े मढ़े जाते हैं—थोड़ी सामग्री से बड़ा काम नहीं हो सकता।

चूहों की मौत बिल्ली का खेल या चिड़ियों की मौत गँवारों की हँसी—दूसरों को कष्ट देकर आनन्द मनाना। अफरीदी ऐसे क्रूर थे कि रास्ते जाते को मार डालते और उसके तड़फते हुए धड़ पर पत्थर रख देते जिससे वह धड़ पत्थर समेत उछलता। अफरीदी और उनके बच्चे उसे देख-देखकर हँसते। इसे ही कहते हैं चूहों की......।

चोट्टी कुतिया जलेबियों की रखवाली—रक्षक ही जहाँ भक्षक बन जाय। सरकार ने कहा कुँवर अभी शासन करने के लायक नहीं और यदि इसके चचेरे या ममेरे भाई को शासन सौंपें तो परस्पर कलह की संभावना है, इसलिए कुँवर के बालिग़ होने तक हम ही इस रियासत की निगरानी करेंगे। अच्छा भाई तुम ही करो। फल यह हुआ कि चचेरे-ममेरे रफ़ा-दफ़ा, कुँवर साहिब विलायत में, और रियासत सरकार की हुई। यह हुई निगरानी, चोट्टी......।

चोर की दाढ़ी में तिनका—अपराधी यही समझता है कि सब जगह उसके अपराध की चर्चा हो रही है और इस आशंका में वह कहीं न कहीं अपना अपराध स्वयं ही प्रकट कर बैठता है।

चोर पर मोर—जब एक चालाक दूसरे चालाक को ठगना चाहता है, तब कहा जाता है। कृष्णकान्त नन्दगोपाल की जेब से रुमाल निकाल ही रहा था कि नन्दगोपाल ने देख लिया और बोला—अच्छा ! मैंने कहा बार-बार जेब की ओर क्यों देखता है, हज़रत की रुमाल पर नज़र थी ! अजी, यह तो हमने रमेश की जेब से खिसकाया था और तुम हमसे खिसकाना चाहते हो। यह खूब रही, चोर......।

चोर के पैर नहीं होते—चोर खड़ा नहीं रहता, या दोषी जाँच करने पर नहीं ठहरता।

चोर को ख्वाब में बुचके—चोर की नज़र गठरी पर रहती है।

चोर-चोर मौसेरे भाई—प्रायः बुरे काम करने वालों में मित्रता जल्दी हो जाती है।

चोरी का माल मोरी में—बुरे काम की कमाई बुरे कामों में खर्च होती है।

चोर से कहे चोरी करो शाह से कहे जागते रहो—दो दलों में दोनों का पक्ष लेना। उन्हें कहता है कि माल खरा है हाथ से न जाने देना और उन्हें कहता है कि ग्राहक फँसा हुआ है माल रोकें नहीं, दलाल का भला और काम ही क्या है, चोर से......।

छछूँदर के सिर में चमेली का तेल—जब किसी पुरुष को ऐसी वस्तु मिल जाय जिसके वह योग्य न हो तब कहा जाता है।

छटाँक चून चौबारे रसोई—झूठे आडंबर दिखाने वाले के बारे में कहा जाता है।

छुरी खरबूजे पर गिरी तो खरबूजे का ज़रर, खरबूजा छुरी पर गिरे तो खरबूजे का ज़रर—जब दोनों तरफ से अपना नुकसान दीखता हो तब कहा जाता है।

छोटे मुँह बड़ी बात—जब कोई मनुष्य अपनी योग्यता से बढ़कर बात करता है तब कहते हैं।

छोटे मियाँ सो छोटे मियाँ बड़े मियाँ सुभान अल्लाह—जब छोटे से भी बढ़कर बड़े में ऐब हों तब कहा जाता है।

जग में देखत का ही नाता—प्राण रहने तक ही संसार में नाता रहता है।

जड़ काटते जायँ पानी देते जायँ—ऊपर से तो हितैषी बनें पर भीतर से हानि करते जायँ। गाड़ी, तार, हस्पताल ये सब न बनायें तो तुम लोगों को लूटें कैसे! तुम समझते हो हमारा बड़ा भला हो रहा है पर उन्होंने तुम्हें खोखला कर दिया है। तुम उनकी नीति को नहीं समझते। वे तो जड़ काटते......।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी—मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।

जने-जने की लकड़ी एक जने का बोझ—थोड़ा-थोड़ा सब कोई दे तो ग़रीब की पूरी सहायता हो सकती है। अजी! परदेशी हूँ, सामान सब चोरी होगया है, पैसा पास नहीं, घर दूर है, आप लोग कृपा कर एक एक आना भी दें तो मेरे किराये के पैसे हो सकते हैं, जने-जने......।

जब चने थे तब दाँत न थे जब दाँत भये तो चने नहीं—जब संपत्ति थी, तो उपभोग करनेवाला कोई नहीं था, जब उपभोग करने वाले आये तब संपत्ति न रही। इसमें सन्देह नहीं कि हमारे दादा बड़े अमीर थे; पर हमारी किस्मत में मज़दूरी लिखी थी। हमारी दादी आठ-आठ आँसू रोती थी और कहा करती थी जब......।

जब दाँत न थे तब दूध दियो जब दाँत दिये तब अन्न न देहैं—गरीब आदमी को ईश्वर पर भरोसा रखने के लिए कहा जाता है।

जब अपनी उतार ली तो दूसरे को उतारने में क्या लगता है—बेशर्म आदमी दूसरों को शीघ्र बेइज़्ज़त कर सकता है।

जब तक जीना तब तक सीना—जब तक आदमी जीता है, तब तक कुछ न कुछ सांसारिक काम लगे ही रहते हैं। एक—अब लाला रामगोपाल बूढ़े हो गए, अब वे ध्यान भजन करें, अब उन्हें दुकान आदि से क्या मतलब। दूसरा—भाई जब तक जीना...बना ही रहता है।

जब तक साँसा तब तक आसा—मरने तक आशा लगी रहती है।

जब देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है—जब ईश्वर देता है तो कई रास्ते निकल आते हैं।

ज़बरदस्त मारे और रोने न दे—बलवान निर्बल को प्रत्येक रीति से दबा लेता है।

ज़बरदस्त सबका जमाई—बलवान से सब दबते हैं। हमने तो

हाथ जोड़ कर प्रार्थना की थी, तो भी तुम हमें गाड़ी में घुसने न देते थे, उल्टे घुड़कियाँ देते थे और इस पहलवान के सामने तो तुमने चूँ भी नहीं की, वह बैठा भी आकर तुम्हारी दरी पर है। सच कहते हैं, ज़बरदस्त...।

ज़बाँ शीरी मुल्क गीरी—मीठा बोल कर पुरुष सबको वश में कर लेता है। स्वामी रामतीर्थ जब जहाज़ से उतरे तो अफ़सर ने पूछा, आपका यहाँ अमेरिका में कोई मित्र है? उन्होंने मुसकरा कर कहा—हाँ। पूछा—कौन? राम ने बड़ी कोमलता से उस अफसर के कंधे पर हाथ रख कर कहा—तुम। अफसर मारे प्रेम के गद्गद हो उठा। कहते हैं उसी अफ़सर ने बाद में उनके रहने की व्यवस्था की, सच है ज़बाँ शीरी...।

ज़बान ही हाथी चढ़ावे ज़बान ही सिर कटावे—मीठा बोलने से लोग आदर करते हैं और कड़ुवा बोलने से वैरी हो जाते हैं। गुरुजनों ने बहुतेरा समझाया किन्तु शिशुपाल गालियाँ देता ही गया। कृष्ण कहाँ तक सहन करते; अन्त में सुदर्शन चक्र उठाया और शिशुपाल का सिर धड़ से जुदा कर दिया। इसीलिए कहते हैं कि ज़बान ही...।

जमात करामात—संगठन ही में शक्ति है। भाइयो, यदि आज हम सब भारतवासी, हिन्दू और मुसलमान, एक हो जायँ, तो देखें दुनियाँ में हमें कौन गुलाम रख सकता है। आप जानते हैं कि जमात......है।

ज़र है तो नर है नहीं तो पंछी बे पर है या ज़र है तो नर है नहीं तो पूरा खर है—बिना पैसे के दुनियाँ में कोई नहीं पूछता। मैं गरीब था, मेरे कपड़े मैले थे, पर था तो मैं डाक्टर साहिब का सगा भांजा ही; पर जब उनके मित्र ने उनसे मेरे विषय में पूछा, तो उन्होंने यह कह कर कि 'हमारे गाँव के एक बनिये का लड़का है' मेरा परिचय दिया। मैं लज्जा से पानी-पानी हो गया, और मैंने अनुभव किया कि इस संसार में ज़र......।

जल में रहना मगर से वैर—जिसके अधीन होकर रहें उसी से यदि वैर करें तो गुज़ारा नहीं चलता। देश-सेवा को दिल क्यों

नहीं चाहता, जहाँ तक हो सकता है करते ही हैं, पर तुम्हारी तरह तो नहीं कर सकते। करें तो अफसर नाराज़ होकर न जानें क्या आफ़त ढाएँ। भला यह कैसे हो सकता है कि जल में......।

जल की मछली जल में ही भली—जहाँ की वस्तु हो वहीं अच्छी लगती है।

जस दूल्हा तस बनी बराता—जैसे का वैसा साथी।

जहँ जहँ चरण पड़े सन्तन के बंटाधार करै—मनहूस आदमी के लिए कहा जाता है।

जहाँ की मिट्टी वहीं ले जाती है—जहाँ मरना बदा है, वहाँ काल ले जाता है।

जहाँ गुड़ होगा वहीं मक्खियाँ होंगी—गुण जहाँ भी हो उस के चाहने वाले वहीं पहुँच जाते हैं। एक—जब जाओ हिन्दी भवन प्रेस में भीड़ लगी ही रहती है। दूसरा—भाई! उनके पास गुण है! उनकी छपाई सुन्दर है। हमारे तुम्हारे जैसे प्रेस वाले तो बैठे बैठे मक्खियाँ ही मारते हैं। ग्राहक हमारे पास क्यों आवें, जहाँ गुड़.....।

जहाँ गुल है वहाँ काँटा भी है—जहाँ बहुत से गुण होते हैं वहाँ कोई न कोई अवगुण भी होता ही है। कहते हैं कि कालिदास इतना प्रतिभाशाली कवि होकर भी वेश्यासक्त था, पर राजा भोज ने यह समझ कर कि जहाँ......, उसका कभी निरादर नहीं किया।

जहाँ देखे तवा-परात वहाँ गुज़ारे सारी रात—लोभी आदमी को जहाँ से कुछ मिलने की आशा हो वहीं पसर बैठता है, चाहे अपमान ही क्यों न हो।

जहाँ चार बासन होंगे वहाँ खटकेंगे भी—जिस घर में अधिक व्यक्ति होंगे वहाँ झगड़ा ज़रूर होगा।

जहाँ न पहुँचे रवि तहाँ पहुँचे कवि—जहाँ सूर्य की किरणें भी नहीं पहुँच पातीं वहाँ कवि की कल्पना पहुँच जाती है।

जहाँ मुर्ग़ा नहीं होता वहाँ क्या सवेरा नहीं होता—व्यक्ति विशेष या वस्तु-विशेष के बिना किसी का काम रुक नहीं सकता। तुम्हें जितनी नम्रता से कहते हैं उतना ही तुम ऐंठते जाते हो। जाते हो तो जाओ, हमें तुम्हारे जैसे और कई मिल जावेंगे, जहाँ मुर्ग़ा......।

जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी—जिस व्यक्ति का जैसा भाव होता है उसे दूसरे व्यक्ति भी वैसे ही जान पड़ते हैं।

जाको राखे साइयाँ मार न सकिहै कोय—जिसको परमात्मा बचाता है, उसको कोई नहीं मार सकता।

जाट रे जाट तेरे सिर पर खाट, तेली रे तेली तेरे सिर पर कोल्हू—जब कोई बेतुकी बात कहता है, तब कहा जाता है।

जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले—सच्चा शक्तिमान वह है जो छलछिद्र न करके विजय पावे। एक तुम हो, जिन्होंने मेंबरी के वोटों के लिए लोगों की मिन्नतें की, रुपये भी खर्चे और फिर भी मेंबर न बन सके और एक हम हैं जिन्हें लोगों ने अपने आप वोट दिये और मेंबर भी बना दिया। अब देख लिया है न, जादू.....।

जान बची लाखों पाये—नुकसान हुआ तो बला से, जान तो बच गई। वाह मिट्ठू! तुमने बड़ी बुज़दिली दिखाई, इस तरह घड़ी छिनवा दी जैसे तुम में दम ही नहीं। मिट्ठू—यार! वे दो आदमी थे, मैंने कहा कहीं गला न घोट दें; शुक्र है घड़ी पर खलासी हुई, जान बची .....।

जान मारे बनिया पहचान मारे चोर—बनिया परिचित व्यक्ति को ज्यादा ठगता है क्योंकि वह संकोच-वश कुछ नहीं कहता और चोर भेद मिलने से ही चोरी करता है।

जाना अपने बस आना पराये बस—जा अपनी इच्छानुसार सकते हैं और आना तभी हो सकता है जब दूसरा आने दे।

जाय लाख रहे साख—धन भले ही नष्ट हो जाय पर साख

बनी रहनी चाहिए, जिससे कि व्यापार फिर भी चल सकता है।

जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा—जितना अधिक खर्च करोगे उतनी ही अच्छी वस्तु मिलेगी। यह मलमल है तो सस्ती, पर इसमें माँड बहुत है। तो साहब यह तो बनी बनाई बात है जितना...।

जितनी चादर देखो उतने ही पैर पसारो—सामर्थ्य से बाहर कोई काम न करो। अपनी हैसियत का खयाल न करके लड़की की शादी पर तो लाला साहब रुपया उधार ले-लेकर पानी की तरह बहाते गये, अब दर-दर भटक रहे हैं, इसीलिए कहते हैं कि जितनी......।

जितने मुँह उतनी बातें—ऐसी अफ़वाह जिसमें एक का कथन दूसरे के कथन से भिन्न हो। चूनीलाल गाड़ी के नीचे आकर मर गया है, कोई कहता है ठोकर लगने से वह लाइन पर जा पड़ा था, कोई कहता है फेल होने के शोक से उसने जान-बूझ कर गाड़ी के नीचे सिर दे दिया और कोई कहता है कि घर में उसकी किसी से अनबन होगई थी। कुछ ठीक पता नहीं लगता, अभी तक तो जितने......हैं।

जिसके पाँव न फटी बिवाई सो क्या जाने पीर पराई—जिसने कभी कष्ट नहीं सहा वह दूसरों के कष्ट का क्या अनुमान कर सकता है? पड़ोस में गरीब के बच्चे मारे भूख के आधी रात को बिलबिला रहे थे। रायसाहब ने नौकर को हुक्म दिया—जाओ, इन हरामज़ादों को चुप कराओ, आधी रात को भी सोने नहीं देते। रायसाहब बेचारे क्या जानें ग़रीबों पर क्या गुज़रती है? जिसके पाँव......।

जिसका ब्याह उसी के गीत—समयानुकूल बातें करना।

जिसके पास नहीं पैसा वह भलामानस कैसा—निर्धन की सब जगह अवज्ञा होती है, उसका कोई विश्वास नहीं करता। उस दिन वहाँ बहुत से आदमी आये थे, किसी ने ५०) उठा लिये होंगे, पर पकड़ा गया बुद्धू। उस बेचारे ने बहुतेरी कसमें खाईं, पर उसकी कौन सुनता है, भला जिसके......।

जिसकी लाठी उसकी भैंस—शक्तिमान की विजय होती है। बलराज ने पानी काटकर अपने खेत में लगा लिया। जिसकी बारी थी वह एक-दो लठबन्दों को साथ लिये बलराज के पास आया। बलराज ने उन्हें आते देखा तो कुल्हाड़ी उठा ली। फिर क्या था सब दुम दबाकर भाग गये, इसे कहते हैं जिसकी......।

जिसके हाथ डोई उसका सब कोई—सब धनवान की खुशामद करते हैं। एक—भाई, सुशील के यहाँ से निमन्त्रण आया था; हम वहाँ पहुँचे ही थे, इतने में लाला कल्लूमल भी आगये। हमें वहीं रास्ते ही में छोड़कर सब उनकी मोटर की ओर दौड़े, हमें तो बहुत बुरा मालूम हुआ। दूसरा—तुम जानते ही हो जिसके......।

जिस बरतन में खाना उसी में छेद करना—जिसके आश्रय में रहना उसी का बुरा चाहना अर्थात् कृतघ्नता करना। चल हट बेशरम कहीं का, उन्हीं के यहाँ रहता है और उन्हीं की चुगली खाता है। भला यह भी कहाँ की भलमनसाहत है कि जिस बरतन......।

जीभ भी जली स्वाद भी न आया—जब किसी को बहुत थोड़ी-सी चीज़ खाने को दी जाय तब कहा जाता है।

जूँ के डर से गुदड़ी नहीं फेंकी जाती—साधारण कष्ट के लिए अपना काम नहीं छोड़ा जाता।

जूठा खाय मीठे के लालच—स्वार्थ के लिए नीच काम भी किया जाता है। उसे कुछ मिलने की आशा है तभी तो वह रात दिन झिड़कियाँ खाकर भी वहाँ ही पड़ा रहता है। यह तो बनी बनाई बात है कि जूठा खाय.....।

जैसा देश वैसा भेस—जिस देश में रहा जाय वहीं के रीति-रिवाज़ के अनुसार चलना चाहिए। कहते तो हैं जैसा देश वैसा भेस, पर अँगरेज़ तो भारत में आकर अँगरेज़ ही रहे, भारतीय तो न हुए।

जैसी बहै बयार पीठ तब तैसे दीजै—देश काल के अनुसार काम करना चाहिये।

जैसी तेरी तिलचावरी तैसे मेरे गीत—जैसी मज़दूरी होगी काम भी वैसा ही होगा। उस्ताद यह क्या किया? हमारे कोट पर तुमने बेगार ही काटी है, उनका यह कोट तुमने कैसा उम्दा बनाया है। जनाब आपने दिये भी तो दो ही रुपये हैं, उनसे लेंगे हम पाँच, फिर काम भी तो वैसा ही होगा न, जैसी......।

जैसे मियाँ काठ वैसे सन की दाढ़ी—दो वस्तुओं का ठीक जोड़ मिलने पर।

जैसे साँपनाथ वैसे नागनाथ—जब दो आदमी एक से हों तब कहा जाता है।

जो गरजते हैं वे बरसते नहीं—डींग मारने वालों से काम नहीं होता। अरे तुम तो कहते थे यह काम है ही क्या, एक हफ्ते की मार है। आज महीना हो गया है तुमने आधा भी समाप्त नहीं किया। सच है, जो गरजते......।

जो ज़्यादा करीब सो ज़्यादा रकीब—घर के (सम्बन्धी) ही प्रायः अधिक दुश्मन होते हैं।

जो बोले सो कुंडी खोले—जो किसी को काम करने का उपाय बताये, यदि उसे ही वह काम सौंपा जाय तब। बख्शी साहब की चिट्ठी ले जाओ तो सब काम बन जायगा। तो ज़रा आप ही तकलीफ़ कीजिये, हम तो बख्शी साहब को जानते नहीं! यह अच्छी रही, जो बोले......।

जो तोको काँटा बुवै ताहि बोव तू फूल—बुराई करने वाले के साथ भी भलाई करो।

ज्यों नकटे को आरसी होत दिखावे क्रोध—दोषी को दोष दिखाने से वह बुरा मानता है।

झूठ के पाँव कहाँ—झूठा आदमी बहस में नहीं ठहर सकता।

पहले तो बोला मैंने रुपया नहीं लिया, फिर कहने लगा, लिये थे दे दिये हैं। जब वकील ने पूछा, किस तारीख को दिये थे, तो बगलें झाँकने लगा। भला झूठ के......।

झोंपड़ी में रहें महलों का ख्वाब देखें—असंभव कल्पना अथवा बहुत ऊँची आकांक्षा करना।

टके का सब खेल है—धन ही से सारा काम बनता है।

टके के वास्ते मस्जिद ढाना—लोभवश अनुचित काम करना।

टेढ़ी अँगुली से ही घी निकलता है—सीधेपन से कुछ नहीं होता, धूर्तता से ही काम होता है। अरे, तुम समझते हो कि इस तरह हाथ पैर जोड़ने से तुम्हारे रुपये निकल आएँगे, याद रक्खो टेढ़ी अँगुली से ही घी निकलता है।

ठंढा लोहा गरम लोहे को काट देता है—शांत प्रकृतिवाला मनुष्य क्रोधी मनुष्य को हरा देता है।

ठाला बनिया क्या करे इस कोठी का धान उस कोठी में धरे—जब कोई व्यर्थ काम करता है तब कहा जाता है।

ठोकर लगी पहाड़ की, तोड़े घर की सिल—जब कोई व्यक्ति बाहर से किसी बलवान द्वारा अपमानित होने पर उसका गुस्सा घर वालों पर उतारे तब कहा जाता है।

डायन भी अपने बच्चे को नहीं खाती—अपने बच्चे सबको प्यारे लगते हैं।

ढपोर शंख—जो बड़ी-बड़ी बात करे पर कर कुछ न सके।

ढाक के वही तीन पात—जो वस्तु या व्यक्ति सदा एक दशा में रहे। आपके अड़ोस-पड़ोस वालों ने अब ऊँची-ऊँची बढ़िया दुकानें बनवा ली हैं, और इधर आपके तो ढाक के वही तीन पात हैं, वही छोटी सी दुकान और वही इनी-गिनी किताबें।

तकल्लुफ में है तकलीफ़ सरासर—मर्यादा से अधिक शिष्टा-

तख़्त पर बैठे या तख़्ते पर लेट जाय—या तो प्रतिष्ठापूर्वक रहे या मर जाय।

तड़के (सवेरे) का भूला साँझ को घर आ जाय तो भूला नहीं कहाता—काम बिगड़ने से पहले होश आ जाय तब। प्यारे सज्जनो, बहुत पाप कर चुके, अब भी चेतो। जीवन के अभी बहुत दिन बाकी हैं, भगवान् के सामने पवित्र बनकर जाओ, वे तुम्हें क्षमा करेंगे। अभी सँभल सकते हो, अभी कुछ नहीं बिगड़ा ! तड़के......।

तन को कपड़ा न पेट को रोटी—बहुत गरीब।

तलवार का घाव भरता है, बात का घाव नहीं भरता—कटुवचन सदैव असह्य होते हैं। भाभी, तुम्हें कितनी बार कहा है कि ज़रा सोच-समझ कर बात किया करो। रात-दिन ताना मारना उचित नहीं, जानती हो तलवार......।

तवेले की बला बंदर के सिर—जब कोई भी व्यक्ति बुरा काम करे, पर दोष उसी के सिर मढ़ा जाय जो पहले बदनाम हो चुका हो, तब कहा जाता है।

तिनके की ओट पहाड़—आँख के आगे तिनका रखने से पहाड़ भी छिप जाता है। थोड़े से सहारे से कोई बड़ा काम होने पर कहा जाता है।

तिरिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार—दृढ़प्रतिज्ञ प्रायः अपनी प्रतिज्ञा की दृढ़ता की महत्ता दिखाने को कहा करते हैं। पूरी कहावत इस प्रकार है—'सिंह-गमन सुपुरुष वचन, कदलि फरै इक बार तिरिया......, अर्थात् ये सब काम एक ही बार होते हैं।

तीन में न तेरह में मृदंग बजावें डेरे में—जो सब से अलग रहते हैं, किसी के झगड़े में नहीं पड़ते, उन्हें कहा जाता है, अथवा जिसकी कोई बात भी नहीं पूछता, जो अपने घर में ही पड़ा रहता है उसे भी कहा जाता है। भाई, तुम दोनों आपस में लड़ा झगड़ा करो, हमें न तुमसे मतलब न उससे वास्ता; हम तो तीन में न तेरह में मृदंग

बजावें डेरे में। (अथवा) भाई रामलाल की भली कही, उसकी भी कोई बात पूछता है, वह तो तीन में न तेरह में......।

तीन कनौजिये तेरह चूल्हे—बहुत छूत-छात का विचार करना। हूँ तो दरभंगे का, यहाँ तुम्हारे साथ भोजन कर रहा हूँ। घर वालों को पता लगे तो मुझे पतित और पापी समझने लगें। हमारे यहाँ तो मसल मशहूर है, तीन कनौजिये......।

तीन गुनाह खुदा भी बख्शता है—जब कोई कसूर करे और माफी माँगे तब कहा जाता है।

तीन बुलाये तेरह आये दे दाल में पानी—थोड़ी चीज़ जब ज़्यादा आदमियों को परोसनी पड़े तब कोई स्वाद नहीं आता।

तीर नहीं तो तुक्का ही सही—यदि कार्य हो जाय तो अच्छा नहीं तो खैर। जब फल अनिश्चित हो तब कहा जाता है। इस साल तैयारी तो हुई नहीं, फीस भर दी है, चलो परीक्षा में बैठ जायँगे, तीर नहीं......।

तुझे पराई क्या पड़ी अपनी आप निबेड़—जब कोई अपना काम छोड़कर दूसरे का काम करने जाय तब कहा जाता है।

तुरत दान महा कल्यान—नक़द सौदा करने में पूरा लाभ होता है। दुकानदार—आप घड़ी ले जाइये पैसे फिर आ जायँगे। ग्राहक—नहीं महाराज! फिर-विर की बात नहीं, आप पैसे अभी लीजिये, तुरत दान...।

तू डाल डाल मैं पात पात—एक चालाक हो और दूसरा उस से भी बढ़ कर चालाक हो तब। उससे मेरी किताब का पन्ना फट गया। उसने समझा मैंने देखा नहीं, चुपके से मेरे हाथ में देकर चलने लगा। मैंने उसकी बगल से उसकी किताब खिसका कर कहा—मेरी किताब तो यह है, वह फटे पन्नेवाली तुमको ही मुबारिक हो, समझे तुम डाल...।

तू भी रानी मैं भी रानी कौन भरे कुएँ का पानी—जब दोनों ही काम करने से इनकार करें तब कहा जाता है।

तुम्हारे मुँह में घी शक्कर—जब कोई अच्छी बात सुनाये तब कहा जाता है।

तेते पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर—देखो पृष्ठ १२३, 'जितनी चादर देखो उतने ही पैर पसारो।'

तेल तिलों ही से निकलता है—दानी ही दान कर सकता है, कंजूस क्या दान करेगा? चलो मंत्री जी, क्यों लालाजी को तंग कर रहे हो, भला उन्होंने दान देना सीखा भी है? क्यों व्यर्थ समय नष्ट करते हो? भाई, तेल तिलों ही......।

तेली का तेल जले मसालची का दिल जले—एक के दान करने पर दूसरे को ईर्षा या दुख होना। पुजारी ने जब पंडे को यह कहते सुना कि सेठ जी! पुजारी तो दो ही आने पर खुश हो जाता आपने रुपया मुफ्त में दिया, तो सटपटा कर बोल उठा, तुम्हारी जेब से क्या गया? कमीना कहीं का, तेली......।

तेली खसम किया और फिर भी रूखा खाया—बड़े का आश्रय लेकर भी कष्ट से छुटकारा न होने पर। नाम को तो हम सेठ चंदामल के आदमी हैं पर सात साल से हमारी तनख्वाह इन्होंने १५) से १६) नहीं की। घर छोड़कर पछता रहे हैं, तेली......।

तेली के बैल को घर ही कोस पचास—जिसे घर में रहकर दिन-रात काम करना पड़े, उसे कहा जाता है।

तैराक ही डूबते हैं या जो चढ़ेगा सो गिरेगा—जो साहस का काम करते हैं वे कभी-कभी निष्फल प्रयत्न भी होते ही हैं। उठो, हिम्मत बाँधो, फेल हुए तो क्या हो गया, आखिर तैराक ही......।

थका ऊँट सराय ताकता—कठिन परिश्रम के बाद आराम के लिए अपना घर याद आता है।

थूक से सत्तू नहीं सनते—थोड़ी सामग्री से बड़े काम नहीं हो सकते। आप चाहते हैं कि सारा काम पाँच ही रुपये में हो जाय, जनाब! थूक से......।

थोड़ा खाना इज्ज़त से रहना—अधिक खर्च करने वालों तथा हमेशा उधार माँगने वालों को शिक्षा के लिए कहा जाता है।

थोथा चना बाजे घना—जिस वस्तु या व्यक्ति में आडंबर अधिक होता है उसमें सार कम होता है। [देखो—'अधजल गगरी छलकत जाय']

दबी बिल्ली चूहों से कान कतराती है—अपराध करके बलवान भी निर्बल की खरी-खोटी सहता है। ठग पकड़ा गया, था तो बड़ा हट्टा-कट्टा पर लड़कों ने उसको नाक में दम कर दिया, कोई गाली देता, कोई कन्नी खींचता, कोई मुँह चिढ़ाता, किन्तु वह दबे मुँह सिपाही के पीछे पीछे चला जाता था। वैसे तो ये सब लड़के उसकी एक थप्पड़ की मार थे पर दबो...।

√ **दबते को सब दबा लेते हैं या दबे पर सब शेर**—दुर्बल आदमी को सब दबा लेते हैं।

दम का क्या भरोसा आया न आया—शरीर नश्वर है।

दमड़ी की बुढ़िया टका सिर मुँडाई—वस्तु के मूल्य से उस के पुरस्कार की कीमत अधिक होने पर। मियाँ मोची! इसे ज़रा टाँका लगा दो, क्या लोगे? हजूर तीन आने दे देना, ठीक बना दूँगा। तीन आने का तो जूता भी नहीं, दमड़ी की बुढ़िया......।

दमड़ी की हाँडी गई, कुत्ते की जात पहचानी गई—जब कोई थोड़ी-सी चीज़ के लिए बेईमानी करे तब कहा जाता है।

दर्ज़ी की सुई कभी ताश में कभी टाट में—सोने से काम, जैसा आया सी दिया।

दलाल का दीवाला क्या मस्जिद में ताला क्या—जहाँ है ही कुछ नहीं वहाँ रखवाली का क्या काम। हम भी तो हैं, सारा दिन कमरा खुला रहता है, इनका ज़रा दरवाज़ा खुला रह गया तो अब मील-भर से वापिस आएँगे ताला लगाने। भाई! तुम तो मलंग ठहरे, तुम्हारी कोठरी

में सिवाय कंबल के और है ही क्या जो कोई उठा ले जाय, भला दलाल का......।

दाग़ लगाये लँगोटिया यार—मित्र ही प्रायः धोखा देते हैं क्योंकि वे सब भीतरी भेद जानते हैं।

दादा कहने से बनिया गुड़ देता है—खुशामद बड़ी चीज़ है।

दादा ले और पोता बरते—बहुत मज़बूत चीज़ है।

दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते—मुफ्त मिली हुई चीज़ खराब भी हो तो लेने में आनाकानी नहीं की जाती।

दाने-पानी का अख्तियार है—सब अन्नजल के अधीन है, वह जहाँ चाहे वहाँ ले जाय।

दाम सँवारे काम—पैसे से सब काम हो जाते हैं।

दाल-भात में मूसलचंद—जहाँ दो मनुष्य काम की बातें करते हों, वहाँ तीसरा मनुष्य जिसका कोई संबंध नहीं, बीच में बोलकर बाधा डाले, तब कहा जाता है।

दाल में नमक सच में झूठ—दाल में जितना नमक होता है, इतना—थोड़ा बहुत—झूठ छिप जाता है, पर अधिक झूठ नहीं छिपता।

दिन जाते देर नहीं लगती—समय बहुत जल्दी बीतता है।

दिनन के फेर से सुमेरु भी होत माटी को—जब बुरे दिन आते हैं तो सोना भी मिट्टी हो जाता है।

दिन ईद और रात शबरात है—सदा आनन्द होना। भारतवासी गरमी में सड़ें, सर्दी में मरें, भूखे रहें, नंगे फिरें, उन्हें क्या? उन की तो दिन ईद......।

दिया दान दिया दान फिर माँगे तो मुसलमान—मुसलमान लड़की के मरने पर दहेज़ में दिया हुआ धन वापिस ले लेते हैं। साधारणतया जब कोई दी हुई चीज़ वापिस माँगता है तब बच्चे इस लोकोक्ति का प्रयोग करते हैं।

दिया तले अँधेरा—देखो 'चिराग तले अँधेरा'।

दिल लगा गधी से तो क्या काम परी से—प्रेम में दोष नहीं दिखाई देता।

दीपक की रवि के उदय बात न पूछे कोय—बड़ों के होते छोटों की बात कोई नहीं पूछता।

दीवार के भी कान होते हैं—गुप्त मन्त्रणा एकान्त में भी आहिस्ता बोलकर करनी चाहिये। अरे भीम! ज़रा धीरे बोल, क्या जानें कोई सुन ही रहा हो। क्योंकि दीवार......।

दुधार गाय की लात भली—जिससे कुछ लाभ हो उसकी घुड़कियाँ भी सह ली जाती हैं। रोज़ गालियाँ खाता है, फिर भी न जाने उसकी नौकरी क्यों नहीं छोड़ता? छोड़े कैसे, दस बारह रुपये रोज दलाली के भी तो उसी की दुकान पर बैठकर बनाता है, सो दुधार...।

दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम—एक समय में दो काम करने से एक में भी सफलता नहीं मिलती। मैं तो शादी करके भूल कर बैठा, इधर पढ़ाई नहीं होने पाती उधर बीबी साहबा नाराज़ रहती है, दुबिधा में.....।

दुनिया का मुँह किसने रोका है—कहने से कोई किसी को नहीं रोक सकता है। लोग स्वामी दयानन्द तक के आचरण पर लांछन लगाते हैं, हमारी तो बात ही क्या? भाई दुनियाँ .....।

दुनियाँ को किसी तरह चैन नहीं—लोगों का स्वभाव केवल दोष देखना ही है वे किसी तरह सन्तुष्ट नहीं होते।

दुनियाँ ठगिये मक्र से रोटी खाइये शक्कर से—जो फरेब से दुनियाँ को ठगते हैं और मौज़ से दिन काटते हैं उनके लिए कहा जाता है।

दुलहा को पत्तल नहीं बजनिये को थाल—जब मुख्य पात्र को कुछ न मिले, और ऊपर वाले मार ले जाएँ, तब कहा जाता है।

दूध का जला छाछ फूँक कर पीता है—एक बार किसी काम

में हानि उठाकर पुरुष सहसा किसी ऐसे काम को भी हाथ नहीं लगाता जिस में भय की ज़रा भी संभावना न हो। अरे यह बिजली की तार, नहीं, ना बाबा ! दूर ही, रख मुझे उस दिन बड़ा झटका आया था। पहला हँस पड़ा और बोला, दूध का......।

दूध का दूध पानी का पानी—इंसाफ करने पर कहा जाता है।

दूर के ढोल सुहावने—जब तक किसी व्यक्ति या वस्तु का वास्तविक अनुभव न हो तब तक वह भली लगती है ! जब तक काश्मीर देखा नहीं था, मैं समझता था कोई स्वर्ग ही होगा, मेरी नेज़रों में फूलों-फलों के बागों के बाग घूमते थे, वहाँ गया तो वही आसमान, वैसी ही जमीन, गंदे लोग, गंदी गलियाँ सच है दूर के.......।

देखें ऊँट किस करवट बैठता है—किसी घटना के फल की प्रतीक्षा में कहते हैं। १९३१ में जब महात्मा गांधी विलायत जा रहे थे, तब सब लोग यही सोचते थे कि—देखें ऊँट......।

देखने में ना सो चखने में क्या—जो वस्तु देखने लायक नहीं वह खाने लायक कैसे होगी ?

देना थोड़ा दिलासा बहुत—आशा तो भारी दिलाना पर देना नाम मात्र।

देशी कुतिया विलायती बोली—जब कोई मूर्ख विदेशी भाषा बोलता है तब कहा जाता है।

देह धरे के दंड हैं—शरीरधारियों को बीमारी दुःख इत्यादि लगे ही रहते हैं।

दैवोपि दुर्बल-घातकः—दैव भी दुर्बल को ही कष्ट देता है। बेचारा सर्दी में ठिठरता था, लोगों ने चंदा करके इसे एक कंबल ले दिया। रात को कोई भलामानस आया और बेचारे का कंबल ही उठा कर चलता बना। क्या किया जाय दैवोपि.....।

दो घर का पाहुना भूखा ही रहता है– साझे का काम प्रायः खराब ही होता है।

दोनों तरह से मौत है—जब दो कामों में से प्रत्येक के करने में हानि अथवा बदनामी होती दिखाई दे और एक काम किये बिना पिंड न छूटे तब कहा जाता है।

दोनों हाथों में लड्डू हैं—दोनों तरह फायदा है। तुम रहोगी तो परोंठियाँ खायँगे, जाओगी तो मेहमानियाँ खायँगे। जाना है तो जाओ, अपना नफा नुकसान सोच लो, हमारे तो दोनों......।

दो मुल्लों में मुर्गी हराम—एक काम को अनेक आदमी करें तो वह अवश्य ख़राब हो जाता है।

दोस्ती में लेन देन बैर का मूल—मित्रों में लेन-देन अच्छा नहीं होता।

दौलतमंद की पौड़ी पर सब सिज़दा करते हैं—पैसेवाले की सब खुशामद करते हैं।

धनवंती के काँटा लगा, दौड़े लोग हज़ार, निर्धन गिरा पहाड़ से कोई न आया कार—धनवान के सब सगे बनते हैं, निर्धन को कोई नहीं पूछता।

धर्म छोड़ धन कोई खाय—पाप की कमाई नहीं पचती।

धी पराई आँख लजाई—लड़की का विवाह कर देने पर समधी से दबना ही पड़ता है।

धीरज धर्म मित्र अरु नारी आपत काल परखिये चारी—धैर्य, धर्म, मित्र और पत्नी इनकी परीक्षा विपत्तिकाल में ही होती है।

धोबिन पर बस न चले गधैया के कान उमेठे—जब बलवान पर बस न चले और निर्बल पर जोर दिखावे तब कहा जाता है।

धोबी का कुत्ता घर का न घाट का—जिस पुरुष का कोई स्थायी निवास न हो या जो मनुष्य दोनों तरफ़ की चाल चले, न इधर का रहे न

उधर का, उसे कहा जाता है। मेरे एक मित्र झोंक में आकर असहयोगी होगये। नौकरी छोड़ दी। हृदय में त्याग का भाव तो था ही नहीं। कुछ दिनों के बाद फिर नौकरी के लिए कहीं गये, पर जाते ही दुत्कारे गये। जब साथियों को खबर लगी तो उन्होंने भी उनको भला-बुरा कहा। अब उनकी वही दशा हो गई है कि धोबी का......।

धोबी के घर पड़े चोर वह न लुटा लुटे और—दूसरे की वस्तु नष्ट हो जाने पर हमें तब तक शोक या हानि नहीं होती जब तक हमारी ज़िम्मेदारी न हो। गुस्से में आकर लोगों ने डाकखाना और स्टेशन तो जला दिया किन्तु जब सरकार ने शहरवालों पर विशेष टैक्स लगा कर तीन लाख रुपया जमा कर नई इमारतें खड़ी कर दीं तब लोगों को होश आई कि धोबी......।

धोबी बसि कै क्या करे दिगंबरों के गाँव—जहाँ कद्र न हो वहाँ न रहना चाहिये। जब कोई ऐसी जगह रहे जहाँ उसकी आवश्यकता ही न हो, तब कहा जाता है।

धोबी रोवे धुलाई को मियाँ रोवे कपड़े को—जहाँ दोनों ही अपनी अपनी शिकायत करते हों वहाँ कहा जाता है।

नंग बड़े परमेश्वर से—परमेश्वर की अपेक्षा भी निर्लज्ज से अधिक डरना चाहिए, पता नहीं कब किसको बेइज्ज़त कर डाले।

नंगी क्या नहाएगी और क्या निचोड़ेगी—ग़रीब पुरुष जो आप भूखों मरता है, दूसरों को क्या देगा। उन बड़े पेटवालों के पास तो जाते नहीं, इन बेचारे कबाड़ियों से चंदा माँगते फिरते हो। ये बेचारे क्या दे सकते हैं। भला नंगी......।

न इधर के रहे न उधर के रहे—दोनों ओर से असफलता मिलने पर। गवर्नमेंट कालिज में उन्होंने दाखिल न किया, इधर लॉ कालेज में प्रवेश होने की तारीख बीत गई, अब न इधर......।

नक्कारखाने में तूती की आवाज़—बड़े आदमियों की बात के आगे छोटों की बात नहीं सुनी जाती।

नटनी जब बाँस पर चढ़ी तो घूँघट क्या—जब बेशर्मी का काम शुरू कर दिया तो शर्म क्या करनी। सब जानते तो हैं कि इस साल शराब का ठेका तुमने लिया है, फिर स्वयं दुकान पर क्यों नहीं बैठते? नटनी......।

नदी किनारे रूखड़ा जब तब होय विनास—जोखिम के कामों में सदैव आशंका बनी रहती है।

नदी में रहना मगर से बैर—देखो 'जल में रहना मगर से बैर।'

नदी नाव संयोग—संयोग से मिलने पर।

"ऊधो कछु दिन बसि कियो, वा कपटी संग भोग
कहाँ कान्ह अब हम कहाँ, नदी नाव संयोग।"

न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी—ऐसी शर्त पर काम करना स्वीकार करना जो पूरी न हो सके, दूसरे शब्दों में काम करने से जवाब दे देना। वे कहते हैं कि तुम हिन्दू-मुसलमान दोनों एकता कर लो तो हम तुम्हें स्वराज्य दे देंगे। मेरे विचार में न हमारी एकता होगी न स्वराज्य मिलेगा, न नौ मन.....।

नया नौ दिन पुराना सौ दिन—नयी चीज़ का विश्वास नहीं। प्रायः पुरानी चीज़ अधिक पायेदार होती है।

नया मुसल्ला अल्लाह ही अल्लाह पुकारे—नये मत पर जोश बहुत होता है।

नये-नये हाकिम और नई-नई बातें—जब हाकिम नये-नये आते हैं तो नये-नये कानून बनाते हैं।

न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी—झगड़े के मूल को ही नष्ट कर देना। महात्मा गांधी को वह दूरबीन बहुत प्यारी लगती थी और उनका दोस्त भी उसे लेने के लिए बड़ा आग्रह कर रहा था। महात्मा

जी ने यह सोचकर कि उस दूरबीन की ख़ातिर हममें वैमनस्य न हो जाय उस दूरबीन को ही समुद्र में फेंक दिया कि चलो न रहेगा......।

नाई-नाई ! बाल कितने ? जजमान ! अभी सामने आ जायँगे—जब कोई ऐसी बात के लिए पूछे जिसका हाल तुरंत ही उस के सामने आने वाला हो तब कहा जाता है। लड़का है कैसा ? साँवला तो नहीं ? पढ़ा लिखा तो है ?" "इतनी उतावली क्यों हो रही हो, अभी रोटी खाने आयगा देख लेना कैसा है, नाई-नाई...।"

नाई की बरात में जने जने ठाकुर—जहाँ कोई मुखिया न हो वहाँ सभी अपने को मुखिया समझते हैं।

नाक कटी पर हठ न हटी—मूर्ख नुकसान होने पर भी हठ नहीं छोड़ता।

नाक कटी पर घी तो चाटा—बेइया आदमी को कहा जाता है। कहा था थोड़ी देर सब्र करो, अभी चाकू मँगा कर खोल देता हूँ, परन्तु तुम भी कील से ही छेद कर खाने के लिए उतावले हो रहे थे। मिल गया न उसका फल, हाथ में से कितना खून निकला, पर हाँ नाक कटी......।

नाक दबाने से मुँह खुलता है—जब तक किसी पर किसी प्रकार का दबाव न पड़े तब तक वह काम नहीं करता। वह तो गवाही देने को तैयार ही नहीं होता था, तुम उसे कैसे ले आये ? अरे भाई तुम तो अब तक निरे बुद्धू ही रहे। तुम्हें पता नहीं नाक दबाने...। मुझे मालूम था कि इसने सेठ साहब से रुपया उधार लिया हुआ है, बस उनसे कहलवाने की देरी थी कि सीधा यहाँ चला आया।

नाच न जाने आँगन टेढ़ा—काम करना आता न हो, और बहाने बनावे तब कहा जाता है। लिखना विखना जानता नहीं और बहाने बनाता है कि कलम ठीक नहीं, कभी कहता है कागज़ खराब है, कभी स्याही फीकी है; नाच न...।

नाचने वालों के पाँव थिरकते हैं—काम करनेवाला खाली नहीं बैठ सकता।

नानी के टुकड़े खावे दादा का पोता कहावे—उपकार कोई करे नाम दूसरे का हो।

नानी के आगे ननिहाल की बातें—अपने से अधिक जानने वाले को बातें सुनाने पर।

नानी क्वारी मर गई नवासे के नौ-नौ ब्याह—क्यों व्यर्थ शेखी मारता है।

नानी ख़सम करे दोहता चट्टी भरे—अपराध कोई करे और दंड दूसरा भुगते तब कहा जाता है। जिसने बेंच गिराया है उसे कहो उठाये, मैं क्यों उठाऊँ, नानी...... ।

नाम बड़े अरु दर्शन छोटे—ख्याति बहुत हो पर वास्तव में वह वस्तु या व्यक्ति उतना महत्वशाली न हो तब कहा जाता है। मैं समझता था 'यूनिवर्सल सोप फ़ैक्टरी' कोई बड़ा भारी कारखाना होगा, उसकी बड़ी आलीशान बिल्डिंग होगी। देखा तो एक दुबले-पतले महाशय एक कोठड़ी में बैठे डिब्बे बना रहे हैं। देखते ही मेरे मुँह से निकल पड़ा नाम बड़े...।

नाम बढ़ावे दाम—नामी दुकानदार चीज़ मँहगी बेचते हैं। क्यों भाई, वही चमड़ा, वही बूट, पर भल्ला कंपनीवाले उसका ७) लेते हैं और तुम केवल ५); यह क्या बात है? दुकानदार—भाई साहब नाम ...।

नामी चोर मारा जाय, नामी शाह कमा खाय—खुशनामी से लाभ और बदनामी से हानि होती है।

नारि मुई कुल संपति नासी, मूँड मुँडाय भये संन्यासी—आज कल के कई संन्यासी जो स्त्री के मरने के कारण या घर की संपत्ति के नष्ट हो जाने के कारण संन्यासी बन जाते हैं, उनके लिए यह लोकोक्ति प्रयुक्त होती है।

नारियल में पानी नहीं जानता खट्टा कि मीठा—जब कोई बात छिपी हुई या संदेहयुक्त हो तब कहा जाता है।

निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते—जहाँ कोई वृक्ष नहीं होता वहाँ एरंड को ही वृक्ष मान लेते हैं। जहाँ कोई विशेषज्ञ नहीं होता वहाँ थोड़ा पढ़ा-लिखा पुरुष भी पंडित समझा जाता है। तुम तो इस वैद्य की बड़ी तारीफ करते थे, पर मैं तो देखता हूँ अभी तक यह बच्ची के रोग को ही नहीं समझ सका। भाई, हमारे गाँव में तो इसकी बड़ी कदर है। ठीक है वहाँ कोई लायक वैद्य न होगा, निरस्त......।

निर्बल के बल राम—जिसका जगत् में कोई सहायक नहीं वह ईश्वर पर भरोसा रखता है।

नीचे की साँस नीचे ऊपर की साँस ऊपर—जब कोई बहुत दुःख की बात सुने तब कहा जाता है। जब मैंने सुना कि बलदेव छत पर से गिर पड़ा है तब मेरी नीचे की साँस...रह गई।

नीम हकीम खतरा-ए जान—जिसे पूर्ण अनुभव न हो उसके हाथों काम बिगड़ने की आशंका बनी रहती है। मैंने कपड़ा तो बड़े शौक से पचास रुपये खर्च कर खरीदा है और आपने शागिर्द के हाथ में दे दिया है। आप खुद बनाते तो अच्छा था क्योंकि नीम हकीम......।

नेकी और पूछ पूछ—भलाई करने में पूछना क्या? क्यों साहब, आपके लिए कुछ फल आदि मँगाये जाँय। वाह यार, नेकी और...।

नौ नगद न तेरह उधार—उधार तेरह रुपये में बेचने की अपेक्षा नगद नौ में बेचना अच्छा है। भाई पैसे तो यह अच्छे दे रहा है पर मैं उधार तो करूँगा नहीं, पीछे रुपये वसूल करने में सौ झगड़े होते हैं। हमें नौ नगद......की नीति पसंद है।

नौ दिन चले अढ़ाई कोस—बहुत सुस्त काम करने वाले को

कहा जाता है। देखो वह धीरे-धीरे चलेगा, रमेश से कहो कि यह चिट्ठी अभी जाकर पंडित जी को दे आवे। वाह तुमने भी अच्छा आदमी चुना, रमेश तो नौ दिन...।

नौ सौ चूहे खाय के बिलाई चली हज्ज को—सारी उमर पाप करके अंत में भक्त बनना। हैं क्या कहा, मालती प्रतिदिन मंदिर जाती है? कब से? वह तो सारी उमर चौबारे में बैठी रही; बुढ़ापे में अब भक्तिनी बन बैठी है, नौ सौ...।

'वृद्धा वेश्या तपस्विनी' का भी इसी अर्थ में प्रयोग होता है।

पंच कहे बिल्ली तो बिल्ली ही सही—जो सबकी सम्मति हो वही अपनी सम्मति।

पंच जहाँ परमेश्वर—पंचों का न्याय मान्य होता है।

पंचों का कहना सिर माथे पर परनाला वहीं का वहीं रहेगा—अपनी बात पर डटे भी रहना और दूसरों से सहमति भी दिखाना। अच्छी बात है इसके पास पचास रुपये नहीं हैं तो अपनी गौ ही मुझे दे दे। वाह बड़ी रियायत की, हम तो कहते हैं बेचारा गरीब है उसे छोड़ दो, गौ दे तो तुम्हारा क्या एहसान हुआ। यह तो वही बात हुई कि पंचों का......।

पढ़े तो हैं पर गुढ़े नहीं—विद्या तो पढ़ी है पर अभी अनुभव नहीं है। जो पढ़ा लिखा विद्वान होकर भी सांसारिक व्यवहार को न समझे उसे कहा जाता है।

पढ़ें फारसी बेचें तेल यह देखो कुदरत के खेल—जब कोई पढ़ा-लिखा आदमी छोटा काम करे तब कहा जाता है।

पत्थर को जोंक नहीं लगती—निर्दय का हृदय नहीं पसीजता। मेरा नाम बदल देना यदि तुम लाला धनीराम से चार पैसे निकाल लो तो। यतीमखाने की दुहाई दो, चाहे विधवा आश्रम की, वह कौड़ी नहीं देने का, भाई, पत्थर को......।

पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे—दूसरों को उपदेश सब देते हैं परन्तु उस पर आचरण बहुत कम व्यक्ति करते हैं।

पहले घर में पीछे मस्जिद में—पहले घर वालों को तृप्त किया जाता है, पीछे बाहर के लोगों की सेवा आदि का विचार होता है। तुम्हारी मां बीमार पड़ी हैं पर तुम उन्हें पूछते नहीं और बाहर वालों की सेवा करने को सवेरे से शाम तक फिरा करते हो। भाई, सुनो पहले...।

पराधीन सपने सुख नाहीं—जो पराई नौकरी करे वा दूसरे के अधीन रहे उसे कभी सुख नहीं मिलता। भाई तुम्हारा अपना काम है, दिल आया किया; दिल आया न किया। पर हम नौकर हैं, हमें तो मालिक जब तक कहेगा तब तक बैठना होगा, क्या करें पराधीन...।

परोपकाराय सतां विभूतयः—साधुओं की विभूति (संपत्ति) दूसरों की भलाई के लिए ही होती है।

पहले लिख और पीछे दे, कमती हो तो मुझसे ले—पहले लिखकर बाद में देने से हिसाब में गड़बड़ नहीं होती।

पहले आत्मा फिर परमात्मा—देखो 'पहले घर में पीछे मस्जिद में।'

पाँच पंच मिल कीजै काजा हारे-जीते कछु नहिं लाजा—मिलकर काम करने से हानि होने पर भी कोई लज्जित नहीं होता।

पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं—सब आदमी एक से नहीं होते। इनके बड़े भाई तो बड़े शरीफ़ हैं पर ये हैं अव्वल दर्जे के चालाक। दूसरा—भाई पाँचों उँगलियाँ......।

पाँच सवारों में भरती होना या मिलना—जब कोई मनुष्य अपनी तुलना ऐसे मनुष्य से करे जो उससे बहुत ऊँचे हों।

पागल के क्या सिर सींग होते हैं—पागलों के कोई विशेष चिह्न नहीं होता। जब कोई आदमी पागलों की-सी बातें करे तब कहा जाता है।

पानी पीकर जात पूछना—काम करने से पहले शंका का निवारण कर लेना चाहिये, काम हो चुकने पर जब उसका विचार किया जाय तब कहा जाता है। राम—जो लड़का मुझसे किताब ले गया है तुम उसे जानते हो कि नहीं ? श्याम—अब तो भला मैं जानता हूँ, किन्तु कल्पना करो मैं उसे न जानता होता तो तुम क्या करते ? तुम्हें पहले पूछ लेना चाहिये था ? तुमने तो पानी पीकर जात पूछने की बात की।

पानी मथने से घी नहीं मिलता—मूर्ख को उपदेश देने से अथवा कंजूस की सेवा करने से कुछ प्राप्ति नहीं होती।

पियै रुधिर पय ना पियै लगी पयोधर जोंक—स्तन में लगी हुई जोंक खून ही पीती है दूध नहीं पीती, अर्थात् नीच मनुष्य अवगुण ही ग्रहण करते हैं।

पीर बावरची भिश्ती खर—साधारणतया ब्राह्मण को या उस आदमी को जो हर प्रकार के काम करे, कहा जाता है। ब्राह्मण पुरोहिताई करते हैं, रसोई पकाते हैं, जल पिलाते हैं तथा जब साथ में चलें तो भार भी उठा सकते हैं।

पूछते-पूछते दिल्ली चले जाते हैं—जब किसी आदमी से कहीं जाने को कहा जाय और वह कहे कि मुझे रास्ता नहीं मालूम तब कहा जाता है।

पूत आपनो सबको प्यारो—अपनी सन्तान सबको प्यारी होती है।

पेट जो चाहे सो करावे—पेट पालने के लिए हर तरह के काम करने पड़ते हैं। जब पेट के लिए कोई बुरा काम करे तब कहा जाता है।

पेट पालना कुत्ता भी जानता है—स्वार्थी मनुष्य, जिसे अपने पेट पालने के सिवा और किसी की चिंता नहीं उसके लिए कहा जाता है।

प्यासा कुएँ के पास जाता है कुआँ प्यासे के पास नहीं जाता—जिसे गरज़ होती है वही जाता है।

प्रभुता पाहि काहि मद नाहीं—अधिकार तथा धन संपत्ति पाकर किसको घमंड नहीं होता।

प्रेम में नेम कहाँ—प्रेम में नीति और संयम का पालन नहीं होता।

फटा मन और फटा दूध फिर नहीं मिलता—जब किसी से बिगाड़ हो जाय तब कहा जाता है।

फ़तह और शिकस्त खुदा के हाथ है—किसी की जीत निश्चित नहीं होती।

फलेगा सो झड़ेगा—जिसकी अत्यधिक उन्नति होती है उसकी अवनति भी अवश्य होती है।

फ़ल्दा खाते दाँत टूटें तो बला से—जिस आपत्ति का प्रतीकार न हो सके उसे सह लिया जाता है, उसके लिए सोच करना वृथा है।

फिसल पड़े की हर गंगा—भूल से काम बिगड़ जाने पर यह जताना कि यह जान बूझ कर बिगाड़ा गया है।

बंदर के हाथ आइना—व्यर्थ है, क्योंकि वह बदशकल होता है और उसे फोड़ डालता है।

बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद—उसके विषय में कहते हैं, जो किसी वस्तु-विशेष या व्यक्ति-विशेष की कद्र न जानता हो। कभी पी के भी देखी है, वह सरूर आता है कि क्या कहें! आल्हा! उपदेश झाड़ने आया है कि शराब मत पिओ। भला तुम क्या जानो इसके गुण! बन्दर...।

बंदा जोड़े पली-पली अरु राम लुढ़ाये कुप्पा—जब चिरसंचित वस्तु एक दम नष्ट हो जाय तब कहा जाता है। गरीब ने सारी उमर खून पसीना एक करके सौ दो सौ रुपये जोड़े थे पर वे सब पुत्र की बीमारी में खर्च हो गये हैं। इसे कहते हैं बंदा......।

बकरी की जान गई खाने वाले को मज़ा न आया—जब कोई

किसी के लिए मर मिटे पर वह उसका एहसान न माने तब कहा जाता है।

बकरी ने दूध दिया पर मेंगनी डाल कर—उपकार तो करना पर साथ ही दिल भी दुखा देना। आखिर तुमसे पाँच रुपये ले ही गये, पर क्या फायदा, सारा बाज़ार तुमने इकट्ठा कर लिया, चार सुनी चार सुनाईं। यह तो वही बात हुई, बकरी......।

बकरी की माँ कबतक खैर मनायेगी—आखिर मारा ही जायगा, आज नहीं तो कल। भाग गया तो क्या पुलिस उसे छोड़ने वाली है? कहीं-न-कहीं पकड़ ही लेगी। भला बकरे की......।

बगल में छुरी मुँह में राम—जो ऊपर से मित्र की सी बातें करे और भीतर से दुश्मनी रखे उसके लिए कहा जाता है।

बजा कहे जिसे आलम उसे बजा समझो—संसार जिसे अच्छा कहे वही अच्छा है।

बड़ी फ़ज़र चूल्हे पर नज़र—सवेरा हुआ और खाने की फिक्र लगी।

बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है—बलवान निर्बल को दबाता है।

बड़े बर्तन की खुरचन भी बहुत है—बड़े आदमी चाहे कितने गरीब हो जाँय पर उनके यहाँ कुछ न कुछ रहता ही है।

बड़े (ऊँचे) बोल का सिर नीचा—अहंकारी नीचा देखता है। इतनी डींग मारा करते थे, हम भी समझा करते थे बड़े पहलवान हैं, पर विक्रम ने तो आज इनको ऐसा लपेटा कि चारों खाने चित। सच है बड़े बोल......

बड़े मियाँ सो बड़े मियाँ छोटे मियाँ सुभान अल्ला—जब छोटा बड़े से बढ़कर कोई काम करे तब कहा जाता है।

बड़ों के कहे का और आँवलों के खाये का पीछे स्वाद आता है—इनका गुण पीछे मालूम होता है।

बड़ों के कान होते हैं आँख नहीं—बड़े आदमी जैसा कुछ भी भला-बुरा अपने आदमियों द्वारा सुनते हैं वैसा ही उन्हें विश्वास हो जाता है। स्वयं देखकर निश्चय करने का उन्हें अभ्यास नहीं होता। मैं सवेरे दफ्तर के समय से पहले ही वहाँ पहुँचता था और शाम छः बजे के लगभग आता था, पर देवेन्द्र ने पता नहीं सुपरिंटेंडेंट साहब को क्या सिखाया कि उन्होंने मुझे बिना कुछ सुने ही यह कह कर निकाल दिया कि तुम रोज़ बारह बजे आते हो, सच है बड़ों के...।

बद अच्छा बदनाम बुरा—वस्तुतः बुरा हो जाना उतना नहीं अखरता जितना झूठा कलंक लगना। मैं आप से सत्य कहता हूँ मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया। यह केवल पंडित जी की करतूत है, उन्होंने मेरे बारे में ऐसा झूठ फैला दिया है कि मैं यहाँ किसी को मुँह दिखाने लायक नहीं रहा। मैंने सचमुच कुछ पाप किया होता तो मुझे इतना दुःख न होता, क्योंकि बद...।

बन गये के लाला जी और बिगड़ गये के चूतिया—यदि काम में सफल हो जाय तो लोग प्रशंसा करते हैं और बिगड़ जाय तो सब गाली निकालते हैं।

बनिक-पुत्र जाने कहा गढ़ लेवे की बात—बनिये का पुत्र किले नहीं जीत सकता, अर्थात् जिसका जो काम है वही उसे कर सकता है।

बनिये की सलाम बेगरज़ नहीं होती—बिना स्वार्थ के बनिया कोई काम नहीं करता।

बरु भल बास नरक कर ताता, दुष्ट संग जनि देहि विधाता—बुरों की संगति दुखदायी होती है।

बहुते जोगिन मठ उजाड़—जहाँ बहुतों का साझा होता है वहाँ काम ज़रूर खराब होता है। जब हम अकेले थे तब थोड़ा सा कमाकर अपना काम चला लेते थे, पर जब हमने काम बढ़ाने के लालच में बहुतों को मिला लिया तब पिछला भी खराब होगया। इसी से तो कहा है बहुते जोगिन...।

बाँझ क्या जाने प्रसूत की पीड़ा—जिस पर विपत्ति पड़ती है वही जानता है। तुम दिन-भर बाप-दादा की कमाई पर चैन उड़ाते हो; तुम्हें क्या पता कि पैसा कमाने के लिए कैसा पसीना बहाना पड़ता है, जेठ मास की दुपहरी में हमारी तरह काम पर जुटना पड़े तो पता लगे; भला बाँझ क्या......।

बाँबी में हाथ तू डाल मन्त्र मैं पढ़ूँ—जब कोई जोखिम का काम तो दूसरे को सौंपे और आसान काम आप ले तब कहा जाता है। तू झट से जाकर दो आम तोड़ ला, मैं यहाँ देखता हूँ कि माली न आ जाय। वाह! यह खूब कही बाँबी......।"

बाँह गहे की लाज—जिसका हाथ पकड़ लिया उसे निभाना चाहिये।

बातों से काम नहीं चलता—जब काम करने के समय या रुपया देने के समय कोई खाली बातों में टाले तब कहा जाता है।

बादल फटे तो कहाँ तक थिगली—जो काम बहुत बिगड़ गया हो और सुधरने लायक न हो वह नहीं सुधर सकता।

बाप न मारी पीदड़ी बेटा तीरंदाज—जो बहुत शेखी बघारता हो उसे व्यंग्य से कहा जाता है।

बाप भला न भैया सबसे भला रुपैया—रुपया सबसे नाता तुड़वा डालता है। चार-पाँच बरस पहले तक तो दोनों भाई बड़े प्रेम से रहते थे, पर अब जानी दुश्मन बने हुए हैं। यह रुपये की माया है, पिता की जायदाद के बँटवारे के समय से ही दोनों में झगड़ा शुरू हो गया था। तभी तो कहा है बाप भला......।

बामन कुत्ता बानिया जब देखे गुर्राय—ब्राह्मण, कुत्ता और बनिया अपनी जातिवालों को नहीं देख सकते।

बार बार चोर की एक बार साह की—कभी न कभी चालाकी खुल जाती है।

बारह बरस दिल्ली में रहे भाड़ ही झोंका—उत्तम स्थान में रह कर भी जब कुछ न सीख सके तब। बनारस में इतने दिनों तक संस्कृत पढ़ते रहे और इस छोटे से श्लोक का भी अर्थ नहीं लगा सकते। वाह, बारह बरस......।

बारह गाँव का चौधरी अस्सी गाँव का राव, अपने काम न आय जो ऐसी-तैसी में जाय—जो अपनी सहायता न करे वह किसी काम का नहीं। तुम्हें क्या फ़िक्र, तुम्हारे ससुर तो बड़े अमीर हैं। भाई, हमें उनसे क्या, जब वे हमें पूछते तक नहीं। हमारे लिए तो बारह गाँव......।

बावन तोले पाव रत्ती—बिलकुल ठीक है।

बासी बचे न कुत्ता खाय—कार्य समाप्त करके निश्चिन्त होना। दो सफे रह गये हैं, सवेरे लिख लूँगा, पर वे ताश खेलने वाले सवेरे सवेरे ही न आ जायँ। तो क्यों नहीं खतम करके ही सोते ? बासी...।

बाहर टेढ़ो फिरत है बाँबी सूधो साँप—अपने घर में ठग लोग भी छल-कपट छोड़ देते हैं।

बिंध गया सो मोती रह गया सो सीप—जो काम में लग गया सो खरा, दूसरा किसी काम का नहीं। रामलाल थर्ड डिविज़न में पास हुआ था उसे तो प्रोफ़ैसरी मिल गई और इन फर्स्ट डिविज़न वालों को किसी ने पूछा भी नहीं। अजी ! ये क़िस्मत के खेल हैं, बिंध...।

बिच्छू का काटा रोवे, साँप का काटा सोवे—बिच्छू के काटने से दर्द होता है, पर साँप के काटने से घातक नींद आती है अर्थात् मीठी मार बुरी होती है।

बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख—मिलना होता है तो आप ही मिलता है, माँगने से भीख भी नहीं मिलती।

बिना रोये तो माँ भी दूध नहीं पिलाती—यत्न करना ही पड़ता है, कोई वस्तु अपने आप नहीं मिल जाती। यह स्वराज्य है, यों

बातों बातों में नहीं मिलने का। सरकार इतनी कोमल नहीं कि तुम्हें कहे कि लो यह स्वराज्य धरा है। इसके लिए कुर्बानी करनी हो पड़ेगी, बिना रोये......।

बिल्ली के भागों छींका टूटा—जब अकस्मात् इष्ट सिद्धि हो जाय तब कहा जाता है। मैं अवश्य फेल हो जाता क्योंकि मेरा चौथा पेपर बड़ा खराब हुआ था। यह अच्छा हुआ है कि पेपर आउट हो गये और फिर से परीक्षा होगी। मुझे और क्या चाहिये था, बिल्ली...।

बिस्मिल्लाह ही गलत है—काम के शुरू में ही विघ्न पड़ जाय या जब कोई किसी काम के प्रारम्भ में ही भूल कर दे, तब कहा जाता है। इसी अर्थ में 'प्रथमे ग्रासे मक्षिकापातः' या 'पहले ग्रासहिं माँछी मारी' का भी प्रयोग होता है।

बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेय—गुजरी हुई बात का सोच न करके आगे के सुधार का उपाय सोचना चाहिए।

बीमार की रात पहाड़ बराबर—रोगी की रात बड़ी मुश्किल से बीतती है।

बुजुर्गी ब अक्ल अस्त न ब साल—बड़प्पन बुद्धि की अधिकता के ऊपर निर्भर है, उमर की अधिकता पर नहीं। जब बड़ी बड़ी सफेद दाढ़ी वालों को उस पढ़े लिखे छोकरे के इशारे पर काम करते देखा तब यह कहना पड़ा कि बुजुर्गी ब अक्ल......।

बे-वसीले नौकरी नहीं मिलती—बिना सिफारिश के नौकरी नहीं मिलती।

बैठे से बेगार भली—कतई कुछ न करने से मुफ्त में काम करना अच्छा। यह क्या कर रहे हो? कुछ नहीं, यों ही खयाल आया कि लेटे-लेटे तो बीमार हो जाऊँगा यह चारपाई ही बुन लूँ, बैठे .।

ब्याह नहीं किया तो क्या बरात तो गये हैं—स्वयं यह काम नहीं किया तो क्या, दूसरों को करते तो देखा है।

बोलती बंद हो गई—मर गया।

भई गति साँप-छछूँदर केरी—जब किसी काम को न करते बने न छोड़ते, अर्थात् दोनों ओर ही आशंका जान पड़े, तब कहा जाता है। ऐसा प्रसिद्ध है कि जब साँप छछूँदर को पकड़ता है तब यदि उसको निगले तो कोढ़ी हो जाता है, और यदि उगल दे तो अंधा हो जाता है।

"धरम सनेह उभय मति घेरी, भई गति साँप छछूँदर केरी!"

भरी थाली में लात मारना—जब कोई अभाग्यवश अपने बने हुए काम को छोड़ दे या आती हुई संपत्ति को लात मार दे तब कहा जाता है।

भरे पेट पर शक्कर खारी—पेट भर जाने पर अच्छी से अच्छी वस्तु में भी स्वाद नहीं आता।

भले का ज़माना नहीं है—जब किसी के साथ भलाई करने का उलटा फल हो तब कहा जाता है।

भागते भूत की लँगोटी ही सही—जहाँ से कुछ भी मिलने की आशा न हो वहाँ से जो थोड़ा-बहुत मिल जाय वही अच्छा है। लेने तो ढाई सौ रुपये थे पर वह दीवाला ही निकाल बैठा है; दस बारह फेरे मारने पर ये पच्चीस रुपये मिले हैं, मैंने भी कहा चलो भागते भूत......।

भानु उदय दीपक केहि कामा—बलवान अथवा गुणी के आगे कमज़ोर अथवा मूर्ख की कद्र नहीं होती।

भा विधिना प्रतिकूल जबै, तब ऊँट चढ़े पर कूकर काटे—दैव के विरुद्ध होने पर असंभव हानि भी हो जाती है।

भूख लगी तो घर की सूझी—भूख लगने पर घर की याद आती है।

भूखे भजन न होय गोपाला—जब तक पेट में कुछ खाने को

न पड़े तब तक भगवद्‌भजन भी नहीं होता। क्यों बाबा, तुम सवेरे सवेरे माँगने को निकल पड़ते हो, कभी राम-भजन तो किया करो। बाबू, भूले भजन......।

भूल गये राग-रंग भूल गये छकड़ी, तीन चीज़ याद रहीं नोन तेल लकड़ी--जब आदमी गृहस्थी के फेर में पड़ जाता है और दीन-दुनियाँ को भुला बैठता है, तब कहा जाता है।

भेड़ पूँछ भादों नदी को गहि उतरे पार—भेड़ की पूँछ जैसी तुच्छ चीज़ लेकर कौन भयंकर बरसाती नदी पार कर सकता है। अर्थात् छोटे के सहारे बड़ा काम नहीं हो सकता है। सुशीला, तुम समझती हो कि इस दो अक्षर जानने वाले पंडित से पढ़कर तुम प्रभाकर परीक्षा में पास हो जाओगी, यह तुम्हारी दुराशा मात्र है। भला भेड़ पूँछ भादों नदी......।

भेड़ पै ऊन किसने छोड़ी--सब कोई भेड़ के बाल कतर लेते हैं, अर्थात् मूर्ख तथा धनी आदमी को सब मूँडने का यत्न करते हैं।

भैंस के आगे बीन बजे भैंस पड़ी पगुराय---अज्ञानी के आगे अच्छे-अच्छे उपदेश की बढ़िया बातें कहना व्यर्थ है। हरिवल्लभ के मेले पर दूर-दूर के गवैये एकत्र होकर अपना सुमधुर गाना गा रहे थे और गोपाल बैठा-बैठा ऊँघ रहा था। उसे ऊँघते देखकर मैं एक दम बोल उठा भैंस के......।

भौंकते कुत्ते को रोटी का टुकड़ा—छोटे-मोटे आदमी रिश्वत लेने की इच्छा से बने-बनाये काम में अड़चन डालते हैं, उन्हें कुछ देकर ही काम सिद्ध करना होता है। मैं चार घंटे दरवाज़े पर खड़ा रहा, सिपाही ने जेल के अन्दर घुसने ही नहीं दिया, और न भाई से मिल पाया। तुम भोले ही हो, सिपाही तो यों ही किया करते हैं। चार-आठ आने दे देते तो कंधे पर चढ़ाकर छोड़ आता, इसका इलाज ही यह है, भौंकते......।

भौंर न छाँड़े केतकी तीखे कंटक जान—जिसका जिससे प्रेम होता है, वह हज़ारों बाधाएँ होने पर भी उसे नहीं छोड़ता।

मँगनी के बैल के दाँत नहीं देखते—मुफ्त में जो चीज़ आ जाय, उसे बिना जाँच किये लेना चाहिये।

मच्छड़ का हमला भयो, हाथी ऊपर आज—जब कोई कमज़ोर व्यक्ति अधिक बलवान पर हमला करता है तब व्यंग्य से कहा जाता है।

मछली के बच्चों को तैरना कौन सिखावे—पुरुष कुलक्रमागत रीति से स्वयमेव परिचित हो जाता है। यह चोरी करना कहाँ से सीखा है? अजी साहब! इसे सीखना क्या है, आप नहीं जानते, इसके बाप का नाम तो दस नंबरियों में दर्ज है हो, फिर यह चोरी न करे तो और क्या करे; मछली......।

मजनू को लैला का कुत्ता भी प्यारा—जिस पर प्रेम होता है, उसकी सब वस्तुएँ प्रिय होती हैं।

मन के लड्डुओं से भूख नहीं मिटती—विचार-मात्र करने से कोई काम पूरा नहीं होता।

मन चंगा तो कठौती में गंगा—जिसका हृदय शुद्ध है उसके घर में ही गंगा है। भाई, तुम कितने तीर्थों में घूमो, कितना दान-पुण्य करो पर जब तक तुम्हारा मन शुद्ध नहीं, ये सब व्यर्थ होंगे और जब मन......।

मनचले का सौदा है—जो चीज़ जिसे पसंद आती है वह वही खरीदता है।

मन भावे मूँड हिलावे—इच्छा होते हुए भी मना करने पर कहा जाता है। सुधीर मिठाई खाता भी जाता था और न न भी करता जाता था। यह देख गोपाल बोल उठा, मन भावे......।

मरज़ बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की—जब किसी काम को

सुधारने की जितनी चेष्टा की जाय उतना ही बिगड़ता जाय तब कहा जाता है ।

मरता क्या न करता—जो मनुष्य मरने के लिए तैयार है उसके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं । सेठ साहब, जनाब सँभाल कर बोलिए, मैं अब आपकी गाली और नहीं सुनूँगा, मैं आपके बहुत जुल्म सह चुका हूँ । अब भी आप बाज़ न आए तो अपना और आप का, दोनों का, यहीं खून कर दूँगा। जानते हैं मरता .....।

मरे को मारे शाह मदार—देखो 'दैवोपि दुर्बल-घातकः' ।

मरे तो शहीद और मारे तो गाज़ी—धर्मयुद्ध के लिए उत्तेजित करने के लिए कहा जाता है । प्रायः मुसलमान इसका प्रयोग करते हैं । सस्कृत है इसी अर्थ में "हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे मही़म्" का प्रयोग होता है ।

मलयागिरि की भीलनी चंदन देत जराय—जो चीज़ बहुत अधिक हो, उसकी कद्र नहीं होती ।

महाजनो येन गतः स पंथा—महापुरुषों के चरित्र का अनुकरण करना चाहिए ।

माँ के पेट से कोई सीख कर नहीं निकलता—काम सीखने से ही आता है ।

माँगे हरड़ दे बहेड़ा—उलटी समझ पर । अरे ! ज़रा कानों की मैल निकलवा ! मैंने दवा माँगी थी तू दवात ले आया है, बुद्धू कहीं का, माँगे हरड़......।

मान का पान, अपमान का लड्डू—सम्मान सहित प्राप्त साधारण वस्तु अपमान-पूर्ण अमूल्य वस्तु से कहीं अधिक मूल्यमान है ।

मान न मान मैं तेरा मेहमान—ज़बरदस्ती गले पड़ना । कितना उजड्ड है, जितना मैं किनारे खिसकना चाहता हूँ उतना ही यह चिमटता जाता है । मैंने साफ-साफ कह भी दिया कि यहाँ

जगह नहीं है, कोई और ठिकाना देखो, पर यह यहाँ से टलता ही नहीं; यह तो वही हुआ मान न मान......

मानो तो देव नहीं तो पत्थर—विश्वास से सब कुछ होता है। मूर्त्ति पर यदि विश्वास और श्रद्धा हो तब तो वह देवता है नहीं तो पत्थर है।

माया को माया मिले कर कर लंबे हाथ—धन ही धन को खींचता है।

माया तेरे तीन नाम, परसू परसा परसराम—पैसे वाले की ही कद्र होती है। गरीब आदमी को लोग 'परसू' कहकर पुकारते हैं, इसकी अवस्था कुछ सुधर जाय तो उसे 'परसा' कहने लगते हैं, और यदि वह अमीर हो जाय तो उसका नाम 'परसराम' हो जाता है।

मार के आगे भूत भागे—जो मूर्ख पुरुष अन्य किसी उपाय से सीधी राह पर न आए वह पिटने से झट सीधा हो जाता है। दारोगा—अब्दुल्ला, जाओ इस बदमाश को ले जाओ, इसके चूतड़ों पर जूते लगाओ और जब तक बके नहीं लगाते जाओ। अपराधी—नहीं हजूर! मैं बताता हूँ, सच सच बताता हूँ। दारोगा—देखा, मार का नाम सुनते ही बोल उठा! मार के......।

मारते के अगाड़ी और भागतों के पिछाड़ी—डरपोक को व्यंग्य से कहा जाता है। अब्दुल्ला बड़ा बहादुर है उसका असूल है मारते के......।

मियाँ की जूती मियाँ के सिर—किसी की चीज़ से उसी का नुकसान किया जाय तब कहा जाता है।

माल मुफ्त दिल बेरहम—जब कोई पराये धन को बड़ी लापरवाही से खर्च करे तब कहा जाता है।

मियाँ बीवी राज़ी तो क्या करेगा काज़ी—जब दोनों आपस में मिल जायँ तो बीच में दखल देने की ज़रूरत नहीं रहती।

मिस्सों से पेट भरता है किस्सों से नहीं—रोटियों से पेट भरता है, खाली बातों से पेट नहीं भरता।

मीठा-मीठा गप्प कड़ुआ-कड़ुआ थू—स्वार्थी मनुष्य को कहा जाता है जो अच्छी-अच्छी चीज़ तो रख ले और खराब को फेंक दे।

मुफ्त की शराब तो काज़ी को भी हलाल है—मुफ्त मिले तो वस्तु चाहे बुरी हो तो भी उसे कोई नहीं छोड़ता। छोड़ यार, ऐसा क्या सिद्धान्त है! कौन सा सिनेमा पास है? चल तू टिकट न लेना, मैं तेरे लिए पैसे खर्च दूँगा, और बता क्या कहता है? मुफ्त की...।

मुर्गी को तकले का घाव भी बहुत है—ग़रीब और निर्बल के लिए ज़रा सी हानि भी बहुत होती है। क्यों भाई तुम्हारे १०) क्या गुम हुए, तुम ने तो ज़मीन-आसमान एक कर दिया। हाँ साहब आप अमीर हैं, आपको १०) की क्या परवाह पर हम जैसे गरीबों को तो वही बहुत है; मुर्गी......।

मुँह माँगी तो मौत भी नहीं मिलती—किसी की भी इच्छा बिलकुल पूर्ण नहीं होती, चाहे वह कितनी भी तुच्छ क्यों न हो। बारह आने लगेंगे, लेना हो तो ले, नहीं तो दूसरी दुकान देख। तू तो लाला, बड़ा सख्त है! अच्छा चल न तेरी न मेरी, ग्यारह आने ले। अब तू भी तो कुछ कम कर, मुँह माँगी......।

मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक—जिस की सामर्थ्य परिमित हो उस के विषय में कहते हैं। तुम मेरा कर ही क्या सकते हो, मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक ही है न, अधिक से अधिक बड़े बाबू से शिकायत कर दोगे और क्या?

मेंढकी को भी जुकाम हुआ है—जब छोटा आदमी भी नखरा करे तब कहा जाता है।

मेरी तेरे आगे तेरी मेरे आगे—चुगली करना।

मेरी ही बिल्ली मुझी से म्याँव—अपने उपकार करने वाले पर

ही आफत लाना। अजी, हमारी दुकान पर ही तो वह शागिर्द था। सारा काम उस ने यहीं से सीखा। आज अलग दुकान खोल ली है तो हमीं से कंपिटीशन करने चला है, मेरी......।

मोम की नाक है जिधर चाहे घुमा लो—भोले-भाले आदमी को कहा जाता है, जो दूसरे के कहने पर लग जाय। राय साहब तो भोले-भाले आदमी हैं, उनका इसमें क्या अपराध? उन्हें तो आप जो कहें वे सत्यवचन कह देंगे। मैंने ऐसा सीधा आदमी कभी नहीं देखा, मोम...।

मौके का घूँसा तलवार से बढ़कर—साधारण बात भी यदि मौके पर कही जाय तो उसका बहुत असर होता है। समय पर काम हो जाने से बहुत लाभ होता है।

मौत और ग्राहक का क्या पता किस वक्त आ जाय—मौत और ग्राहक का कोई समय निश्चित नहीं।

मौत की दारू नहीं—मृत्यु का कोई इलाज नहीं, जब बहुत इलाज करने पर कोई बस न चले तब कहा जाता है।

मौनं सम्मतिलक्षणम्—चुप रहना सम्मति का लक्षण है।

मौनं सर्वार्थसाधनम्—चुप रहने से सब काम हो जाते हैं।

म्याऊँ के ठौर को कौन पकड़े—असल भय तो बना हुआ है; जो लोग ऊपर से बहुत वीरता दिखाते हैं पर काम पड़ने पर डर के मारे भाग जाते हैं, उन्हें कहते हैं।

यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः—यदि यत्न करने पर भी काम पूरा न हो तो उसमें अपना कोई दोष नहीं।

यथा नाम तथा गुण—जैसा नाम था वैसा ही गुण निकला।

यथा राजा तथा प्रजा—जैसा स्वामी वैसा ही सेवक।

यह मुँह और मसूर की दाल—हैसियत से अधिक इच्छा रखनेवाले को कहा जाता है। मैं तो पार्कर का पैन लूँगा। अच्छा जी! शीशा लेकर अपना मुँह तो देखो, यह मुँह......।,

यहाँ कुम्हड़-बतिया कोउ नाहीं, जो तर्जनी देखि डरि जाहीं—लक्ष्मण जी का कथन परशुराम के प्रति—यहाँ कोई ऐसा नहीं है जो तुम्हारे क्रोध से डर जाय । जब कोई झूठा रोब दिखाकर डराना चाहे, तब कहा जाता है ।

यहाँ के बाबा आदम ही निराले हैं—यहाँ सब बातें अजीब ही होती हैं ।

या बेईमानी तेरा ही आसरा—जब कोई बेईमानी करता है ; तब कहा जाता है ।

या तो बैल चले नहीं चले तो मैंढा ढाय—या तो काम ही न करे, करे तो हद से ज्यादा ।

रघुकुल रीति यही चलि आई, प्राण जायँ पर वचन न जाई—रामचन्द्र जी का कथन—रघुकुल में यही रीति रही है कि प्राण भले ही चले जायँ पर रघुवंशी अपने वचन से नहीं टलते । अपनी प्रतिज्ञा की दृढ़ता दिखाने के लिए कहा जाता है ।

रवि नहिं लखियत बारि मसाल--सूर्य को कोई मशाल जला कर नहीं देखता । गुणवान अपने गुणों से ही प्रसिद्ध होता है ।

रविहूँ की इक दिवस में तीन अवस्था होय—एक सी अवस्था किसी की भी नहीं रहती ।

रस्सी जल गई पर बल न गया--बरबाद होने पर भी अपनी अकड़ न छोड़ने पर । मकान तो सारे रहन धरे हैं, पर अभी इनकी वह दीवानी की अकड़ नहीं जाती । देखो ना, कुल्ले पर तुर्रा छोड़े मूछों पर बल दिये कैसे छड़ी फटकारते अकड़े चले जाते हैं, रस्सी......।

राई को पर्वत करे पर्वत को करे राई--परमेश्वर की लीला बड़ी विचित्र है ।

राजहंस बिन को करे छीर नीर को दोय—पारखी बिना अच्छे बुरे का निर्णय कौन कर सकता है ?

राजा योगी किस के मीत—राजा और फकीर बेमुरव्वत होते हैं।

रातों रोई एक ही मुआ—सारी रात कोसा पर एक ही मरा। बहुत परिश्रम करने पर भी थोड़ा ही लाभ हो तब कहा जाता है। विलायत से कमीशन आया, यहाँ से बड़े-बड़े नेता विलायत गये, सैकड़ों अखबार काले किये गये, पर आखिर फल क्या निकला! यही नया शासन-विधान ही न! तभी तो कहते हैं रातों......।

रानी रूठेगी अपना सुहाग लेगी, क्या किसी का भाग लेगी—मालिक रूठेगा तो अधिक से अधिक नौकरी ही छीन लेगा और इससे अधिक क्या कर सकता है?

राम राम जपना पराया माल अपना—मक्कारी और फरेब से माल लूटने वालों को कहा जाता है।

रुपया परखै बारंबार आदमी परखै एक बार—आदमी की परीक्षा एक बार में हो जाती है।

रोग का घर खाँसी, झगड़े का घर हाँसी—जिस प्रकार खाँसी सब रोगों की जड़ है उसी प्रकार हँसी मखौल सब झगड़ों का मूल है।

रोज कुआँ खोदना रोज़ पानी पीना—रोज़ मज़दूरी करके कमाना और उसी से निर्वाह करना। ग़रीब के लिए कहा जाता है।

रोते क्यों हो? बोले "शक्ल ही ऐसी है"—रोनी सूरतवालों के लिए कहा जाता है।

लंबा टीका मधुरी बानी, दगाबाज़ की यही निशानी—दगाबाज़ हमेशा पाखंड रचता है।

लकड़ी के बल (बंदरी) बकरी नाचे—मूर्ख भय दिखाने से काम करता है।

लहू लगा शहीदों में मिलना—झूठी प्रशंसा चाहने वालों के लिए कहा जाता है। एक दिन के लिए जेल क्या हो आए, लहू लगा के शहीदों में मिल गए हैं।

लातों के भूत बातों से नहीं मानते—नीच लोग मार खाये बिना सीधे नहीं होते। जनाब सैनिटरी इन्सपैक्टर साहब! बेचारे मेहतरों पर कुछ तो तरस किया करो, उस बेचारे का हंटरों से आप ने बुरा हाल कर दिया। जनाब! जब आपके पास आएँगे तो हंटर छोड़कर आएँगे; पर इनको यह हंटर ही सीधा करता है। आप क्या जानें, लातों के......

लाल गुदड़ी में नहीं छिपते—अच्छे आदमी बुरी स्थिति में भी छिपे नहीं रहते।

लिखे मूसा पढ़े खुदा—खराब लिखने वालों को कहा जाता है, जो अपना लिखा हुआ आप भी बड़ी मुश्किल से पढ़ सकते हैं।

लेना एक न देने दो—बिलकुल हिसाब साफ।

लोक का डर न परलोक का डर—उस पापी आदमी के लिए प्रयुक्त जो न बदनामी से डरे और न ईश्वर से डरे।

वकीलों के हाथ पराई जेब में—वकील दूसरे के धन पर अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

वक्त पड़े पर जानिये को वैरी को मीत—मित्र और शत्रु की जाँच समय पड़ने पर या विपत्ति पड़ने पर होती है!

वक्त पर सब कुछ करना पड़ता है—समय पड़ने पर नीच से नीच काम भी करना पड़ता है।

वहम की दवा लुकमान के पास भी नहीं है—शक्की आदमी को कोई भी नहीं समझा सकता।

वा सोने को जारिये जासों टूटे कान—उस सुन्दर चीज़ की ज़रूरत नहीं जिससे उलटा तकलीफ हो। बहन, तुम यह फ्लैक्स की ऊँची एड़ी के नये फैशन के बूट अपने पास ही रखो, मेरे तो इनसे पैरों में छाले पड़ गये, मुझे तो यह अपनी चपली ही पसंद है, वा सोने को......

वाह पीर औलिया, पकायी थी खीर तो हो गया दलिया—अच्छा करने चले बुरा हो गया।

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः—विपत्ति या पतन के समय बुद्धि भी भ्रष्ट हो जाती है।

विधि कर लिखा को मेटनहारा—होनहार कभी नहीं मिटती।

विपद् बराबर सुख नहीं जो थोड़े ही दिन होय—थोड़े दिन की मुसीबत भी अच्छी है, क्योंकि उसमें बहुत कुछ अनुभव हो जाता है।

विष निकस्यो अति मथन ते रत्नाकरहूँ माहिं—अधिक बात बढ़ जाने से ज़रूर लड़ाई हो जाती है।

विष सोने के बरतन में रखने से अमृत नहीं हो जाता—बुरा आदमी कितना भी भलेमानसों के रहे, अच्छा नहीं हो सकता। कभी किसी का स्वभाव भी बदला है ? हाजी हो आया, तो आपने क्या समझा था कि चोरी करना भी छोड़ आया, विष सोने के......।

शर्म की बहू नित भूखी मरे—जो बहू खाने-पीने में शर्म करती है, वह भूखी मरती है। खाने-पीने में शर्म करने वालों के लिए कहा जाता है।

शत्रोरपि गुणा वाच्याः दोषा वाच्या गुरोरपि—गुण शत्रु के भी तथा अवगुण गुरु के भी कह देने चाहिए।

शक्करखोर को शक्कर मिल ही जाती है—जिसको जिस बात की ज़रूरत होती है वह उसकी सब जगह पूरी हो ही जाती है। अब तक कहाँ थे ? क्लब गया था, वहाँ ब्रिज खेलते-खेलते देर हो गई। अच्छा। मिल गये न आपको ब्रिज के साथी ? घर में न सही तो क्लब में सही। शक्करखोर.....।

शिकार के वक्त कुतिया हगाई—काम पड़ने पर जो हीले हवाले करे उसके विषय में कहते हैं। जल्दी करो, मैच शुरू होने में तो पाँच ही मिनिट रह गये हैं। मैं नहीं जा सकता, मेरे सिर दर्द हो रहा है। लो शिकार......।

शुतर बेमुहार—बिना नकेल का ऊँट, स्वच्छंद व्यक्ति।

शुभस्य शीघ्रम्—शुभ कार्य में शीघ्रता होनी चाहिए।

शैतान की आँत—बहुत लंबी वस्तु।

शौकीन बुढ़िया चटाई का लहँगा—कोई बेमेल बात करे तब कहा जाता है। वाह जी नये शौकीन, नीचे धोती, गले में नेकटाई और सिर पर टोपी, तुम्हारा वही हाल है, शौकीनी बुढ़िया......।

संतोषं परमं सुखम्—सन्तोष का होना ही परम सुख है।

सइयाँ भये कोतवाल अब डर काहे का—किसी आदमी को बड़ा ओहदा मिल जाय तब उसके आश्रित और मुँहलगे व्यक्ति कहा करते हैं।

सईसों का काल मुंशियों की बहुतायत—जब अनपढ़ काम करने वाले व्यक्ति न मिलें पर पढ़े-लिखे बाबू दर-दर भटकते पाये जायँ अर्थात् जब शिक्षित आदमियों को नौकरी न मिले तब कहा जाता है।

सकल तीर्थ कर आई तुमड़िया तौ भी न गई तिताई—जन्म-गत दोष किसी तरह दूर नहीं होता।

सखी से सूम भला जो तुरत दे जवाब—जो देने में टाल मटोल करे उससे तो साफ जवाब देने वाला अच्छा। सेठ साहब! यह तो धर्म का काम है, कोई ज़ोर तो है नहीं, देने हों तो दे दीजिये नहीं तो क्यों हमें बार-बार फेरा डलवाते हैं। नहीं देना तो साफ जवाब दे दीजिये, हम भी एक तरफ हों, सखी से......।

सच का ज़माना नहीं—जब कोई सच कहे और उसकी बात न मानी जाय, तब कहा जाता है।

सच्चा जाय, रोता आए, झूठा जाय, हँसता आए—अदालत में प्रायः झूठे की ही जीत होती है।

सत्तर चूहे खायके बिलाई चली हज्ज को—जब कोई आजन्म पाप करके पीछे पुण्य करने लगता है, तब कहते हैं।

सदा दिवाली संत घर जो गुड़ गेहूँ होय—जिसके यहाँ खाने-पीने की कमी न हो उसके घर सदैव त्योहार है।

सदा नाव कागज़ की बहती नहीं—धोखे से पुरुष एक आध बार ही सफल हो सकता है, या कच्चा काम थोड़े दिन में बिगड़ जाता है।

सब के दाता राम—ईश्वर सब को देने वाला है।

सब दिन होत न एक समान—सदा अवस्था एक सी नहीं रहती।

समय पड़े की बात, बाज पर झपटे बगुला—जब समय खराब आता है तब दुर्बल भी सबल को सताता है।

समय पाय तरुवर फले केतिक सींचो नीर—समय आने पर ही सब काम होते हैं। असमय में अनेक यत्न करने पर भी नहीं होते।

समरथ को नहिं दोष गुसाईं—दोष करने पर भी बलवान को दोष नहीं लगता। जब कोई धनवान या बड़ा अधिकारी कुकर्म करे तब लोग व्यंग्य से कहते हैं।

सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ति—धन में सब गुण रहते हैं।

ससुरार सुख की सार, जो रहे दिन दो चार—ससुराल में दो चार दिन ही रहना चाहिए तभी सुख रहता है, हमेशा के लिए डेरा डाल देना ठीक नहीं।

सस्ता रोवे बार-बार महँगा रोवे एक बार—सस्ती वस्तु पर अन्त में अधिक खर्च हो जाता है, क्योंकि वह रोज़-रोज़ बिगड़ती रहती है। मँहगी चीज़ पर एक दफा दाम ज्यादा लग जाता है, पर रोज़-रोज़ बिगड़ती नहीं।

सहज पके सो मीठा होय—जो काम आहिस्ता-आहिस्ता हो वह सन्तोष-प्रद होता है और दृढ़ होता है।

साँच को आँच नहीं—सच्चे आदमी को कोई भय नहीं। अदालत में क्या, आप चाहे मुझे फाँसी के तख्ते पर भी खड़ा कर दें, तो

भी यही कहूँगा कि मैंने इसका हार लेना तो दूर रहा देखा तक नहीं। डर तो मुझे तब लगेगा जब मैं झूठ बोलूँ, साँच...लगती।

साँप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे—काम भी सिद्ध हो जाय और हानि भी न उठानी पड़े।

साँभर जाय अलोना खाय—जहाँ जिस वस्तु की अधिकता और सुलभता हो वहाँ भी यदि उसे कोई न पा सके तब कहा जाता है।

साने सदा सनेह में जीभ न चिकनी होय—कृतघ्न पर उपकार करना व्यर्थ है। दामाद को कितना भी दो वह कभी संतुष्ट नहीं होता, वह हमेशा सास-ससुर को यही उलाहना देता है कि आप ने मुझे क्या दिया, दिया होगा तो अपनी लड़की को, साने......।

सारी उमर भाड़ ही झोंका—व्यर्थ ही उमर गुज़ारी।

सारी देग में एक ही चावल टटोला जाता है—हाँडी का एक ही चावल देखने से मालूम हो जाता है कि सब चावल पक गये हैं या नहीं। एक बात से मन का सारा हाल जाना जाता है। नमूना देख कर माल खरीदने के समय भी कहा जाता है।

सारी रात मिमियानी और एक ही बच्चा बियानी—जो शोर गुल बहुत करे उसे कहा जाता है।

सारी रामायण सुन गये, पर यह न मालूम हुआ कि राम राक्षस था या रावण या सारी रामायण सुन के पूछा सीता किस की जोरू थी—मूर्ख को कहा जाता है, जो ध्यान से बात न सुने या सुनकर भूल जाय अथवा बहुत समझाने पर भी न समझे।

सावन हरे न भादों सूखे—सदा एक-सी हालत रहने पर कहा जाता है।

सिंह के वंश में उपजा स्यार—लायक की नालायक सन्तान होने पर।

सिर नहीं फिरा—पागल तो नहीं हो गये ?

सिर मुँडाते ही ओले पड़े—कार्यारम्भ में ही विघ्न उपस्थित होना। बजाजा की दुकान खोली ही थी कि उन्हीं दिनों कांग्रेस की पिकेटिंग शुरू हो गई। हमने कहा भाई! यह खूब हुआ सिर मुँडाते...

सीधी उँगली से घी नहीं निकलता—निरे सीधेपन से काम नहीं चलता।

सुख में निद्रा दुख में राम—सुख तो आराम से कट जाता है पर दुःख में परमात्मा याद आता है। भाई, यह तो दुनियाँ का कायदा ही है, सुख में निद्रा दुख में राम।

सुनते सुनते कान बहरे हो गये—एक ही बात को कहाँ तक सुनें।

सुनिये सब की करिये मन की—दूसरों की बात को सुन लेना चाहिये पर करना वही चाहिये जिसे अपना मन ठीक समझे।

सूखी चिनाई करते हैं—बिना जल के भोजन खाते हैं।

सूखे धानों पानी पड़ा—समय पर सहायता न मिली।

सूधे का मुँह कुत्ता चाटे—बहुत सीधापन अच्छा नहीं।

सूप बोले तो बोले, चलनी क्या बोले जिसमें बहत्तर छेद—जो स्वयं दोषी है वह दूसरों को उस दोष से बचने का क्या उपदेश दे, पैंतीस साल की उमर नहीं हुई अभी से जनाब ने ऐनक लगा ली है, झुर्रियाँ पड़ गई हैं, गालें पिचक गई हैं, और हमें उपदेश देने आये हैं स्वास्थ्य-रक्षा कैसे करनी चाहिये, सूप......।

सूरज धूल डालने से नहीं छिपता—अच्छा आदमी बुरों के बुरा कहने से बुरा नहीं हो जाता।

सूरदास खल कारी कामरी चढ़े न दूजो रंग—दुष्ट व्यक्ति पर उपदेश का असर नहीं पड़ता।

सोना जाने कसे मानस जाने बसे—सोना कसौटी पर कसने से और मनुष्य साथ रहने से जाना जाता है।

सोने में सुगंध—उत्तम वस्तु में एक और गुण आ जाय तब। जैसा तुम लिख सकते हो वैसा कभी स्टेज पर बोल भी सको तो फिर सोने......हो जाय।

सौ सुनार की एक लोहार की—कमज़ोर की [illegible] चोट तथा बलवान की एक चोट बराबर होती है।

सौ स्याने एक मत—सब स्यानों की एक ही राय होती है। भिन्न-भिन्न देश के कवियों की उक्तियाँ कई बार ऐसी मिलती हैं मानो एक दूसरे की नकल हों, वस्तुत: ऐसा नहीं होता, वह उनकी विचार शैली की समानता का फल होता है, इसीलिए कहते हैं सौ......।

हँसता जाय रोता आय रोता जाय हँसता आय—अदालत का फैसला पता नहीं क्या हो

हंसा थे सो उड़ गये कागा भये दिवान—जब किसी सज्जन के स्थान पर दुर्जन का आधिपत्य हो जाय तब कहा जाता है।

हग न सके और पेट को पीटे—काम आप न कर सकें और दोष दूसरे को दें। छः बजे तक तो तुम्हारी आँख नहीं खुलती और हमें कहते हो सैर में देर कर देते हो, हग......।

हज़ारों टाँकी सहकर महादेव होते हैं—बिना कष्ट उठाये मनुष्य ऊँचा दर्जा नहीं पा सकता।

हज्जाम के आगे सबका सिर झुकता है—गरज़ के लिये सब दबते हैं।

हड़ लगे न फिटकरी रंग चोखा ही आवे—जब बिना खर्च किये काम निकल जाय तब कहा जाता है।

हथेली पर जान लिये फिरते हैं—जिसे मरने का तनिक भी डर न हो उसे कहा जाता है।

हथेली पर सरसों नहीं जमती—बात कहते ही काम नहीं होता। जो काम करते ही तुरन्त उसका लाभ उठाना चाहे उसे कहा जाता है।

हम साँप नहीं कि जियें चाटकर मिट्टी—जब किसी को उस की मज़दूरी या खुराक नहीं मिलती तब कहा जाता है।

हरफ़न मौला—जो मनुष्य सब कामों में होशियार हो उसे कहा जाता है।

हर सट्टे गुड़ मीठा—जब कोई हर बार अपनी जीत चाहता है तब कहा जाता है।

हरी खेती गाभिन गाय मुँह पड़े तब जानी जाय—गाय जब तक बच्चा न दे तब तक तथा अन्न जब तक घर में न आ जाय तब तक उसका क्या ठिकाना? जब किसी बात का पूरा निश्चय न हो तब कहा जाता है।

हाँडी में होगा सो डोई में खुद आ रहेगा—जो मन में होगा वही बाहर ज़बान पर भी आवेगा।

हाकिम की अगाड़ी और घोड़े की पिछाड़ी मत खड़े हो—दोनों में हानि होने का भय है।

हाथ कंगन को आरसी क्या—प्रत्यक्ष वस्तु में अन्य प्रमाण की क्या आवश्यकता? इस के साथ का कपड़ा दस आने गज से कम में नहीं मिल सकता; आपने जो लिया है वह घटिया होगा। अजी साहब हाथ.....। लीजिये यह कपड़ा आपके सामने है, आप ही बताइये दोनों में क्या अन्तर है?

हाथ बेचा है कुछ जात नहीं बेची—जब मालिक अपने नौकर को कोई बुरा काम करने को कहता है तब नौकर ऐसा कहता है।

हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और—कहना कुछ और करना कुछ। ये सज्जन कल बड़े ज़ोर से लोगों को खद्दर पहनने का उपदेश दे रहे थे, आज मैं अचानक इन के घर पहुँचा तो देखा कि सारे घरवालों ने विलायती मलमल के कपड़े पहने हुए हैं। तब पता लगा कि हाथी के......

हाथी के पाँव में सब का पाँव—एक में अन्य सब बातों का

समावेश हो जाने पर। छोड़ो, सब नेत्रबिन्दु, च्यवनप्राश कफकेतु, लवण भास्कर आदि। आपको एक औषध बताता हूँ, आँखें, कमजोरी, खाँसी, अजीर्ण सब ठीक हो जायँगे। आप हरड़ का सेवन करें, हरड़ का, हाथी के पाँव...।

हाथी निकल गया दुम रह गई—सारा काम खतम हो गया थोड़ा सा बाकी है। घबरायें नहीं, बस किताब खतम हो गई है एक आध दिन और लगेगा, हाथी......।

हिमायती की घोड़ी ऐराकी को लात मारे—किसी बड़े आदमी के सहारे से अपने से अधिक शक्तिमान के साथ लड़ने पर कहा जाता है।

हिम्मते मरदां मददे खुदा—जो परिश्रम करता है परमात्मा उसी की मदद करता है। भाग्य के भरोसे रहना मूर्खता है। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने से कुछ नहीं मिलता, तुम यत्न करो, भाग्य तुम्हारी सहायता करेगा, हिम्मते......।

हिसाब जौ जौ बख़शीश सौ सौ—हिसाब कौड़ी कौड़ी का होता है, भले ही पीछे भरपेट इनाम दे दिया जाय।

हिजड़े के घर बेटा हुआ है—जब कोई ऐसा काम करता है जो उसके लिये असंभव हो, तब कहा जाता है।

सब का गुरुदेव रुपैया—धन ही सब कुछ है।

होनहार फिरती नहीं होवे बिस्से बीस—भावी होकर ही रहती है।

होनहार बिरवान के होत चीकने पात—जिस व्यक्ति को भविष्य में महत्त्वशाली बनना होता है उसके वैसे होने के लक्षण बचपन से ही दिखाई देने लग पड़ते हैं। स्वामी रामतीर्थ को बचपन ही सत्संग का बड़ा शौक था। राम और कृष्ण की कथाएँ सुनकर उनकी आँखें सजल हो जाती थीं, रोम-रोम में प्रेम का संचार हो जाता था। सच है होनहार......।

हौज़ भरे तो फव्वारे छूटें—आमदनी हो तो खर्च किया जाय।

हिन्दीरत्न-निबन्धमाला

(लेखक—बाबू गुलाबराय, एम. ए., एल-एल. बी.)

इस पुस्तक में निबन्धलेखन पर विस्तृत भूमिका के बाद हिन्दी-रत्न परीक्षा में पिछले कई सालों में पूछे गए लगभग ७० विषयों पर श्रेणी-विभाग के अनुसार निबन्ध लिखे गये हैं। भाषा बहुत ही सरल है। हिन्दी-मिडिल, मैट्रिक और हिन्दी-रत्न के विद्यार्थियों को निबन्ध के लिए इससे अच्छी पुस्तक मिलना कठिन है। इसलिए इसकी एक प्रति अवश्य खरीदिये। पृष्ठ संख्या २५० के लगभग। मू० १) मात्र।

सरल-पत्र-लेखन

(ले०—श्री केशवप्रसाद शुक्ल विशारद)

इसमें घरेलू पत्र, व्यावहारिक पत्र, निमन्त्रण पत्र और अर्जी आदि लिखने का ढंग बड़ी सरल भाषा में समझाया गया है। पत्र लिखना सीखने के लिए सर्वोत्तम पुस्तक। हिन्दी मिडिल, हिन्दी-रत्न, हिन्दी-भूषण और मैट्रिक के प्रत्येक विद्यार्थी के पास यह पुस्तक जरूर होनी चाहिए। मू० ।) मात्र।

रस और अलंकार

(ले०—श्रीयुत रामबहोरी शुक्ल, एम. ए., साहित्यरत्न
प्रोफेसर, क्वींस कालेज, बनारस)

इस पुस्तक में रस और अलंकार का कठिन विषय बड़ी ही सरलता पूर्वक समझाया गया है। प्रत्येक अलंकार का लक्षण, उदाहरण तथा अलंकारों के आपस के भेद समझाने में विद्वान् लेखक बहुत सफल हुए हैं। सभी उदाहरण आजकल की खड़ी बोली की कविता से दिए गए हैं, जिससे विद्यार्थी बड़ी आसानी से उन्हें समझ सकते हैं। इसको पढ़ कर हिन्दी-भूषण के विद्यार्थियों को और कोई पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहती। मूल्य ।।।=) मात्र।